भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 339 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज शनिवार 25 दिसम्बर 2021

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

राजस्थान में भारतीय वायुसेना का मिग-21 क्रैश

जैसलमेर में भारत-पाक सीमा के पास हुआ हादसा

जैसलमेर। राजस्थान में जैसलमेर के करीब भारतीय सेना का मिग-21 फाइटर एयरक्राफ्ट के क्रैश हो गया है। जानकारी के मुताबिक यह हादसा भारत-पाकिस्तान सीमा के पास हुआ है। हादसे में एक अधिकारी, संभवतः पायलट की मौत की सूचना है। हालांकि वायुसेना ने अभी इसकी पुष्टि नहीं की है। वायुसेना की ओर से जारी बयान में पायलट को लेकर जिक्र नहीं किया गया है। भारतीय वायुसेना ने क्रैश की पुष्टि की है और घटना की जांच के आदेश दिए हैं। बताया जाता है कि यह प्लेन क्रैश देर शाम करीब साढ़े आठ बजे हुआ। जानकारी के मुताबिक यह विमान नियमित उड़ान पर था। मामले की जानकारी होते ही एयरफोर्स और रेस्क्यू टीम मौके पर पहुंच गई। जैसलमेर के पुलिस अधीक्षक अजय सिंह ने समाचार एजेंसी पीटीआई को बताया कि यह प्लेन क्रैश नेशनल पार्क एरिया के रेगिस्तान में हुआ है। वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के मुताबिक जगह सैम पुलिस थाने के अंतर्गत आती है। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि जानकारी मिलते ही स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंच चुकी है। उन्होंने बताया कि वह भी घटनास्थल के लिए रवाना हो चुके हैं।

उप्र में आज से लगेगा रात्रिकालीन कर्फ्यू, योगी सरकार ने की घोषणा

शादी विवाह जैसे आयोजनों में कोविड प्रोटोकॉल के साथ अधिकतम 200 लोग हो सकेंगे शामिल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में योगी सरकार ने 25 दिसम्बर से रात्रिकालीन कर्फ्यू लागू करने की घोषणा की है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को यहां उच्चस्तरीय बैठक में यह निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि देश के विभिन्न राज्यों में कोविड के मामलों में बढ़ोतरी देखी जा रही है। ऐसे में कुछ कड़े कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि शनिवार 25 दिसंबर से प्रदेशव्यापी रात्रिकालीन कोरोना कर्फ्यू प्रभावी किया जाए। हर दिन रात्रि 11 बजे से सुबह पांच बजे तक रात्रिकालीन कोरोना कर्फ्यू लागू होगा। शादी-विवाह आदि सार्वजनिक आयोजनों में कोविड प्रोटोकॉल के साथ अधिकतम 200 लोगों के भागीदारी की अनुमति होगी। आयोजनकर्ता इसकी सूचना स्थानीय प्रशासन को देगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कोविड से बचाव के लिए ट्रेसिंग, टेस्टिंग, ट्रीटमेंट और टीकाकरण की नीति के सही

बाजारों में मास्क नहीं तो सामान नहीं के संदेश के साथ व्यापारियों को जागरूक करें

क्रियान्वयन से प्रदेश में स्थिति नियंत्रित है। बीते 24 घंटों में हुई एक लाख 91 हजार 428 सैम्पल की जांच में कुल 49 नए संक्रमितों की पुष्टि हुई। इसी अवधि में 12 लोग ठीक होकर कोरोना मुक्त भी हुए हैं। प्रदेश में कुल एक्टिव कोविड केस की संख्या 266 है। 16 लाख 87 हजार 657 मरीज कोरोना को मात दे चुके हैं। इस समय 37 जिलों में एक भी कोविड मरीज नहीं है। बावजूद इसके हमे सचेत रहने की आवश्यकता है। योगी ने कहा कि बाजारों में ₹मास्क नहीं तो सामान नहीं₹ के संदेश के साथ व्यापारियों को जागरूक करें। बिना मास्क कोई भी दुकानदार ग्राहक को सामान न दे। सड़कों, बाजारों में हर किसी के लिए। मास्क अनिवार्य किया जाए। पुलिस बल लगातार गश्त करे। पब्लिक एड्रेस सिस्टम को और प्रभावी बनाया जाए।

देश के किसी भी राज्य से अथवा विदेश से उत्तर प्रदेश की सीमा में आने वाले हर एक व्यक्ति की ट्रेसिंग-टेस्टिंग की जाए। बस, रेलवे और एयरपोर्ट पर अतिरिक्त सतर्कता बरती जाए। निगरानी समितियों ने कोरोना प्रबंधन में सराहनीय कार्य किया है। तीसरी लहर के दृष्टिगत गांवों और शहरी वार्डों में निगरानी समितियों को पुनः एक्टिव करें। बाहर से आने वाले हर एक व्यक्ति की टेस्टिंग कराएं। उनके स्वास्थ्य पर सतत नजर रखी जाए। आवश्यकतानुसार लोगों को क्वारन्टीन किया जाए, अस्पतालों में भर्ती कराया जाए। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि कोविड की तीसरी लहर की आशंका को देखते हुए हमने पूर्व में व्यवस्थित तैयारियां की हैं। जिनका पुनर्परीक्षण कर लिया जाए। प्रदेश के सभी शासकीय,निजी चिकित्सा संस्थानों में उपलब्ध चिकित्सकीय सुविधाओं की बारीकी से परख कर ली जाए। औद्योगिक इकाइयों में कोविड हेल्प डेस्क और डे केयर सेंटर फिर एक्टिव करें। 19 करोड़ 14 लाख 94 हजार से अधिक कोविड टीकाकरण और नौ करोड़ 14 लाख से अधिक टेस्टिंग करके उत्तर प्रदेश टेस्टिंग और टीकाकरण देश में प्रथम स्थान पर है। यहां छह करोड़ 73 लाख 17 हजार से अधिक लोगों को टीके की दोनों डोज देकर कोविड का सुरक्षा कवर प्रदान कर दिया गया है। 12 करोड़ 41 लाख लोगों ने टीके की पहली डोज प्राप्त कर ली है। इस प्रकार टीकाकरण के लिए पात्र प्रदेश की कुल आबादी में से 84.23 फीसदी को पहली और 45.66 फीसदी लोगों को दोनों डोज मिल चुकी है। वैक्सीनेशन को और तेज करने की जरूरत है। इस संबंध में सभी जरूरी प्रयास किए जाएं।

महाराष्ट्र में ओमिक्रॉन केस 100 पार

उद्धव सरकार ने पाबंदियों का किया ऐलान, रात 9 बजे से सुबह 6 बजे तक कर्फ्यू

मुंबई। महाराष्ट्र में कोरोना के नए वेरिएंट ओमिक्रॉन केसों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। आज 20 नए संक्रमित मिलने के बाद ओमिक्रॉन मरीजों की संख्या 100 के पार चली गई है। महाराष्ट्र के साथ मुंबई में कोरोना मरीजों की संख्या में भी तेजी बरकरार है। इस बीच उद्धव सरकार ने पाबंदियों का ऐलान कर दिया है। इसके तहत रात 9 बजे से सुबह 6 बजे तक कर्फ्यू लगाने का फैसला किया गया है। नाइट कर्फ्यू के दौरान 5 से अधिक लोग कहीं एकत्रित नहीं हो सकते हैं। आवश्यक सेवाओं को इस प्रतिबंध से छूट दी गई है। महाराष्ट्र सरकार ने शादी समारोह और धार्मिक आयोजनों में शामिल होने की सीमा भी तय कर दी है। महाराष्ट्र के मंत्री अनिल परब ने कहा कि बंद जगहों पर होने वाले ऐसे कार्यक्रमों में 100 से अधिक लोग शामिल नहीं हो सकते हैं, जबकि खुले स्थानों पर आयोजन में अधिकतम 250 लोग शामिल हो सकते हैं। होटल, स्पा, थिएटर क्षमता के 50 फीसदी ग्राहकों के साथ चल सकते हैं। महाराष्ट्र में शुक्रवार को ओमिक्रॉन के 20 नए केस मिले हैं। इसके बाद संक्रमितों की कुल संख्या बढ़कर 108 हो गई है। इनमें से 54 को डिस्चार्ज किया जा चुका है। आज मिले 20 केसों में से 11 मुंबई में मिले हैं, जबकि 6 पुणे, 2 सतारा और 1 संक्रमित अहमदनगर में मिले हैं। इन नए मरीजों में से 15 का विदेश यात्रा का इतिहास है। एक ने देश में ही यात्रा की थी, जबकि अन्य इनके संपर्क में आए लोग हैं। इनमें एक मरीज नाबालिग है, जबकि 6 मरीज 60 साल से अधिक उम्र के हैं। इनमें से किसी में कोई लक्षण नहीं है। महाराष्ट्र में शुक्रवार को कोरोना के 1,410 नए मरीज मिले और 12 की जान चली गई।

जम्मू-कश्मीर : अनंतनाग मुठभेड़ में एक आतंकी मारा गया

अनंतनाग। अनंतनाग जिले के अरवानी क्षेत्र में शुक्रवार सुबह आतंकियों तथा सुरक्षाबलों के बीच शुरू हुई मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने एक आतंकी को मार गिराया है। आतंकी की पहचान फिलहाल नहीं हो पाई है। क्षेत्र में अन्य आतंकियों की मौजूदगी की आशंका के चलते सुरक्षाबलों ने अभियान जारी रखा है। जानकारी के अनुसार शुक्रवार सुबह अनंतनाग पुलिस को जिले के अरवानी क्षेत्र में आतंकियों की मौजूदगी की गुप्त सूचना मिली। सूचना प्राप्त होते ही सेना तथा सीआरपीएफ के जवानों के साथ मिलकर पुलिस ने क्षेत्र में तलाशी अभियान शुरू किया। तलाशी अभियान के दौरान क्षेत्र में छिपे आतंकियों ने सुरक्षाबलों को पास आते देखकर गोलीबारी की, जिसके बाद मुठभेड़ शुरू हो गई। मुठभेड़ के शुरूआती दौर में सुरक्षाबलों ने आतंकियों को आत्मसमर्पण का मौका दिया लेकिन जब वह नहीं माने तो सुरक्षाबलों की जवाबी कार्रवाई में एक आतंकी मारा गया। क्षेत्र में फिलहाल सुरक्षाबलों का अभियान जारी है।

हमेशा नफरत और हिंसा फैलाते हैं हिंदुत्ववादी, कीमत चुकाता है हर समुदाय : राहुल गांधी

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को कहा कि हिंदुत्ववादियों ने हमेशा नफरत और हिंसा फैलाई है, जिसकी कीमत हर समुदाय को चुकानी पड़ती है। उन्होंने यह भी कहा कि भारत हिंसा के खिलाफ है और यह आगे नहीं होना चाहिए। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने यह बातें हरिद्वार में आयोजित धर्म संसद को लेकर कहीं हैं, जहां कथित तौर पर कई संतों और हिंदुवादी नेताओं ने मुस्लिमों के खिलाफ नफरत भरे भाषण दिए। इस धर्म संसद का आयोजन हरिद्वार में 17 से 20 दिसंबर के बीच किया गया था। सम्मेलन का आयोजन जूना अखाड़ा के संत यति नरसिंहानंद गिरि की ओर से किया गया था। वह पहले से ही मुस्लिमों के खिलाफ नफरत भरे बयानों को लेकर पुलिस की रडार पर हैं। राहुल गांधी ने ट्वीट किया, "हिंदुत्ववादी हमेशा नफरत व हिंसा फैलाते हैं। हिंदू-मुसलमान-सिख-ईसाई इसकी कीमत चुकाते हैं।

पंजाबः लुधियाना कोर्ट परिसर विस्फोट मामले में छह लोग हिरासत में

सीएम चन्नी ने मांगी केंद्र से मदद

चण्डीगढ़। एक दिन पूर्व लुधियाना कोर्ट परिसर में हुए विस्फोट के मामले में पुलिस ने छह लोगों को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया है। लुधियाना के पुलिस आयुक्त गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने बताया कि इस मामले में पुलिस को अहम सुराग मिले हैं। उन्होंने शीघ्र ही इसमें शामिल लोगों को गिरफ्तार किए जाने का दावा किया।

इधर, चण्डीगढ़ में पत्रकारों से बातचीत में पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने कहा है कि इस संदर्भ में उनकी केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह से बात हुई। आज केंद्र से इसकी जांच के लिए टीम दिल्ली से पहुंच रही है। इस घटना की जांच केन्द्रीय एजेंसियां ही कर रही हैं। दूसरी ओर लुधियाना पुलिस प्रशासन ने अदालत परिसर में सुरक्षा सख्त कर दी है। आज अदालतों में कार्य का अंतिम दिन है। सामान्य लोगों के अतिरिक्त वकीलों को भी बिना जांच के अदालत परिसर में जाने नहीं दिया जा रहा।

लुधियाना कोर्ट ब्लास्टः जान गंवाने वाले शख्स की हुई पहचान, ड्रग नेटवर्क से थे लिंक

नई दिल्ली। पंजाब के लुधियाना जिला अदालत परिसर में हुए ब्लास्ट में मारे गए व्यक्ति की पहचान कर ली गई है। ब्लास्ट में मारे गए शख्स का नाम गगनदीप सिंह था। गगनदीप पूर्व पुलिसकर्मी था। ड्रग लिंक के मामले में उसे दो साल की सजा मिलने के बाद साल 2019 में सेवा से बर्खास्त कर दिया गया था। घटना से परिचित लोगों कहा कि गगनदीप को इसी साल सितंबर महीने में रिहा किया गया था। जाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने शुक्रवार को कहा कि उनकी सरकार ने लुधियाना जिला अदालत परिसर में हुए बम विस्फोट मामले की जांच कर उसके कारणों का पता लगाने के लिए केंद्र सरकार से मदद मांगी है। चन्नी ने कहा कि उन्होंने विस्फोट के कुछ घंटे बाद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से बात की। इसके बाद केंद्र ने बम विस्फोट की जांच के लिए पंजाब में कुछ टीम भेजी हैं।

लुधियाना की जिला अदालत परिसर में गुरुवार को हुए विस्फोट में एक व्यक्ति की मौत हो गई जबकि छह अन्य घायल हो गए। इसके बाद पंजाब सरकार ने राज्य भर में हाई अलर्ट जारी कर दिया। अदालत परिसर के दूसरे तल पर हुए विस्फोट में परिसर की एक दीवार क्षतिग्रस्त हो गई और वहां पार्किंग में खड़े कुछ वाहनों के कांच टूट गए थे। केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री किरेन रिजीजू ने शुक्रवार को लुधियाना जिला अदालत का दौरा किया। उन्होंने कहा कि देश के साथ राज्य में शांति और सद्भाव को बिगाड़ने की कोशिश कर रहे घरेलू और विदेशी तत्वों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए केंद्र और राज्य मिलकर काम करेंगे।

किसानों को 50 हजार रुपये देगी सरकार, उपमुख्यमंत्री बोले- कोरोना के चलते देरी हो गई

मुंबई (एजेंसी)। नियमित रूप से लोन चुराने वाले किसानों के लिए अच्छी खबर है। महाराष्ट्र सरकार ने शुक्रवार को घोषणा की कि वह नियमित रूप से ऋण चुकता करने वाले हर किसान को 50,000 रुपये का वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करेगी। यानी जो किसान समय से अपना ऋण चुकाते आए हैं उन्हें ये लाभ मिलने वाला है। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार ने राज्य विधानसभा में शुक्रवार को कहा कि सरकार महात्मा ज्योतिबा फुले ऋण योजना के तहत वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। पवार शिव सेना विधायक प्रकाश आबिटकर के प्रश्न का उत्तर दे रहे थे। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार ने स्वीकार किया कि कोरोना महामारी के बाद वित्तीय स्थिति प्रभावित होने के कारण इस तरह की सहायता प्रदान करने में देरी हुई थी। उन्होंने कहा कि कोरोना के चलते लगे प्रेरित लॉकडाउन ने राज्य में 1.5 लाख करोड़ रुपये के राजस्व की कमी हुई है। उन किसानों को जो नियमित रूप से कर्ज चुका रहे हैं, वित्तीय स्थिति सामान्य होने के बाद उन्हें सहायता प्रदान की जाएगी।

कोरोना की चौथी लहर से गुजर रही दुनिया! ओमिक्रॉन के मामले 358 होने पर बोली सरकार

नई दिल्ली। देश में कोरोना वायरस के साथ-साथ ओमिक्रॉन वैरिएंट के मामले में तेजी से बढ़ोतरी देखने को मिली है। अब तक देश के 17 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 358 मामले सामने आ चुके हैं। राहत की बात है कि इनमें से 114 मरीज ठीक भी हो चुके हैं। देश में ओमिक्रॉन के अभी तक जितने भी केस सामने आए हैं उनमें से अधिकतर ने विदेश की यात्रा की थी। सरकार ने सतर्क करते हुए कहा कि विश्व में चौथी बार कोविड मामलों में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। कोरोना के मामले एक बार फिर से पीक पर हैं। 23 दिसंबर को पूरी दुनिया में एक दिन में कोरोना वायरस के 9,64,000 मामले सामने आए थे। स्वास्थ्य मंत्रालय के सचिव राजेश भूषण ने बताया कि 183 ऑमिक्रोन मामलों का विश्लेषण किया गया है जिसमें से 121 ने विदेश की यात्रा की थी। 44 विदेश नहीं गए थे लेकिन ज्यादातर के कॉन्टैक्ट ने विदेश यात्रा की थी। 183 में से 87 लोगों ने कोविड की दोनों डोज ली थी। जबकि तीन लोग ऐसे थे जो बूस्टर डोज भी ले चुके थे। देश के 20 ज़िले ऐसे हैं जहां केस पॉजिटिविटी रेट 5-10 फीसदी है। इनमें से 9 केरल में और 8 मिजोरम में हैं। 2 जिले ऐसे हैं जहां केस पॉजिटिविटी 10 फीसदी से ज्यादा है, ये 2 ज़िले मिजोरम में हैं।

भूषण ने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (हल्ड) का कहना है और हमने भी अपने देश में देखा है कि जो ट्रीटमेंट प्रोटोकॉल हमने कोविड और डेल्टा के लिए अपनाए थे वो ट्रीटमेंट प्रोटोकॉल ऑमिक्रॉन पर भी प्रभावी होंगे। अब तक विश्व के 108 देशों में 1,51,000 से ज्यादा ऑमिक्रॉन के केस मिले हैं। विश्व में केस पॉजिटिविटी रेट 6 फीसदी से ज्यादा है। सरकार ने डब्ल्यूएचओ का हवाला देते हुए कहा कि ओमिक्रॉन के मामले डेढ़ से तीन दिन में डबल हो जा रहे हैं। भारत में केस पॉजिटिविटी 5.3 फीसदी है। पिछले 2 सप्ताह में भारत में केस पॉजिटिविटी 0.6 फीसदी है। भूषण ने आगे कहा कि यूरोप, अफ्रीका और नॉर्थ अमेरिका में लगातार कोविड मामले लगातार बढ़ रहे हैं। एशिया में कोविड मामले अभी भी लगातार घट रहे हैं।

चीफ जस्टिस एनवी रमना को बैल गाड़ी में बिठाकर घुमाया, अपने गांव पहुंचे तो किया गया अभिनंदन

नई दिल्ली। देश के मुख्य न्यायाधीश एनवी रमना शुक्रवार को आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिला स्थित अपने पैतृक गांव पहुंचे तो उनका जमकर स्वागत किया गया। ग्रामीणों ने उन्हें सजी हुई बैलगाड़ी में बिठाया और पूरे गांव में घुमाया। इस दौरान चीफ जस्टिस एनवी रमन्ना ने ग्रामीणों को संबोधित भी किया। उन्होंने स्वागत के लिए सभी को धन्यवाद करते हुए कहा कि देश प्रगति कर रहा है, लेकिन कई समस्याएं अब भी बनी हुई हैं। उन्होंने इस दौरान सभी को समस्याओं से मुकाबला करने के लिए एकजुट होने की अपील की। चीफ जस्टिस एनवी रमना ने कहा कि वह अपनी मातृभाषा तेलुगू और अपनी जन्मभूमि से बहुत प्यार करते हैं।

ग्रामीणों को संबोधित करते हुए चीफ जस्टिस एनवी रमना भावुक नजर आए। उन्होंने अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए कहा कि उनके पिता कम्युनिस्ट पार्टी के समर्थक हुआ करते थे। इसलिए वह (न्यायमूर्ति रमना) स्वतंत्र पार्टी की विचारधरा को पसंद करते थे। उन्होंने कहा, 'मैंने सदा चाहा है कि सभी लोगों को जाति, नस्ल और धर्म से ऊपर उठ कर एक साथ रहना चाहिए।

खबर संक्षेप

सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड के मामले में ट्रायल कोर्ट की कार्रवाई पर रोक बरकरार

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड की याचिका के मामले में ट्रायल कोर्ट की कार्रवाई पर रोक बरकरार रखी है। मामले में शुक्रवार को सुनवाई हुई। मामले में प्रतिवादी एंसिएंट आईडल ऑफ स्वयंभू लार्ड विश्वेश्वर एंड पांच अन्य की तरफ से जवाबी हलफनामा दाखिल किया गया। इस पर याची के अधिवक्ता ने जवाब दाखिल करने के लिए तीन वक्त का समय मांगा। कोर्ट ने इस पर अपनी अनुमति दे दी। मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति प्रकाश पडिया की एकल खंडपीठ कर रही है।कोर्ट की कार्रवाई शुरू होते हुए प्रतिवादी पक्ष की ओर से जवाबी हलफनामा दाखिल किया गया, जिसे कोर्ट ने रिकॉड पर लेते हुए याची का पक्ष जाना। याची के अधिवक्ता ने मामले में जवाबी हलफनामा दाखिल करने के लिए तीन हफ्ते का समय मांगा। कोर्ट ने इसकी अनुमति दे दी और मामले में ट्रायल कोर्ट में चल रही कार्रवाई पर रोक बरकार रखी। मामले में आधा दर्जन याचिकाएं लंबित हैं। दो याचिकाओं पर कोर्ट सुनवाई कर फैसला सुरक्षित कर लिया है।

कर्नलगंज थाने के अंदर वकीलों के दो गुटों में जमकर हाथापाई कई थानों की फोर्स मौजूद

थाना परिसर में एक दूसरे के बहस के बाद शुरू हो गई मारपीट

वकीलों के दो गुटों में होता झड़प

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कर्नलगंज थाना परिसर में वकीलों के दो गुटों में शुक्रवार को जमकर बवाल हुआ। एक व्यक्ति की पैरवी को लेकर वकीलों के दो गुटों में पहले कचहरी में बवाल हुआ। इसके बाद एक पक्ष थाने पहुंच गया और विजय द्विवेदी के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज करा दिया।यह बात विजय द्विवेदी को पता चली तो वो भी थाने पर करीब पचास वकील लेकर पहुंच गए। यह बात दूसरे पक्ष को पता चला तो वो भी सैकड़ों वकील के साथ थाने पर पहुंच गए और दोनों गुटों में विवाद शुरू हो गया। दोनों पक्षों के वकील कर्नलगंज थाने अंदर भी एक दूसरे से हाथापाई करने लगे। इसके बाद बाहर भी दौड़ा-दौड़ाकर पीटा गया। देखते ही देखते पूरा थाना परिसर जंग का मैदान बन गया। भारी बवाल को देखते हुए कई थानों की फोर्स आ गई।काफी प्रयास के बाद पुलिस ने स्थिति को नियंत्रण में किया। पुलिस ने वकील सुनील पांडेय की तहरीर पर कई लोगो के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया, जबकि दूसरे पक्ष की तरफ से वकील विजय द्विवेदी ने भी एफआईआर दर्ज करने के लिए तहरीर दी है। एसपी सिटी दिनेश कुमार सिंह के मुताबिक सीसीटीवी फुटेज देखने के बाद थाने के अंदर हंगामा करने वालो पर भी कार्यवाही की जाएगी।

विकास भवन के क्लर्क के खिलाफ शिकायत को लेकर हुआ विवाद

एडवोकेट सुशील कुमार पांडेय ने बताया कि उनके मामा का लड़का विभूति नारायण मिश्रा उर्फ नीरज जिला एवं सत्र न्यायालय में अधिवक्ता है। उसने विकास भवन के बाबू हरिकेश पांडेय के खिलाफ एक मामले में शिकायत कर रखी है। उसकी जांच चल रही है। आरोप है कि भाजपा नेता और एडवोकेट विजय द्विवेदी ने कई बार उनके भांजे विभूति नारायण मिश्र को फोन कर हरिकेश पांडेय के खिलाफ की गई शिकायत वापस लेने को कहा।ऐसा न करने पर विजय द्विवेदी ने विभूति नारायण मिश्र को अंजाम भुगतने की धमकी दी। विभूति ने इस मामले को अपने रिश्तेदार सुशील कुमार पांडेय से साझा किया। सुशील कुमार पांडेय ने गुरुवार को विजय द्विवेदी को फोन कर धमकी न देने और इस मामले से दूर रहने को कहा। आरोप है कि विजय द्विवेदी ने सुशील कुमार पांडये को फोन पर गालियां दीं और जान से मारने की धमकी भी दी। साथ ही यह भी कहा कि कल कचहरी में मिलो, तुमको बताते हैं।

प्रेम जाल में फंसा कर की शादी गर्भवती कर छोड़ा

घूरपुर। घूरपुर थाना क्षेत्र के एक गांव की एक लड़की को पड़ोसी गांव के युवक ने पहले अपने प्रेम जाल में फंसा कर विवाह किया। उसके बाद गर्भवती करके छोड़ दिया। गर्भवती के परिजनों ने भी दुत्कार दिया। युवती ने पुलिस से लिखित शिकायत की है । क्षेत्र के चंपतपुर गांव के युवक ने पड़ोसी गांव जमोली के एक लड़की को अपने प्रेम जाल में फंसा लिया। उसके बाद २० जून २०२१ को परिजनों की मौजूदगी में एक मंदिर में विवाह किया। लड़की के माता-पिता या भाई नहीं है। वह ननिहाल में रहती थी। शादी करने के बाद दोनों मुंबई चले गए। सोमवार को दोनों वापस लौटने के बाद नैनी में एक कमरा किराये पर लिया और लड़की को छोड़कर युवक चला गया। उसके बाद से अपना मोबाइल भी बंद कर दिया है। लड़की ने पुलिस को लिखित जानकारी दी है।

न्यूज झरोखा

कुलभास्कर आश्रम पीजी कॉलेज में मिशन शक्ति तृतीय चरण के समापन समारोह का हुआ आयोजन

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 21 अगस्त 2021 से चलाए जा रहे हैं अति महत्वपूर्ण कार्यक्रम मिशन शक्ति तृतीय चरण के समापन समारोह पर के अंतर्गत कुलभास्कर आश्रम पी जी कॉलेज प्रयागराज में शुक्रवार को प्राचार्य डॉ अर्चना सिन्हा के निर्देशन में एक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन महाविद्यालय की मिशन शक्ति कार्यक्रम के समन्वयक डॉ आभा त्रिपाठी द्वारा किया गया। उक्त शिविर शहर के प्रतिष्ठित अस्पताल वात्सल्य की निदेशिका एवं प्रसिद्ध प्रसूति रोग विशेषज्ञ अग्रवाल जी एवं उनकी 9 सदस्य टीम के सहयोग से लगभग 200 बच्चों तथा महाविद्यालय के सभी शिक्षक तथा शिक्षणेत्तर कर्मचारियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। प्रत्येक बच्चों की व्यक्तिगत रूप से जानकर उनकी समस्या से संबंधित उपाय तथा दवाएं लिखकर तथा उनकी टीम द्वारा सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण करके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी भी दी गयी। महाविद्यालय मिशन शक्ति टीम के डॉ कविता श्रीवास्तव, डॉक्टर अनुराग त्रिपाठी, आदेश वर्मा, डॉक्टर मनीष सिंह आदि का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में विशेष रूप से महाविद्यालय की मिशन शक्ति टीम के सभी शिक्षक सदस्य, लोकेश सिंह, प्रशांत,प्रवीण, विनोद अनिल आदि की विशेष सहभागिता रही। मिशन शक्ति तृतीय चरण का कार्यक्रम 21 अगस्त से दिसंबर केआखिरी सप्ताह तक चलना था अतः शुक्रवार को इस मिशन शक्ति तृतीय चरण का महाविद्यालय मिशन शक्ति टीम के द्वारा समापन की घोषणा की गई।

समाजसेवीयों ने कच्ची बस्ती के बच्चों को निशुल्क शिक्षा सामग्री किया भेंट

प्रयागराज। कच्ची बस्ती के बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूकता के लिए निशा मिश्रा समाज सेविका के जन्मदिन पर निशुल्क शिक्षा सामग्री बांटा गया जिसमें कलम ,कॉपी ,पेंसिल ,रबर, कटर आदी दिए गए बच्चों को पढ़ाई के साथ खेलकूद की गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिए भी प्रेरित किया गया। समाज सेविका निशा मिश्रा ने अपने जन्मदिन पर अपील किया कि आप लोग भी अपने जन्मदिन पर बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए उनको शिक्षा की सामग्री निशुल्क वितरण किया करें जिससे उनका पढ़ाई के प्रति रुचि बड़े। निशा मिश्रा के जन्मदिन पर मदर टेरेसा फाउंडेशन के नगर महासचिव व वरिष्ठ समाजसेवी मोहम्मद गुफरान खान ने कहा बच्चे शिक्षित होंगे तभी देश मजबूत होगा। एंटी क्राइम एंटी करप्शन के प्रदेश अध्यक्ष अवधेश निषाद ने कहा हमको जरूरतमंद बच्चों को सहायता करनी चाहिए उनके साथ खड़ा होना होगा जिससे उनका मनोबल बढ़े,बच्चे शिक्षा सामग्री पाकर बहुत खुश हुए। कार्यक्रम में अवधेश कुमार निशाद,मोहम्मद गुफरान, निशा मिश्रा,धनंजय प्रताप सिंह,जुनेद वारिस,डॉ श्याम देव,डॉक्टर शैलेंद्र श्रीवास्तव,विमल गुप्ता उपस्थित थे।

प्रशासन ने अवैध पुलिया को कराया ध्वस्त

अखंड भारत संदेश

भू माफियाओं द्वारा कराया गया था सरकारी नाला पाटकर अवैध पुलिया का निर्माण, प्रशासन की इस कार्रवाई से किसानों में देखी गयी खुशी

गौहनिया मे बनाएं गए अवैध पुलिया को धवस्त कराता प्रशासन

घूरपुर। बारा तहसील अंतर्गत गौहनिया मे भूमाफियों द्वारा अवैध रूप से सरकारी नाला पाट कर बनाएं गए पुलिया को गांव के किसानो की शिकायत पर प्रशासन ने जेसीबी से ध्वस्त करा दिया। इस कार्रवाई से किसानो मे खुशी की लहर है। घूरपुर के हाईवे से सटे गौहनिया के सरकारी नाला से दो दर्जन से अधिक गांवो का बारिश का पानी होकर सीधे यमुना नदी में जाता है। और आम दिनों इसी नाले से नहर का पानी छोड़कर किसान अपनी फसल सींचता है। विगत एक माह पूर्व भूमाफियो ने नाले की जमीन सहित आसपास की राजस्व की जमीन कब्जा कर प्लाटिंग करने की नियत से अवैध रूप से नाले को पाट पुलिया बनाने लगे तो शिकायत पर एसडीएम बारा सौम्या गुरुरानी ने राजस्व कर्मी और पुलिस भेज निर्माण कार्य रुकवा दिया था। इसके बावजूद मनबढ़ भूमाफियों ने रात में उक्त नाले को पाट अवैध रूप से पुलिया निर्माण कर लिया था। फसल सिंचाई बाधित होने और बारिश के मौसम में नाला पाटे जाने से कई गावों मे पानी उफान होने से ग्रामीण आक्रोशित हो उठे। जिससे किसानों ने लगातार एसडीएम बारा से शिकायत करते रहे। शुक्रवार की दोपहर एसडीएम बारा सौम्या गुरुरानी ने तहसीलदार सहित भारी पुलिस बल के साथ जेसीबी से उक्त अवैध पुलिया को ध्वस्त करा दिया।

पुतला दहन को लेकर ब्राह्मण समाज के कार्यकताओं को समझाती पुलिस।

जीतन राम मांझी के बयान पर ब्राह्मण समाज कार्यकताओं ने किया विरोध

अखंड भारत संदेश

सहसों। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी द्वारा भगवान सत्यनारायण एवं ब्राह्मणों के खिलाफ गंदे शब्दों का बयान करने पर नवयुवक ब्राह्मण समाज के कार्यकताओं ने मांझी के पुतले के साथ विरोध प्रदर्शन किया। जीतन राम मांझी के अभद्र बयान को लेकर नवयुवक ब्राहमण समाज द्वारा शुक्रवार को सहसों चौराहे पर नवयुवक ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष पंडित लवकेश मिश्र की अध्यक्षता में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी द्वारा सत्यनारायण भगवान की पूजा एवं ब्राह्मणों पर अनुचित शब्दों का प्रयोग करने व अशोभनीय शब्द कहने पर पुतला बनाकर मुदार्बाद के नारे लगाए। नवयुग ब्राह्मण समाज के कार्यकताओं ने जीतन राम मांझी का पुतला बनाकर सहसों चौराहे से चलकर राम जानकी मंदिर तक मुदार्बाद के नारे लगाते हुए पहुंचे। जैसे ही पुतला दहन करने के लिए आक्रोशित कार्यकताओं ने प्रयास किया उसी समय सहसों चौकी की पुलिस पहुंचकर कार्यकताओं को समझा-बुझाकर जीतन राम मांझी के पुतले को लेकर पुलिस ने सहसों चौकी चली गई। इसके बाद कार्यकताओं ने काफी देर तक विरोध प्रदर्शन करते हुए मुदार्बाद के नारे लगाते रहे। इस मौके पर जिलाध्यक्ष सूर्य मणि पांडे, शेष नारायण त्रिपाठी, कृष्ण बल्लभ द्विवेदी, चिंतामणि शुक्ल, पंडित दिनेश चंद्र त्रिपाठी, जय कृष्ण उर्फ वीरू पांडे, प्रमोद शुक्ला, संजय पांडे, कृष्ण देव दुबे, संजय शुक्ला, सुशील मिश्रा, पंकज मिश्रा, संतोष दुबे सहित काफी संख्या में कार्यकर्ता शामिल रहे।

पांचवी बार बसपा ही बनायेगी पूर्ण बहुमत की सरकार : सतीश चन्द्र मिश्रा

किसान, बेरोजगार और महिलाओं ने भाजपा को सत्ता से उखाड़ फेंकने का लिया संकल्प

सरदार पटेल सेवा संस्थान प्रांगण में बसपा के राष्ट्रीय महासचिव सतीश चन्द्र मिश्र की जनसभा में लोग

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। बहुजन समाज पार्टी बहन मायावती के नेतृत्व में 2012 के बाद पांचवी बार मुख्यमंत्री बनाने जा रही है। दस दिन बाद चुनाव की घोषणा होते ही विरोधियो के पैर के नीचे की जमीन खिसक रही है। किसी भी वर्ग जाति व धर्म का व्यक्ति भाजपा सरकार से संतुष्ट नही है। भाजपा ने सिर्फ जनता को छलने का काम किया है। जनता सपा के कुप्रशासन को देखा और सब लूट, खसोट, फिरौती, बलात्कार से तंग होकर जनता भाजपा के छलावे में आकर उसकी सरकार बनवा दी। दंगे होते नहीं बल्कि दंगे करवाये जाते है। 134 दंगे सपा की सरकार में हुये। बसपा की सरकार में एक भी दंगे नही हुये उक्त विचार बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सतीश चन्द्र मिश्रा ने प्रयागराज, कौशाम्बी, फतेहपुर व प्रतापगढ़ के 28 विधानसभाओं द्वारा अलोपीबाग स्थित सरदार पटेल सेवा संस्थान के प्रांगण में सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की नीतियों पर आधारित सरकार बनाने हेतु सुरक्षित विधानसभाओं की मण्डल स्तरीय विशाल जनसभा को बतौर अध्यक्ष सम्बोधित करते हुये कही।

उन्होंने आगे कहा कि बसपा जमीनी स्तर पर लड़ाई लड़ रही है। भाजपा ने महिलाओं की सुरक्षा के वादे किये आज हर दो घंटे में महिलाओं के साथ बलात्कार हो रहा है। बसपा सरकार में आधी रात को भी महिलाएं बेहिचक बाहर निकल सकती थी। केवल बहनजी ही कानून के द्वारा कानून का राज चलाया था। भाजपा सरकार तो कानून अपने हाथों में ले लिया है वो दूसरे पर कानून का राज क्या चलाएगा।

भजपा ने बेरोजगारों, महिलाओं, किसानों सबके साथ छलावा किया है। पूर्व मंत्री नकुल दुबे और युवा नेता कपिल मिश्रा ने बसपा शासन की उपलब्धियां बतायी। दो करोड़ नौकरियां देने का वादा करने वाली भाजपा सरकार नौकरियां तो नहीं दे सकी बल्कि दो करोड़ नौकरियां छीन जरूर ली है। एक ओर जहां भाजपा सरकार मोबाइल टैबलेट देने का जो वादा कर रही है लोगो को हाथ फैलाने पर मजबूर कर रही है वहीं बसपा सरकार होती तो लोगो को काम देकर मोबाईल टैबलेट खुद खरीदने लायक बना देती। भाजपा सरकार को दो वक्त की रोटी उपलब्ध कराना मुश्किल है। बेरोजगार किसान मजदूर महिलाएं ही भाजपा सरकार को उखाड़ फेंक देंगी।प्रभारी प्रत्याशियों में अतुल द्विवेदी, घनश्याम पांडेय, नरेंद्र त्रिपाठी उर्फ मुन्ना त्रिपाठी, अजय यादव, रामतौलन यादव, दसरथ लाल सरोज, संतोष त्रिपाठी, आशुतोष पांडेय, नीतू कनौजिया, राजबली जैसल ने भी विचार रखे।

जनसभा में मुख्य सेक्टर प्रभारी अशोक गौतम, बाबूलाल भंवरा, राजू गौतम, गुलाब चमार, अतुल कुमार टीटू, आरएन पंथारी, ज्ञान सिंह पटेल, घनश्याम पटेल, संतोष हेला, शारदा प्रसाद, रविन्द्र गांधी, एड.रामचन्द्र वर्मा, एड.रामबृज गौतम सहित हजारों की संख्या में लोग उपस्थित रहे। कुशल संचालन जिलाध्यक्ष अभिषेक गौतम ने किया।

भाजपा-अपनादल गठबंधन सरकार में देश व प्रदेश का चहुंमुखी विकास : अनुप्रिया

जंघई। एबीपी गंगा चुनाव क्रांति एक्स्प्रेस द्वारा ट्रेन मे डिबेट कार्यक्रम के बाद जंघई उतरी केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल को लेने उनके समर्थक लाव लश्कर के साथ पहुचें। जंघई जंक्शन रेलवे स्टेशन पर विशेष ट्रेन से उतरी अनुप्रिया पटेल को सुरक्षा के साथ मिजार्पुर ले जाया गया।केंद्रीय मंत्री ने कहा कि मोदी योगी के नेतृत्व में भाजपा अपना दल गठबंधन सरकार में देश एवं प्रदेश का चहूँमुखी विकास हो रहा है पुनः प्रदेश में गठबंधन की सरकार बनेगी।इस अवसर पर फूलपुर सांसद केशरी देवी पटेल, एमएलसी सुरेन्द्र चौधरी, पूर्व प्रत्याशी अपना दल भाजपा गठबंधन कैप्टन करन सिंह, दिनेश शुक्ला गुड्डू, डाक्टर इमाम, मुन्ना सिंह, प्रमोद गुप्ता प्रधान, सूर्यप्रकाश शुक्ल, आशीष दुबे, अंशुमान शुक्ला, संदीप पांडेय सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

अखिलेश यादव संभालेंगे प्रदेश की कमान : वासुदेव यादव

जंघई। एबीपी गंगा चुनाव क्रांति एक्स्प्रेस से जंघई पहुंचे सपा नेता एवं पूर्व माध्यमिक शिक्षा निदेशक एमएलसी वासुदेव यादव ने पत्रकार वार्ता में कहा कि अखिलेश यादव की जनसभा मे उमड़ रही भीड़ इसका प्रमाण है है कि पुनः अखिलेश यादव के नेतृत्व में सपा की सरकार बनने जा रही है।वासुदेव यादव को रिसिव करने सपा के समर्थक काफी संख्या में पहुचें थे पत्रकारों से बातचीत मे कहा कि भाजपा सरकार मे युवाओं को रोजगार नही मिला युवा नौकरी के लिए परेशान है भाजपा सरकार अग्रेजीं शासन से भी ज्यादा तानाशाह हो गयी सपा सरकार पांच साल तक खाद्यान्न देगी साथ मे घी भी देगी। बूथ स्तर से तैयारी पूरी कर ली गयी है हर जाति वर्ग के लोगो के समर्थन से अखिलेश यादव फिर से मुख्यमंत्री बनेगे।इस अवसर पर नेहा यादव राष्ट्रीय अध्यक्ष छात्र सभा, एसबी यादव, अरुण यादव, विनोद मिश्रा, प्रधान जय कुमार यादव, नसरुद्दीन राइन, प्रेमचंद यादव, कृष्ण कुमार चौधरी, मुन्ना यादव, होरीलाल, उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री योगी का लक्ष्य जनता का विकास है जबकि विपक्षी दलों का अपने परिवार का विकास : केशरी देवी पटेल

जंघई। एबीपी गंगा चुनाव क्रांति एक्स्प्रेस डिबेट में शामिल फूलपुर सांसद केशरी देवी पटेल जंघई जंक्शन पर उतरी और वारी तिराहे पर उपस्थित लोगों से कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का लक्ष्य जनता का विकास है, जबकि विपक्षी दलों का अपने परिवार का विकास। पत्रकार वार्ता में उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने परिवारवाद व वंशवाद को महत्व दिया। सपा बसपा को जब मौका मिला तब उन्होंने कुछ नहीं किया केवल अपराध भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया। उन्होंने विधानसभा चुनाव में कार्यकताओं को पूरी तैयारी से जुटने के निर्देश दिए। कहा कि भाजपा ने कार्यकताओं के बल पर दो से 300 सांसदों तक का सफर तय किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कई योजनाएं चलाकर गरीबों को लाभ पहुंचाया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति से छात्र-छात्राओं को रोजगारपरक शिक्षा मिलेगी। 2022 का विधानसभा चुनाव जीतने के लिए कार्यकर्ता बूथों एवं शक्ति केंद्रों पर जाकर सरकार की उपलब्धियों की जानकारी लोगों को दें।इस अवसर पर पूर्व प्रत्याशी प्रतापपुर विधानसभा अपना दल भाजपा गठबंधन कैप्टन करन सिंह, रागिनी सिंह, बबलू सिंह, राजा मौर्या, रिंकू सिंह, मनीष केसरवानी सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

कांग्रेस की सदस्यता से आएगी बूथ स्तर पर मजबूती : राघवेंद्र सिंह

चौपाल कार्यक्रम में दर्जनो लोगों नें ग्रहण की सदस्यता

करछना। विधानसभा क्षेत्र के मुरादपुर में कांग्रेस के नेताओं और कार्यकताओं की उपस्थिति में संपन्न हुआ। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव श्री राघवेंद्र प्रताप सिंह नहीं कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि प्रियंका गांधी जी के करिश्माई नेतृत्व उनके काम करने की क्षमता और तरीके ने पूरे उत्तर प्रदेश में लोगों के अंदर एक नई आशा का संचार किया है लोगों के अंदर एक नए तरीके इसका सबसे बड़ा उदाहरण भारी संख्या में लोगों कांग्रेस से जुड़ना है। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव श्री वसीम अंसारी ने कहा कि महिलाओं के लिए प्रियंका जी की घोषणाएं समाज को एक नई दिशा देंगी। जिला अध्यक्ष अरुण तिवारी ने कहां की कांग्रेसी ही ऐसी संस्था है जिसके नेतृत्व में समाज का हर वर्ग सुरक्षित रहेगा और देश मजबूत होगा। बैठक में जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष श्री रंग राज सिंह महामंत्री डा दिनेशकुमार सोनी उपाध्यक्ष फराम अनुग्रह मित्र ब्लॉक अध्यक्ष श्री प्रकाश पांडे चाका ब्लाक अध्यक्ष जान मोहम्मद सुनील पटेल श्याम बाबू, अफज, दिनेश कुमार, जितेंद्र तिवारी के अलावा भारी संख्या में लोग मौजूद रहे जिन्होंने सदस्यता ग्रहण की।

भाजपा सरकार सिर्फ कागज में सबका साथ सबका विकास दिखाती हैं : उज्जवल रमण

सपा का करछना विधान सभा के घोरहट में सड़क का लोकार्पण कार्यक्रम

करछना। भाजपा केंद्र व प्रदेश सरकार सिर्फ आंकड़ों की बाजीगरी कर कागज पर सबका विकास सबका साथ जनता के सामने प्रस्तुत करतीं हैं जो जमीनी हकीकत से कोसों दूर है।उक्त बातें पूर्व मंत्री करछना विधायक उज्जवल रमण सिंह ने घोरहट करछना में सड़क का लोकार्पण करते हुए कहीं उन्होंने कहा कि आज मंहगाई से आम आदमी की कमर टूट गई हैं प्रदेश में बेरोजगारी अपनी चरम पर हैं छोटे व्यापारी,नवजवान, किसान आत्महत्या कर रहे हैं। लेकिन सरकार मंहगाई बेरोजगारी की बात ना कर माफिया मंदिर मस्जिद पाकिस्तान तालिबान की बात करतीं हैं उन्होंने कहा हजारों साल तक हिंदुस्तान पर मुगल व अंग्रेजों का राज था तो क्या हिंदू खत्म हो गया इतनी कमजोर नहीं है हिन्दू संस्कृति की खतरे में पड़ जाय पड़ भाजपा की नजर में हमेशा हिंदू संस्कृति खतरे में रहतीं हैं।इससे आम गरीब आदमी का कुछ लेना देना नहीं है उसको तो अपने परिवार के भरण पोषण मे ही कमर टूटी जा रही हैं। विधायक ने कहा कि तरहार में नील गाय का प्रकोप किसान झेल नहीं पा रहे थे कि जबसे योगी सरकार बनी बिजली का बिल,खाद किल्लत व आवारा पशुओं ने किसानों के रात की नींद व सकून ही छीन लिया। सपा जिलाउपाध्यक्ष विनय कुशवाहा ने कहा कि मोदी योगी सरकार ने उत्तर प्रदेश जनता का रूझान समझ लिया कि अखिलेश की आंधी चल गई हैं जिस तरह से उनकी रथयात्रा में सर्दी में भी लाखों लोग रात तक इंतजार करते रहते हैं इसलिए चुनाव को टालने के लिए कोर्ट का सहारा ले रहे हैं ताकि पेट्रोल-डीजल से जो खरबों रुपये कमाये हैं उसका कुछ अंश गरीब

खबर संक्षेप

जनविश्वास यात्रा के स्वागत एवं सभा मे उमडा.जनसैलाब

लेड़ियारी। प्रयागराज के यमुनापार जिले में जनविश्वास यात्रा गुरुवार को सांय पहुच गई थी सायं विश्राम के बाद शुक्रवार को सुबह जनयात्रा उरूवा मांडा से छोटी जनसभा के बाद मेजा विधानसभा से निकली जिसका पूरे रास्ते मे जगह-जगह पुष्प वर्षा से स्वागत अभिनंदन हेतू आमजन का हूजूम उमड़ पड़ा,मार्ग मे जनता के सैलाब देखें गए। भाजपा की जनविश्वास यात्रा से माहौल भगवामय हो गया। फूलों की बरसात और भारत माता के जयकारों से यात्रा का मांडा रोड़, भारत गंज,मांडा खास काली चौराहा,गिरगोठा,कोरांव,रत्योरा मोड़,लेडियारी,खीरी मे छोटी जनसभा, बारा विधानसभा के प्रवेश पर मवैया,नारीबारी,गन्ने हर्रो टोल प्लाजा, जवाहर इंटर कालेज पर छोटी जनसभा के बाद मिश्रा बांध, गौहनिया,घूरपुर,मामा भांजा तालाब छोटी जनसभा, चाका ब्लाक के बाद लेप्रोसी चौराहा तक "जनविश्वास यात्रा" हर्षोल्लास के साथ स्वागत अभिनंदन किया गया।

संगम की रेती पर भूमि आवंटन के लिए खाक चौक के संतों में मचा घमासान

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। भूमि आवंटन के लिए पैमाइश कराने के साथ ही दो धड़ों में बंटी खाक चौक व्यवस्था समिति के संत आमने-सामने आ गए। भूमि आवंटन में गड़बड़ी की आशंका जताते हुए खाक चौक के एक धड़े के अध्यक्ष सीताराम दास गुट के संत मेलाधिकारी कार्यालय के सामने धरने पर बैठ गए।धरनारत संतों का कहना था कि महामंडलेश्वर संतोष दास सतुआ बाबा को मेला प्रशासन की ओर से भूमि आवंटन की जिम्मेदारी न दी जाए। ऐसा हुआ तो खाक चौक के संतों में विवाद होना तय है। मेला प्रशासन ने दोनों गुटों के संतों को शुक्रवार को बुलाया है, ताकि सहमति बना जा सके। खाक चौक बसाने के लिए भूमि आवंटन शुक्रवार से होगा। इससे पहले बृहस्पतिवार को खाक चौक व्यवस्था समिति के महामंत्री महामंडलेश्वर संतोष दास सतुआ बाबा मेला कर्मियों के साथ भूमि की पैमाइश कराने पहुंचे। संतोष दास गुट की ओर से पैमाइश कराए जाने पर सीताराम दास के धड़े के

फोटो कैप्शन : खाक चौक में जमीन आवंटन से पहले निरीक्षण करते सतुआ बाबा

लोग सड़कों पर उतर आए। शाम को प्रयागराज मेला प्राधिकरण के दफ्तर के सामने धरना शुरू हो गया।खुद को समिति का अध्यक्ष होने का दावा करने वाले सीताराम दास का कहना था कि संतोष दास अपने प्रभाव के बल पर मनमानी कर सकते हैं। मेलाधिकारी को दिए गए ज्ञापन में इस गुट के संतों ने कहा है कि एक वर्ष से समिति के संतों में वैचारिक मतभेद चल रहा है। विरोधी गतिविधियों के कारण संतोष दास को बाहर का रास्त दिखा दिया गया है। समिति के अध्यक्ष सीताराम महात्यागी हैं।अगर संतोष दास के गुट को भूमि आवंटन की जिम्मेदारी मिलती है, तो विवाद बढ़ जाएगा। इस बीच मेला प्रशासन ने खाक चौक की रजिस्टर्ड समिति का विवरण चिट फंड एंड सोसाइटीज के रजिस्ट्रार से तलब कर लिया है। मेला प्रशासन का कहना है कि दोनों धड़ों में सहमति बनाने के लिए वार्ता की जा रही है। उधर, संतोष दास सतुआ बाबा ने कहा कि कुछ लोग समिति में रहकर भूमि और सुविधाएं गलत तरीके से आंवटित कराकर दुरुपयोग कर रहे थे। ऐसे लोगों को मनमानी की छूट नहीं दी जानी चाहिए। समिति मेला प्रशासन के साथ मिलकर भूमि आवंटन करेगी। किसी तरह का विवाद न होने पाए, इसके लिए सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाने के लिए भी आग्रह किया गया है। खाक चौक व्यवस्था समिति के दोनों पक्षों को शुक्रवार को बुलाया गया है। वार्ता के आधार पर हल निकालने का प्रयास किया जाएगा। सहमति न बनने पर मेला प्रशासन उचित निर्णय लेगा। शेषमणि पांडेय, मेलाधिकारी।

सम्पत्ति बंटवारे को लेकर भाइयों में हुआ विवाद, एक की हत्या

अखंड भारत संदेश

कुल्हाड़ी से हमला कर उतारा मौत के घाट, विवाद में बीच बचाव करने गया था युवक, पूरामुफ्ती कोतवाली के मंदर गांव की घटना, कोहराम

पूरामुफ्ती प्रयागराज। पूरामुफ्ती कोतवाली के मंदर गांव में बृहस्पतिवार की रात संपत्ति बंटवारे को लेकर चार भाइयों के बीच हुए विवाद में एक भाई की कुल्हाड़ी मार कर हत्या कर दी गई। मृतक युवक परिवार का छोटा भाई था और वह भाइयों के बीच हो रही मारपीट में बीच बचाव के लिए गया था। तभी तैश में रहे एक भाई ने कुल्हाड़ी से वार कर उसे मौत के घाट उतार दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। मामले में पुलिस ने तीन अन्य भाइयों को हिरासत में लिया है। घटना के बाद से परिजनों में कोहराम मचा है। पूरामुफ्ती कोतवाली के मंदर गांव निवासी फूलचंद्र उर्फ काला बच्चा (32) पुत्र मिठाई लाल मजदूर था। उससे तीन बड़े भाई कल्लू, ननका और चौबे के बीच मां के नाम रही जमीन के बंटवारे को लेकर विवाद चल रहा है। बृहस्पतिवार की शाम को भी कल्लू और चौबे के बीच विवाद हुआ था। विवाद जब बढ़कर मारपीट की नौबत में पहुंच गया तो सबसे छोटा भाई फूलचन्द्र बीच बचाव के लिए मौके पर पहुंच गया। इसी दौरान कुल्हाड़ी से लैस रहे कल्लू ने तैश में आकर फूलचन्द्र उर्फ काला बच्चा (32) पर हमला कर दिया। हमले में युवक का सिर फट गया। गंभीर हालत में उसे प्रयागराज एसआरएन ले जाया गया जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। घटना से परिजनों में कोहराम मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। मामले में पुलिस ने मृतक के तीन अन्य भाइयों को हिरासत में लिया है। मामले में पुलिस ने मृतक की पत्नी किरन देवी की तहरीर पर कल्लू, ननका और चौबे के खिलाफ हत्या की रिपोर्ट दर्ज कर लिया है। घटना को लेकर परिजनों में कोहराम मचा है।

मंत्रालय की क्वालिटी मानीटरिंग टीम ने खोदवाई सड़क

अखंड भारत संदेश

यमुनापार के विकास खंड जसरा और शंकरगढ़ के गांवों में पहुंची टीम

शंकरगढ़। ग्राम पंचायतों में करवाए जा रहे विकास कार्यों की निगरानी और क्वालिटी मानीटरिंग के लिए गठित केंद्र सरकार की टीम ने शुक्रवार को यमुनापार के विभिन्न स्थानों का दौरा किया। टीम ने विकास खंड जसरा और शंकरगढ़ में निरीक्षण के दौरान कार्यों का स्थलीय सत्यापन किया और सोलिंग उखड़वाकर गुणवत्ता परखी गई।

ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार की स्टेट क्वालिटी मानीटरिंग टीम द्वारा विकास खंड शंकरगढ़ के ग्राम पंचायत गाढ़ाकटरा, भोंड़ी, चुंदवा, लखनपुर, चकशिवचेर, डेरा, डेराबारी, देवरा, नीबी, नौढि?ा उपरहार, मदनपुर और जसरा के कुछ ग्राम पंचायतों का दौरा करना था, लेकिन इस टीम के अधिकारियों ने शंकरगढ़ के चुंदवा और नौढि?ा का ही मुआयना किया। इसके बाद टीम विकास खंड जसरा का निरीक्षण करने चली गई। चुंदवा में टीम ने मिनी सचिवालय, सडक,

मंत्रालय की क्वालिटी टीम सड़क की जांच पड़ताल करती

खड़ंजा, नाली निर्माण, डिस्प्ले बोर्ड, लाइटिंग, वाल राइटिंग, जाब कार्ड सहित वर्क फाइल और जाब फाइल की जांच की। निरीक्षण के दौरान टीम ने सोलिंग को उखड़वाकर गुणवत्ता की जांच की। ग्राम पंचायत नौढि?ा में भी दस लाख रुपये के ऊपर के पक्के कार्य और पांच लाख तक के कच्चे कार्यों का मुआयना किया। इस दौरान कई कार्यों को लेकर टीम ने नाराजगी भी जाहिर की। इसके बाद टीम विकास खंड जसरा के गांवों का निरीक्षण करने के लिए पहुंची। शंकरगढ़ में निरीक्षण के दौरान बीडीओ अमित मिश्र, ग्राम विकास अधिकारी राजेंद्र मौर्य, शशिकांत सिंह, प्रधान शैलेंद्र सिंह, रोजगार सेवक आदि रहे।

करछना ब्लाक में दिव्यांगों को वितरित किया गया कृत्रिम अंग

करछना। विकास खंड करछना में आयोजित कार्यक्रम में दिव्यांग शिविर का आयोजन किया गया जिसमे कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में करछना के पूर्व विधायक दीपक पटेल की मौजूदगी में दिव्यांग जनों को पचास लोगों को ट्राई साइकिल, चार लोगों को कान की मशीन, दो को व्हील चेयर, तीन को स्मार्ट केन,दो लोगों को बैसाखी एवं तथा पचास लोगों को दिव्यांगता प्रमाण पत्र प्रदान किया गया ।इस मौके पर खंड विकास अधिकारी करछना राम विलास राय, एडीओ पंचायत विवेक कुमार मिश्रा अतुल मिश्रा, दुष्यंत प्रताप सिंह, समाज कल्याण विभाग करछना विजय शंकर यादव, सचिव संजीव श्रीवास्तव ,सचिव कमल सिंह, सचिव, अब्दुल वारी, सचिव राम सकल, सचिव महेश कुमार, सचिव मनीष यादव, सचिव,अमीत यादव, मनरेगा प्रभारी मनीष शुक्ला, अल्प नारायण सिंह उत्तर प्रदेश लेखा एवं लेखा परीक्षा सेवा एसोसिएशन जनपद ईकाई प्रयागराज के अध्यक्ष, सहित बडी संख्या में दिव्यांग महिला एवं पुरुष मौजूद रहे।

उपस्थित पूर्व विधायक, एवं दिव्यांग जन

जीवन ज्योति पब्लिक स्कूल में क्रिसमस डे पर बच्चों नें मचाया धमाल

अखंड भारत संदेस

करछना। विकास खंड के बीरपुर जीवन ज्योति पब्लिक स्कूल में क्रिसमस डे के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विद्यालय के निदेशक डाक्टर आरके पाण्डेय एवं चेयरमैन कुसुम पाण्डेय और कार्यकरी प्रभारी डाक्टर के.के .शुक्ला के नेतृत्व में स्कूल के छात्र एवं छात्राओं रंगारंग सास्कृतिक कार्यक्रम पेश कर धमाल कर दिया, क्रिसमस डे के अवसर स्कूल के छात्र एवं छात्राओं नें उपस्थित शिक्षक एवं शिक्षिकाओ को अपनी कला और रंग मंच से सब को झूमने पर मजबूर कर दिया, उनके इस कार्यक्रम में सबसे उत्कृष्ट प्रदर्शन पर स्कूल के निदेशक डाक्टर आर के पाण्डेय एवं चेयरमैन कुसुम पाण्डेय और कार्यकरी प्रभारी डाक्टर के.शुक्ला की ओर से बच्चो को पुरस्कृत किया गया इस अवसर पर स्कूल के सभी छात्र एवं छात्राएँ तथा स्कूल के शिक्षक एवं शिक्षिकाओ समेत गणमान्य लोग मौजूद रहे।

क्रिसमस डे मनाते स्कूल परिसर में उपस्थित बच्चों व विद्यालय परिवार

नैनी में दो दिवसीय प्रांतीय खेलकूद संपन्न

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक दीप प्रज्वलित करते हुए।

प्रतियोगिता में प्रतिभागी ऊंची कूद लगाती हुई।

अखंड भारत संदेश

नैनी। माधव ज्ञान केंद्र इंटर कॉलेज नैनी में विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित प्रान्तीय स्तर की दो दिवसीय एथलेटिक्स (गोला फेंक, दौड़ 100, 300, 800`, 1500 ,3000, लम्बी कूद, ऊँची कूद),कबड्डी, बैडमिंटन की प्रतियोगिता जिसमें काशी प्रान्त के 8 संकुलो (केशव, माधव,काशी, मिजार्पुर, गाजीपुर, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, सोनभद्र) से 410 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रयागराज के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी, विद्याभारती के संगठन मंत्री डॉ राम मनोहर ने ओवर आल चैंपियनशिप की ट्रॉफी माधव संकुल 146 अंक प्राप्त कर अपने नाम की। व-19 बालक वर्ग में गोला फेंक में आदित्य कुशवाहा, ऊँची कूद में कुलदीप कुमार, 100 मीटर दौड़ में प्रियांशु कुमार,800 मीटर में राजू प्रसाद, 3000मीटर दौड़ में नीतिन द्विवेदी तथा व-19 बालिका वर्ग में गोल फेंक में प्रतिष्ठा मिश्रा,100 मीटर दौड़ में मीनाक्षी,800 मीटर दौड़ में सपना रॉय, 1500 मीटर व 3000 मीटर में प्रतापगढ़ संकुल की अंजू यादव ने प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया।माधव संकुल(रानी रेवती देवी व माधव ज्ञान केंद्र के खिलाड़ियों ने एथलेटिक्स, कबड्डी व बैडमिंटन में व केशव शंकुल(ज्वाला देवी सिविल लाइंस)के छात्रों ने कबड्डी में अपना दबदबा बनाये रखा।

उक्त कार्यक्रम में प्रदेश निरीक्षक रामजी सिंह, डॉ रघुराज प्रताप सिंह, शिव कुमार पाल, जी,प्रधनाचार्य डॉ विंध्यवासिनी प्रसाद त्रिपाठी, प्रदीप कुमार त्रिपाठी,श्री बांके बिहारी पांडेय, विक्रम बहादुर सिंह, युगल किशोर, विजय उपाध्याय, विभूति नारायण सिंह, अजीत , दिग्विजय पाल, विनोद कुमार इत्यादि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

बालू के खनन : दो माफियाओं में ठनी समय रहते कठोर कदम न उठाया तो हो सकता है खूनी संघर्ष

अवैध खनन से चौकी बड़ोखर की पुलिस करती है हर माह लाखों का वारा न्यारा

लेडियारी। कोरांव थाना के पुलिस चौकी बड़ोखर क्षेत्र के नदियों में बालू का अवैध खनन जोरों पर चल रहा है परंतु स्थानीय पुलिस अवैध वसूली में मशगूल है बालू के खनन को लेकर दो माफियाओं में ठनी है समय रहते प्रशासन ने न रोका तो खूनी संघर्ष हो सकता है। बताया जाता है कि पुलिस चौकी बड़ोखर क्षेत्र के बेलन नदी, गुरमा नदी के लगभग आधा दर्जन घाटों पर बालू का खनन जोरों पर चल रहा है पुलिस ने खनन में लगे ट्रैक्टरों तथा बालू के ठेकेदारों से अवैध वसूली में मस्त हैं नदियों के घाटों को लेकर दो माफियाओं में बालू निकासी को लेकर ठनी हुई है समय रहते प्रशासन ने कोई कार्यवाही तथा अवैध बालू के खनन को बंद न कराया गया तो खूनी संघर्ष से इनकार नहीं किया जा सकता अवैध खनन की जानकारी होने पर नए थाना प्रभारी कोरव रमेश चौबे दल बल के साथ घाटों पर पहुंचे तो इसके पहले चौकी की पुलिस ने माफियाओं को सूचना दे दिए थे जिससे सब ट्रैक्टर वालों तथा माफिया भाग गए थे नदियों के किनारे बालू बड़े पैमाने पर डंप था मजे की बात है कि घर का भेदी लंका ढाए यह कहानी चरितार्थ हो रही है इंस्पेक्टर कोराव श्री चौबे जी पूरे प्रयास में है की अवैध खनन बंद हो परंतु स्थानी पुलिस चौकी के बड़ोखर के इंचार्ज की अवैध कमाई बंद हो जाएगी जिसके कारण अवैध खनन जोरों पर चलवा रहे हैं इंस्पेक्टर कोराव के आने की लोकेशन चौकी इंचार्ज माफियाओं को बता देते हैं जिसके कारण खनन माफियाओं का बल्ले-बल्ले है जिले के अधिकारियों के सारे आदेश ताक पर रखकर अवैध वसूली में मस्त दिख रहे हैं पता चला है कि अवैध खनन से हर माह स्थानीय पुलिस लाखों रुपए की वारा न्यारा करती है। ग्रामीणों एवं सामाजिक कार्यकताओं ने पुलिस महा निरीक्षक/एस.एस.पी. प्रयागराज से मांग किया है कि अवैध खनन पर अंकुश लगाते हुए दोषी पुलिस कर्मियों के विरुद्ध कार्यवाही किया जाए।

मोदी-योगी सरकारे विकास का इतिहास रच रही तो विपक्ष को दर्द कैसा : महेन्द्र नाथ पांडेय

जनसभा में लोगों को संबोधित करते डॉ. महेन्द्र नाथ पाण्डेय।

लेडियारी। सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास और सबके प्रयास से बनी सरकार ने जनता का विश्वास हासिल कर प्रदेश मे पाचं वर्ष और केन्द्र मे सात वर्षो मे जो विकास की गंगा बहाई है उसे याद दिलाने आया हूँ। आम जनता को नेता के नाम से चिढ़ होती थी उसे खतम करने वाले मोदी योगी जैसे दो संत है। एक लखनऊ मे तो दूसरे दिल्ली मे बैठे प्रदेश और देश की जनता की सेवा कर बादो को पूरा कर जनता की विश्वनीयता हासिल किया। उक्त बाते यमुनापार के खीरी,जारी,मामा भांजा तालाब मे जनसभा को सम्बोधित करते हुए केन्द्रिय मंत्री डॉ. महेन्द्र नाथ पांडेय ने कहा और मौजूद महिलाओ के हूजूम से पूछा यहा कितने महिलाओ का खाता बैंको मे है। तो चारो तरफ उठे हाथो को देखकर कहा इसी लिए आया हूँ। यह विकास ना रूके और आगे चलता रहे यह मोदी की देन है कि महिलाओ का खाता और उनका अधिकार,सम्मान और सुरक्षा मिल रही है। और सबको आवास,गैस,शौचालय,शिक्षा,स्वास्थ्य की सुविधाए भी मिले जो दुनिया के बडे.देशो मे आम जनता को मिल रही है। वह हमारे देश के गरीबो को मिले। सपा-बसपा-काग्रेस अपने लिए सरकारे बनाते थे। अपने परिवारो का विकास करते थे और एक दो कार्यो का और ढिढोरा पीटते थे। हम लोग हमारी मोदी-योगी सरकारे तो नित्य नए विकास का कार्य कर इतिहास रच रही है तो जनता को बताने आते है तो विपक्ष को क्यो दर्द होता है। जब प्रधानमंत्री मुख्यमंत्री कोई शिलान्यास करता है जो समाज मे संदेश जाता है। और जनता का विकास होता है। दो तरह की राजनीति है हिन्दूस्तान मे है एक है विकासबादी सरकार सरदार पटेल और पं दीनदयाल उपाध्याय आदि के सपनो को पूरा कर अंतिम पक्ति पर खडें व्यक्ति का उत्थान करने वाली पार्टी। तो दूसरी तरफ परिवारवाद की पार्टिया,भ्रष्टचार युक्त पार्टिया,विकास विरोधी और जिन्नावादी पार्टिया है। राष्ट्रीय मंत्री सासंद विनोद सोनकर ने कहा यह जनविश्वास यात्रा आपको यह विश्वास दिलाने आई है कि यदि प्रदेश मे योगी है तो भ्रष्टचार मुक्ती है।अगर योगी है तो अपराध मुक्त है। अगर योगी है तो प्रदेश भूखा और सूखा मुक्त है। योगी है तो विकास है। समाजबादी पार्टी के मुखिया दिन मे मुंगेरी लाल के सपने देखने लगे है। उनके विधायक गुंडई पर उतर आए है। और पुलिस अधिकारी सुरक्षित नही है तो इनकी सरकारो मे आम आदमी कैसे सुरक्षित रहेगा। यह जिन्ना की बात करते है। डॉ.महेन्द्र नाथ पांडेय,राष्ट्रीय मंत्री विनोद सोनकर, प्रदेश सरकार के मंत्री रमाशंकर पटेल, प्रदेश सरकार के मंत्री धर्मबीर प्रजापति, प्रो.रीता बहुगुणा जोशी, जिला प्रभारी ओंकार केसरी, जिलाध्यक्ष यमुनापार विभव नाथ भारती,भाजपा नेता विभूति नारायण सिंह आदि के नेतृत्व मे यमुनापार मे जनविश्वास यात्रा निकली सभी ने जनता को सम्बोधित करते हुए सरकार की उपलब्धियां बताई। विधायक मेजा नीलम करवरिया, कोरांव विधायक राजमणि कोल, बारा विधायक डॉ. अजय कुमार ने अपने-अपने विधानसभा क्षेत्र मे रथ पर सवार होकर अपने क्षेत्र की उपलब्धिया गिनाते हुए यात्रा का जोरदार स्वागत अपने क्षेत्रो मे किया। करछना मे पूर्व विधायक दीपक पटेल,पियूस रंजन निषाद आदि ने स्वागत किया। भाजपा यमुनापार संगठन द्धारा जोरदार स्वागत अभिनन्दन की योजना बनाई सफल होने पर जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती ने अतिथियो एवं कार्यकर्ताओ एवं जनसमूहो का आभार जताया। यात्रा का स्वागत करने वालो मे जिला यात्रा संयोजक राजेश्वरी तिवारी,शिवदत पटेल,विक्रमाजीत मौर्य,विजय शंकर शुक्ला,राजेश शुक्ला,दिलीप कुमार चतुर्वेदी,राकेश पांडेय,ज्ञाननारायण कन्नौज्जिया,तारा शंकर पांडेय,रामेश्वर द्धिवेदी,सुधीर कुमार साहू वउआ, आदि यात्रा के रहकर स्वागत अभिनन्दन किया।

सपा की सरकार बनाने का मन बना चुकी है प्रदेश की जनता : एसबी यादव

अखंड भारत संदेश

प्रतापपुर के छतौना गांव में सदभावना सम्मेलन को संबोधित करते सपाई

फूलपुर। वर्तमान सूबे की सरकार अपने हर मुद्दे पर विफल है। युवाओं को नौकरी देने की बात हो या फिर महिलाओं को सुरक्षा सरकार हमेशा फेल ही रही है। प्रदेश में गरीब ,किसान ,बेरोजगार सभी परेशान हैं। परन्तु सरकार उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश बनाने का ढिंढोरा पीटकर खुद अपनी पीठ थपथपा रही है। उक्त बातें शुक्रवार को प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र के छतौना गांव में समाजवादी सदभावना सम्मेलन को संबोधित करते हुए समाजवादी यूथ ब्रिगेड के जिलाध्यक्ष सैफ फरीदी ने बतौर मुख्य अतिथि कही। सदभावना सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए यूथ बिग्रेड के जिला उपाध्यक्ष अशोक अंजान ने कहा कि भाजपा सरकार सिर्फ झूठे वादे कर सत्ता में आना चाहती है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ समाजसेवी एस बी यादव ने कहा कि अब वह दिन दूर नहीं जब सूबे में अखिलेश की सरकार होगी। क्योंकि प्रदेश की जनता ने सपा को लाने का मन बना लिया है। प्रदेश में जहां बेरोजगारों को नौकरी मिलेगी वहीं महिलाओं की सुरक्षा के साथ ही प्रदेश में कानून का राज होगा। पूर्व जिलाध्यक्ष कृष्ण मूर्ति यादव ने कहा कार्यकर्ता संगठित होकर जुल्मी अताताई सरकार से निपटने के लिए तैयार रहें। वहीं पूर्व विधायक जोखू लाल यादव व पूर्व विधायक विजमा यादव ने कहा की प्रदेश में अब गरीबों व किसानों की सरकार बनने जा रही है। कार्यक्रम का कुशल संचालन समाजवादी लोहिया वाहिनी के पूर्व राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य नसीरुद्दीन राईन ने किया। कार्यक्रम के आयोजक युवा नेता अफजल अहद ने सम्मेलन में आये हुए सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। मौके पर बाबा चन्द्र भान यादव,पूर्व जिला पंचायत सदस्य राज बहादुर यादव, अशोक चेतरा, बलराम यादव, मुराद मंसूरी,मो मसूद शारूख, विरेन्द्र यादव भीम, महेंद्र गुप्ता,जमील, बब्लू, अमर सिंह यादव,प्रदीप यादव, दिनेश यादव,भीम यादव, सुफियान खान,मो० वैश सहित सैकड़ों की संख्या में सपा नेता व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

यीशु दरबार चर्च में आज मनाया जाएगा मानव मुक्ति दिवस

शुआट्स एवं चर्च परिसर में सजी यीशु जन्मोत्सव की झांकियां

नैनी। सैम हिग्गिनबॉटम कृषि प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय के यीशु दरबार चर्च प्रांगण में क्रिसमस को मानव मुक्ति दिवस के रूप में मनाया जाएगा। शुआट्स कुलपति एवं बिशप मोस्ट रेव्ह प्रो0 राजेन्द्र बी. लाल सभा को संबोधित करेंगे एवं विभिन्न मसीही भजन एवं रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन होगा। यीशु दरबार चर्च सभा को यू-ट्यूब के माध्यम से आनलाईन प्रसारित किया जायेगा। कोविड-19 के कारण आनलाईन माध्यम से अनुयाईगण शामिल होंगे। शुआट्स एवं यीशु दरबार चर्च परिसर में जगह- जगह यीशु जन्मोत्सव की झांकियाँ सजायी गई हैं। मुक्तिदाता प्रभु यीशु मसीह के आगमन को लेकर हर्ष का माहौल है। झांकियों में यीशु जन्म के समय तारा का चमकना, चरनी में प्रभु यीशु का जन्म, यीशु जन्म के समय भविष्यवाणी आदि प्रमुख हैं। क्रिसमस की पूर्व संध्या पर बिशप मोस्ट रेव्ह प्रो0 राजेन्द्र बी. लाल ने अपने संदेश में कहा कि यीशु का जन्म परमेश्वर के महान प्रेम का प्रतीक है। सृष्टि का रचना करने वाला प्रभु धरती पर मनुष्य के मध्य आया और जितनों ने उसे पहचाना व ग्रहण किया उसे उसने परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया। यीशु का जन्म, परमेश्वर की आत्मा के द्वारा मनुष्य को एक नया जीवन और एक नया स्वभाव देता है। यीशु मसीह को अपने हृदय में बुलायें, वो आपको एक नया जीवन दान देगा और आप एक नई सृष्टि बन जायेंगे।

दो दिवसीय जनपदीय स्काउट गाइड रैली का हुआ भव्य समापन

बच्चे विद्यालयों में जो संस्कार एवं शिक्षा सीखते है वह आजीवन उनके सामाजिक जीवन का आधार बनती है-जिलाधिकारी

जिलाधिकारी ने स्काउट गाइड रैली में विजयी प्रतिभागियों को शील्ड देकर किया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। राजकीय इण्टर कालेज प्रतापगढ़ के परिसर में चल रहे दो दिवसीय जनपदीय स्काउट गाइड रैली का भव्य समापन हुआ। इस अवसर पर स्काउट गाइड रैली में कस्तूरबा आवासीय विद्यालय मंगरौरा, शिवगढ़, लक्ष्मणपुर, पीबी इण्टर कालेज, जी0जी0आई0सी0 एवं जी0आई0सी0, पूर्व माध्यमिक विद्यालय छेमर सरैया, केपी हिन्दू इण्टर कालेज, महात्मा गांधी इण्टर कालेज बहुचरा, उच्च प्राथमिक विद्यालय रानीगंज आदि विद्यालयों के बच्चों ने विभिन्न मनमोहक झाकियॉ राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण सुरक्षा, भारत माता, झांसी की रानी, शारीरिक कौशल आदि कार्यक्रमों की प्रस्तुति की जिसका वहां पर उपस्थित लोगों ने तालियॉ बजाकर काफी प्रशंसा की।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल सम्मिलित हुये और स्काउट गाइड रैली में विजयी प्रतिभागियों को शील्ड देकर सम्मानित किया तथा सम्बोधित करते हुये कहा कि पिछले 2 वर्ष कोरोना महामारी के कारण विद्यालय की शैक्षिक गतिविधियां प्रभावित हुई तथा बच्चों को शैक्षणेत्तर गतिविधियों में भाग लेने का अवसर प्राप्त नही हुआ, यह खुशी की बात है कि दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को इस रैली के माध्यम से शैक्षणेत्तर गतिविधियां के माध्यम से उन्हें सीखने का अवसर प्राप्त हुआ है। उन्होने कहा कि बच्चे स्कूल एवं विद्यालयों में जो संस्कार एवं शिक्षा सीखते है वह आजीवन उनके सामाजिक जीवन का आधार बनती है। इस रैली के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, देश प्रेम, स्वच्छता, पर्यावरण, जागरूकता, सद्भाव एवं टीम भावना से काम करने का कौशल विकसित हुआ है जिसे बच्चे सुखद स्मृति के रूप में अपने साथ लेकर जायेगें। उन्होने विजयी प्रतिभागियों को शुभकामना देते हुये कहा कि टीम में प्रतिभाग करना महत्वपूर्ण है जीत-हार को स्वस्थ्य रूप से लेना चाहिये और असफल होने वाले प्रतिभागी को दुगुनी ऊर्जा से सफल होने के लिये अगले वर्ष प्रयास करना चाहिये।

जिला विद्यालय निरीक्षक सर्वदानन्द ने अवगत कराया कि इस रैली में 41 टीमों के 750 बच्चों द्वारा प्रतिभाग किया गया है। दिनांक 23 दिसम्बर को बच्चा द्वारा मतदाता जागरूकता रैली अध्यापकों के साथ निकाली गयी थी। बच्चों ने 02 दिवस में कैम्प लगाकर मार्च पास्ट, झांकी प्रतियोगिता, शारीरिक कौशल, कैम्प निर्माण, आपदा प्रबन्धन के बारे में बच्चों को जानकारी दी गयी है। इस रैली में कक्षा-6 से 12 तक के जनपद के इण्टर कालेज एवं जूनियर हाईस्कूल एवं कस्तूरबा आवासीय विद्यालयों की टीमों द्वारा प्रतिभाग किया गया है। यहां से प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी मण्डलीय रैली में प्रतिभाग करेगें। इस अवसर पर राघवेन्द्र पाण्डेय सचिव स्काउट गाईड रैली की आख्या प्रस्तुत की। इस दौरान जिला सूचना अधिकारी विजय कुमार, अध्यक्ष स्काउट्स गाइड्स डा0 निशाकान्त ओझा, जिला आयुक्त स्काउट्स पीके तिवारी, जिला आयुक्त गाइड्स गीता यादव, राजकीय बालिका इण्टर कालेज की प्रधानाचार्य गरिमा श्रीवास्तव, पीबी इण्टर कालेज प्रतापगढ़ सिटी के डा0 अनूप सिंह सहित डा0 विन्ध्याचल सिंह, डा0 मो0 अनीस सहित विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्य, शिक्षक, स्काउट्स गाइडस प्रशिक्षक/कैडेट्स उपस्थित रहे।

माध्यमिक शिक्षक संघ के पूर्व अध्यक्ष कांग्रेस में हुए शामिल, कांग्रेसियों ने किया स्वागत

एमएलसी दीपक सिंह ने कांग्रेस कार्यकताओं में भरा जोश

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। माध्यमिक शिक्षक संघ के पूर्व अध्यक्ष राम चन्द्र सिंह अपने तमाम साथियों के साथ कांग्रेस में शामिल हो गए हैं। उक्त जानकारी शुक्रवार को जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष डॉ0लालजी त्रिपाठी ने दी है। डॉ0 त्रिपाठी ने बताया कि राम चन्द्र सिंह और उनके साथियों को विधिवत सदस्य बनाया गया है।

कांग्रेस में सदस्यता लेने वाले राम चन्द्र सिंह और उनके साथियों के स्वागत हेतु आयोजित समारोह में विचार व्यक्त करते हुए राम चन्द्र सिंह ने कहा कि कांग्रेस एक ऐसी पार्टी है, जो वास्तव में समाज के हर वर्ग का विकास एवं उन्नत करना ही एक लक्ष्य मानती रही है, जिसका हमारे देश के इतिहास में स्वर्णिम एवं गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। उन्होंने कहा कि मैं कांग्रेस के बैनर तले समाज की सेवा करना चाहता हूं, इसीलिए आज कांग्रेस की सदस्यता अपने साथियों के साथ ले रहा हूँ। विधान परिषद सदस्य दीपक सिंह ने कांग्रेस परिवार में आये साथियों का स्वागत किया और कहा कि वर्तमान सरकार के कार्यों से प्रदेश की जनता ऊब चुकी है और बदलाव का मन बना चुकी है। प्रदेश सचिव व प्रतापगढ़ प्रभारी रणजीत सिंह सलूजा ने कहा कि परिवार बढ़ने से हर व्यक्ति हर्ष का अनुभव करता है। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष डा0वी0के0सिंह, पूर्व अध्यक्ष नरसिंह प्रकाश मिश्र, शहर अध्यक्ष इरफान अली, कपिल द्विवेदी, वेदान्त तिवारी, मनोकानिका उपाध्याय, अनिल प्रतल सिंह, रवींद्र सिंह, राज बहादुर सिंह, सुरेंद्र मिश्र, सुरेंद्र सिंह, रामदेव यादव, संजय सिंह, छोटेलाल वर्मा, सुरेश प्रताप सिंह, नरेंद्र बहादुर सिंह, मो0दिलशाद, आलोक कुमार, सर्वेश सिंह, आलोक मिश्र, राम कुमार शर्मा, रमा शंकर गौतम, अनिल सिंह, सुरेंद्र नाथ मिश्र, सुरेश मानी त्रिपाठी, यमुना प्रशाद पांडेय, अनिल मौर्य, गुड्डू सिंह, मनीष सिंह, विवेक पांडेय, मो0 यूसुफ, दीपक शुक्ल सहित अनेक कांग्रेस जनों ने विचार व्यक्त किये।

विवाहिता घर से लापता, परिजनों ने जताई हत्या की आशंका

नकदी तथा जेवरात के साथ विवाहिता घर से लापता

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। शादी के 20 साल बाद विवाहिता की रहस्यमय तरीके से गायब हो जाने पर मायके वालों ने ससुराली जनों पर शिकायत देकर दहेज हत्या की आशंका जताते हुए शिकायत पुलिस से किया है। पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र के मझिगवां गांव के कुर्बान पुत्र अशरफ का आरोप है कि उसने अपनी पुत्री नाजो की शादी 6 दिसंबर 2020 को रेडीगारापुर गांव के आजाद पुत्र मुस्तकीम के साथ की थी दान दहेज के अलावा विवाहिता के ससुराल बाइक की मांग कर रहे थे 24 दिसंबर को विवाहिता के ससुर कुर्बान के पास पहुंचे और उसकी बेटी के लापता होने की सूचना दी दहेज उत्पीड़न में बेटी की हत्या की आशंका जताते हुए ससुराली जनों के खिलाफ उसके पिता ने तहरीर दिया है पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है। उधर शादी के एक साल बाद घर से विवाहिता नकदी व जेवरात के साथ गायब हो गई विवाहिता की सास ने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर उसके लापता होने की तहरीर दी है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के नेवादा गांव की रहने वाली सरवरी पत्नी कस्तूरी ने बताया कि एक साल पहले उसके लड़के रब्बान की शादी शबनम पुत्री मुनीजर निवासी ग्राम नेवादा के साथ हुई थी। गुरुवार की रात शबनम कीमती जेवरात व नकदी के साथ घर से लापता हो गई। नात रिश्तेदार व संभावित ठिकानों पर पता करने के बाद जब उसका पता नहीं चला तो विवाहिता के लापता होने की तहरीर उसने पुलिस को दी है। पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

काव्या बनी सेंटा क्लाज, बच्चों ने जमकर मनाई खुशियां

- हैप्पी टाइम स्कूल में प्रभु यीशु के जन्मदिन पर बच्चों ने धमाया मचाल

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर के नया माल गोदाम रोड स्थित हैप्पी टाइम प्ले वे स्कूल में क्रिसमस का त्योहार धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर क्लास-1 की छात्रा काव्या गौड़ सेंटा क्लाज बनकर छात्र-छात्राओं को उपहार बांटा। सेंटा क्लाज से उपहार पाकर छात्र-छात्राओं के चेहरे खिल उठे।

फोटो 1-हैप्पी टाइम स्कूल में सेंटा क्लाज बनकर उपहार बांटती काव्या

काका पब्लिक स्कूल में धूमधाम से मनाया गया क्रिसमस डे

अखंड भारत संदेश

पट्टी नगर, प्रतापगढ़। कस्बे के मेला ग्राउंड स्थित काका पब्लिक स्कूल में विद्यालय के अध्यापक अध्यापिकाओं के साथ बच्चों के बीच प्रभु ईसा मसीह का जन्म दिन क्रिसमस त्योहार के रूप में मनाया गया। इस दौरान सैंटाक्रूज बने मासूम बच्चों ने लोगों का मन मोह लिया वही कार्यक्रम के दौरान विद्यालय परिसर में केक काटकर बच्चों के बीच टॉफी व मिष्ठान का वितरण किया गया। कार्यक्रम के दौरान काका पब्लिक स्कूल के छात्र चेतन, अभिज्ञान, अभिनव व कृष ने सेंटा की ड्रेस पहन कर विद्यालय में मौजूद बच्चों को अपनी ओर आकर्षित किया। विद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के संचालक शुभम यादव के साथ शेखर कुमार, कार्तिक कुमार, सुधा, प्रियंका, कृष्णा समेत समस्त अध्यापक अध्यापिकाएं एवं बच्चे मौजूद रहे।

स्कूल के छोटे-छोटे बच्चों ने विभिन्न परिधानों में आकर प्रभु यीशु के जन्मदिन पर जश्न मनाया। देवांश व अमाया ने रंग-बिरंगे परिधान में नृत्य किया। स्कूल के नन्हे-मुन्ने बच्चों ने सेंटा क्लाज, सेंट मेरी, उनकी झोपड़ी तथा क्रिसमस के अनेक आकर्षक व माडल चार्ट बनाये थे। छात्र-छात्राओं द्वारा बनाये गये माडलों को सजे हुए क्रिसमस ट्री के आसपास सजाया गया था।

इसमें मानवी, सृष्टि, सिद्धी, आराध्या, अनाया, अन्नपूर्णा, अनन्या, अंश गुप्ता, अभिज्ञान, आर्य प्रताप, आयुशी सरोज, अनामिका पाल आदि ने सक्रिय रुप से भाग लिया। प्रारंभ में स्कूल के प्रबंधक शैलेन्द्र मिश्र तथा प्रधानाचार्या अरुणा चार्ल्स ने प्रभु यीशु के बारे में बच्चों को विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर प्रधानाचार्या, कंचन मिश्रा, हर्षिता, उमेश श्रीवास्तव, सीमा पटेल आदि ने प्रभु यीशु के जन्मदिन को धूमधाम से मनाने में सक्रिय योगदान दिया।

धूमधाम से मना क्रिसमस, सेंटा ने बांटे उपहार

अखंड भारत संदेश

बिहारगंज, प्रतापगढ़। विश्वनाथगंज के बी०एल० सुधिता इंटरनेशनल स्कूल में क्रिसमस डे धूमधाम से मनाया गया। इस दौरान बच्चों ने अनोखे और अद्भुत क्रियाकलापो को प्रस्तुत कर समा बांध दिया। कक्षा आठ के छात्र हर्षित मिश्र ने सांता ने बच्चों में टाफियां व उपहार देकर खुशियां बांटी। स्कूल के डायरेक्टर रामजी लाल जायसवाल ने कहा कि प्रतिवर्ष 25 दिसंबर को प्रभु यीशु मसीह का जन्म दिन पूरी दुनिया में धूमधाम से बनाया जाता है। वैश्वीकरण के दौर में त्योहां की संस्कृति भी अपनी सीमाएं लांघ चुकी है। उन्होंने कहा कि क्रिसमस का संदेश आपस में खुशियां बांटना, खुश रहना, प्रेम व भाईचारा फैलाना है। प्रधानाचार्य मोहित पांडेय ने कहा कि इस दिन प्रभु ईसा मसीह का जन्म हुआ था, इसलिए इस दिन को क्रिसमस डे के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि क्रिसमस के त्योहार का मुख्य मकसद है बुराई को खत्म करना और अच्छे विचारों को एक दूसरे में फैलाना। हर किसी के प्रति दया का भाव रखना। इस अवसर ओमप्रकाश पांडेय, आरजू सिंह, भावना सिंह, मुस्कान, सपना, रश्मि, सुमन, अनुष्ठा आदि लोग मौजूद रहे।

सुधिता इंटरनेशनल स्कूल में क्रिसमस ट्री का अवलोकन करते अतिथि

आवास योजना की हकीकत खंगालने पहुंचे पीडी, हडकम्प

लालगंज, प्रतापगढ़। प्रधानमंत्री आवास योजना मे पात्रता की उपेक्षा के आरोपों को खंगालने परियोजना निदेशक के गांव पहुंचने से हडकंप मच गया। लक्ष्मणपुर ब्लाक के हदिराही गांव के कुछ ग्रामीणों ने डीएम को शिकायती पत्र देकर प्रधानमंत्री आवास योजना मे पात्रता का चयन न करने की बात कही थी। डीएम के निर्देश पर शुक्रवार को जिले के परियोजना निदेशक डा. रामचंद्र शर्मा अचानक गांव पहुंचे। परियोजना निदेशक ने पूर्व मे आवंटित आवास निर्माण पर संतुष्टि जताई। वहीं गांव मे दो आवासो के अधूरा मिलने पर ग्राम विकास अधिकारी संजय पाण्डेय को फटकार लगाई। पीडी ने जांच के दौरान शिकायतकर्ता गांव के राजकुमार, जीतलाल, नीलम देवी, लाल बहादुर आदि के बयान भी दर्ज किये। हालांकि जांच के दौरान शिकायतकताओं की पात्रता नही पायी गयी। वहीं जांच को लेकर देर शाम तक गांव मे हडकंप का माहौल दिखा।

परियोजनाओं के संचालन से रामपुरखास की है पहचानः प्रमोद तिवारी

सीडब्ल्यूसी मेंबर ने दो पेयजल परियोजनाओं का किया समारोहपूर्वक भूमिपूजन

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्रीय विधायक एवं कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना द्वारा स्वीकृति करायी गई दो पेयजल परियोजनाओं की शुक्रवार को सौगात पाकर ग्रामीणों मे खुशी की लहर देखी गयी।

सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी ने रामपुर खास विधानसभा क्षेत्र के सई तटवर्ती कलापुर एवं बभनपुर मे करोड़ो की लागत से बनने वाली पीने की पानी की टंकी का समारोहपूवर्क भूमिपूजन किया।

विधायक मोना की ओर से दोनों पेयजल परियोजनाओं की आधारशिला रखते हुए प्रमोद तिवारी

ने इन टंकियो के गुणवत्तापरक समयबद्ध निर्माण कराए जाने का भी लोगों को भरोसा दिलाया। श्री तिवारी ने कहा कि बभनपुर तथा कलापुर मे निर्मित होने वाली पीने के पानी की इन टंकियो से इन गांवो के सभी पुरवे को लाभान्वित किया जाएगा। वहीं बभनपुर मे आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए श्री तिवारी ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र मे पेयजल टंकी के संचालन का सबसे बड़ा उददेश्य लोगों को पीने के पानी की शुद्धता की बदौलत पूर्ण रूप से स्वस्थ रखना है। उन्होनें कहा कि सई तटवर्ती गांवो मे विधायक मोना द्वारा सघन पेयजल योजना के निरंतर मिशन का उददेश्य यह है कि गांव के गरीब तबके को खारे पानी से निजात दिलायी जा सके। जनसभा को चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी तथा जिपंस रघुनाथ सरोज व पूर्व प्रमुख ददन सिंह ने भी संबोधित कर क्षेत्रीय विकास पर प्रकाश डाला। जनसभा की अध्यक्षता ब्लाक अध्यक्ष केडी मिश्र तथा संचालन मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने किया। इसके बाद प्रमोद तिवारी ने कलापुर गांव मे भी सवा तीन करोड़ से अधिक लागत की पेयजल परियोजना ग्रामीणों को समर्पित की।

मानक से काम न होने पर रोका निर्माण कार्य

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। तहसील क्षेत्र के सपहा छात गांव में स्थित नहर की पटरी पर सड़क का निर्माण कराया जा रहा है। ग्रामीणों का आरोप है कि ठेकेदार मानक की अनदेखी कर रहा है। गिट्टी पैदल चलने से ही उखड़ जा रही हैं। ग्रामीणों की शिकायत पर ठेकेदार दबंगई कर रहा है। इससे आक्रोशित ग्रामीणों ने निर्माण कार्य बंद करा दिया है। गांव के पूर्व प्रधान आद्या प्रसाद सिंह सहित अन्य ग्रामीणों का आरोप है कि सपहा छात गांव में नहर की पटरी की सड़क का घटिया निर्माण एक ठेकेदार से कराया जा रहा है। ग्रामीणों ने इसकी शिकायत काबीना मंत्री मोती सिंह के साथ ही प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के पोर्टल पर की है। पूर्व प्रधान आद्या सिंह समेत ग्रामीणों का आरोप है कि यदि मानक के अनुरूप कार्य नहीं किया जाता तो निर्माण नहीं होने दिया जाएगा।

उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य जनपद में आगमन आज

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य 25 दिसम्बर को राजकीय हेलीकाप्टर द्वारा अपरान्ह 2.15 बजे हेलीपैड जवाहर नवोदय विद्यालय परिसर गौरीगंज से प्रस्थान कर अपरान्ह 2.35 बजे हेलीपैड सुखपालनगर पहुॅचेंगे। अपरान्ह 2.45 बजे उप मुख्यमंत्री कार्यक्रम स्थल सुखपालनगर पहुॅचेंगे, जहां पर वह नितिन गडकरी मंत्री भूतल एवं परिवहन भारत सरकार के साथ एन0एच0ए0आई0/एन0एच0 की विभिन्न परियोजनाओं का लोकार्पण/शिलान्यास करेगें तदोपरान्त जनसभा में सम्मिलित होंगे। अपरान्ह 3.45 बजे उप मुख्यमंत्री हेलीपैड सुखपालनगर पहुॅचेंगे, जहां से वह बम्हरौली एयरपोर्ट प्रयागराज के लिये प्रस्थान करेंगे।

मारपीट को लेकर आरोपियो के खिलाफ मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। स्थानीय कोतवाली के इंदिरा चैक निवासी अजय कुमार मोदनवाल ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि बीते बुधवार को रंजिशन विपक्षी कमलेश मोदनवाल तथा आशा देवी तथा रिंकी देवी ने उसे तथा उसके पति को लाठी डण्डे से मारापीटा।

विपक्षियो के हमले मे पीडिता व उसके पति को चोटें आ गयी। शोर मचाने पर आरोपी जानलेवा धमकी देते चले गये। इधर पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने आरोपियो के खिलाफ केस दर्ज किया है। वहीं दूसरे पक्ष के कमलेश मोदनवाल ने तहरीर मे आरोप लगाया है कि विपक्षी अजय मोदनवाल समेत उसके परिवार के सदस्यों ने उसे मारापीटा। दूसरे पक्ष की तहरीर पर भी पुलिस ने केस दर्ज किया है। कोतवाल कमलेश पाल का कहना है कि तहरीर के आधार पर दोनों पक्षो की तरफ से केस दर्ज किया गया है। जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

गालीगलौज व धमकी को लेकर रिपोर्ट दर्ज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली के तेलियाही निवासी सभाजीत यादव ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि गांव के सिराजुददीन, जहीर, इरफान व वहीद अहमद ने जमीनी विवाद को लेकर बीती चैदह दिसंबर को उसे मारापीटा। शोर मचाने पर आरोपियो ने गाली देते हुए जानलेवा धमकी दी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपी वहीद अहमद समेत चार के खिलाफ मारपीट तथा गालीगलौज तथा धमकी का केस दर्ज किया है।

प्रधानाध्यापक पर बच्चों ने लगाया आरोप, जांच मे जुटे बीईओ

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जेठवारा थाना के लक्ष्मणपुर विकासखण्ड के उच्च प्राथमिक विद्यालय बरदैत कैथा डांड़ी में बच्चों ने प्रधानाध्यापक पर आवांछित हरकत किये जाने का आरोप लगाया है। प्रधानाध्यापक पर बच्चों के आरोप को लेकर जहां सनसनी फैल गयी। वहीं अभिभावको को भी आक्रोशित देखा गया। पढ़ने वाले बच्चों का आरोप है कि यहां तैनात प्रधानाध्यापक मो. सलीम बच्चों के साथ गलत हरकत किया करते हैं। अभिभावकों की शिकायत पर ग्राम प्रधान सुभाष जायसवाल ने प्रधानाध्यापक की हरकत को लेकर बीएसए को फोन कर जानकारी दी। ग्राम प्रधान की शिकायत पर बीएसए के निर्देश पर खण्ड शिक्षा अधिकारी मौके पर पहुंचे और शिकायत के बाबत जांच कर आरोपी प्रधानाध्यापक पर कार्रवाई का ग्रामीणों को भरोसा दिलाया। जांच के दौरान बीईओ ने विद्यालय मे पढ़ने वाले बच्चों व उनके अभिभावको का बयान भी दर्ज किया है।

किशोरी ने की आत्महत्या, कोहराम

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। मनोरोगी किशोरी ने कमरे के अंदर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। किशोरी की मौत पर परिजनों मे कोहराम मच गया। सांगीपुर थाना क्षेत्र के भगतपुर निवासी रामसजीवन कोरी की पुत्री संजना 15 मानसिक रूप से बीमार चल रही थी। पारिवारिक सूत्रों के मुताबिक बीमारी से तंग आकर संजना ने गुरूवार की रात अपने कमरे मे छत के चूले मे दुपटटा लगाकर आत्महत्या कर ली। कुछ देर बाद मृतका की मां ने संजना को आवाज लगाई तो कमरे के अंदर से कोई जबाब न पाकर घबरा गयी। मां की चीख पुकार पर आसपास के लोग एकत्रित हो गये। दरवाजे के बीच से लोगों ने झांका तो संजना को फंदे से झूलता देख आवाक रह गये। सूचना मिलने पर सांगीपुर एसओ जीतेन्द्र सिंह मौके पर पहुंचे और किशोरी का शव नीचे उतरवाया। पुलिस ने शव का पंचनामा कर पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया। एसओ का कहना है कि पीएम रिर्पोट आने के बाद मौत के कारण का खुलासा हो सकेगा।

खाद्य पदार्थो के औचक जांच से बाजार मे मचा हडकंप

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सांगीपुर बाजार मे शुक्रवार की दोपहर खाद्य पदार्थो की जांच को लेकर टीम पहुंचने से हडकंप मच गया। टीम ने कई दुकानों पर पहुंचकर मिठाई तथा अन्य खाद्य पदार्थो का सैम्पल लिया। टीम के जांच अभियान से बाजार मे अफरातफरी का माहौल बन गया। अधिकांश व्यापारियों ने दुकानों के शटर बंद कर दिये। टीम मे शामिल मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी प्रदीप कुमार राय ने बताया कि जांच मे खाद्यान्न सामाग्रियों मे मिलावट की पुष्टि होने पर आरोपियो के खिलाफ कडी कार्रवाई की जाएगी। वहीं टीम के लोगों ने ग्राहको को सामान की खरीद के समय पक्की रसीद पर अंकित लाइसेंस नंबर व जीएसटी नंबर को लेकर भी जागरूकता दी। जांच पड़ताल मे खाद्य सुरक्षा अधिकारी संजय कुमार तिवारी व अंजनी मिश्र तथा जनार्दन सिंह एवं उदयप्रताप सिंह आदि अभियान मे सक्रियता करते दिखे।

खबर संक्षेप

भाजपा की जन विश्वास यात्रा का आगमन आज

कौशांबी। भारतीय जनता पार्टी की जन विश्वास यात्रा का आगमन 25 दिसंबर को 5:00 बजे कोखराज टोल प्लाजा में होगा जन विश्वास यात्रा के आगमन पर चायल विधायक संजय कुमार गुप्ता ने स्वागत की जोरदार तैयारी की है 25 दिसंबर और 26 दिसंबर को जनपद के विभिन्न स्थानों से होते हुए जनपद के लोगों का विश्वास जन विश्वास यात्रा प्राप्त करते हुए उत्तर प्रदेश सरकार की उपलब्धियों को आम जनमानस को अवगत कराने का काम जन विश्वास यात्रा करेंगी उत्तर प्रदेश में योगी क सरकार को पुनः प्रतिस्थापित करने हेतु सभी कार्यकर्ता व जनमानस को मोदी और योगी के संकल्पों को पूरा करने का अवसर आम जनता से देने के लिए अपील जन विश्वास यात्रा के माध्यम से किया जाएगा 25 दिसम्बर रात्रि 7:00 बजे जन यात्रा का भरवारी कस्बे में विश्राम होगा और 26 दिसंबर को सुबह 10:00 बजे से फिर जन विश्वास यात्रा का संचालन करारी मंझनपुर सिराथू सैनी लेहदरी होते हुए जन विश्वास यात्रा प्रतापगढ़ को जाएगी ओम नारायण शुक्ला यात्रा प्रमुख किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष ने कहा कि जन विश्वास यात्रा का कौशांबी जनपद में जगह-जगह भव्य स्वागत होगा।

विधान सभा चनाव की गोष्ठी

कौशाम्बी। पुलिस कार्यालय के दुगार्भाभी सभागार में पुलिस महानिरीक्षक प्रयागराज परिक्षेत्र प्रयागराज के द्वारा जनपद के पुलिस अधिकारियों थानाध्यक्षों के साथ आगामी विधान सभा चुनाव व बढ़ते हुये कोरेना के खतरे के सम्बन्ध में की गयी गोष्ठी एवं आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये।

घूस नहीं मिला तो किसान को लेखपाल ने बना दिया अमीर

चायल कौशांबी। चायल तहसील के लेखपालों का कारनामा भी निराला है किसान के आय प्रमाण पत्र बनाने में लेखपाल ने 250 रुपए घूस की रकम की मांग की थी लेकिन किसान घूस की रकम नहीं दे सका जिससे आय प्रमाण पत्र बनाते वक्त लेखपाल ने किसान को अमीर बना दिया है मामले में किसान की पत्नी में शिकायत कर लेखपाल पर कार्रवाई की मांग की है विकासखंड नेवादा के बलहेपुर गांव निवासी भुल्लन देवी पत्नी राम कृपाल और राजकुमारी पत्नी रामप्रकाश ने बताया कि गांव में तैनात लेखपाल दस्तावेजों में रिपोर्ट लगाने के लिए रुपये की मांग करता है आरोप है कि प्रति दस्तावेज 250 रुपए की वह वसूली करता है रुपये की मांग पूरी ना होने पर उल्टे सीधे रिपोर्ट लगा लोगों को परेशान करता है।

डीएम ने किया तीन दिवसीय शरद मेला का शुभारम्भ

सहायक महाप्रबंधक जिला विकास नाबार्ड अनिल शर्मा ने कहा कि महिलायें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं

अखंड भारत संदेश

शरद मेला का उद्घाटन करते जिलाधिकारी

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने खण्ड विकास परिसर मंझनपुर में नाबार्ड द्वारा आयोजित तीन दिवसीय शरद मेला का शुभारम्भ किया जिलाधिकारी ने लगायी गयी स्टॉलों के अवलोकन के दौरान महिलाओं द्वारा बनाये गये उत्पादो की प्रशंसा एवं उनका उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि जो महिलाएं स्वयं सहायता समूह से नहीं जुड़ी हैं उन्हें स्वयं सहायता समूह से जोड़ा जाय उन्होंने कहा कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं द्वारा जनपद में उत्कृष्ट कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा की ऐसे आयोजनो से ग्रामीण महिलाओं का उत्साहवर्धन के साथ ही साथ उनकी आमदनी में भी बढ़ोत्तरी होती है सहायक महाप्रबंधक जिला विकास नाबार्ड अनिल शर्मा ने कहा कि महिलायें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही है। शरद मेले में स्वयं सहायता समूह की सदस्यों द्वारा स्वयं निर्मित उत्कृष्ट गुणवत्तापूर्ण सामग्री की स्टाल लगाई गई है इन्हें आगे भी विपणन एवं ट्रेडिंग हेतु अवसर उपलब्ध कराये जायेंगे उन्होंने सहायता समूह संचालक महिलाओं और किसानों के स्वावलम्बन पर जोर दिया उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजनों से ग्रामीण महिलाओं की उधमशीलता को बढ़ावा मिलेगा तथा किसान उत्पादक संगठन व स्वयं सहायता समूह के उत्थान के लिएं नाबार्ड हर संभव प्रयास करेगा स्टालों में मुख्य रूप से उत्पाद-हाथ से पीसा हुआ गेंहू, चना, बाजरा आटा, दलिया के साथ साथ आचार, मुरब्बा, गजक, चिक्की, सरसों का तेल, शहद, मिट्टी के खिलौने, हस्तशिल्प बैग, मोमबत्ती, अगरबत्ती, गन्ने एवं जामुन का सिरका, हवाई चप्पल एवं अन्य घरेलू सामान आदि शामिल हैं। शरद मेले का आयोजन सद्भावना सेवा एवं शिक्षा संस्थान की देखरेख में किया जा रहा है। सचिव सद्भावना सेवा एवं शिक्षा संस्थान, श्री वासमी नकवी ने कहा कि नाबार्ड के इस प्रयास से जिले के पिछड़े एवं विशेषकर महिलायें और किसानों को एक प्लैटफार्म मिला है जिससे कि ग्रामीण महिलाओं द्वारा निर्मित उत्पादों का जिले स्तर पर प्रचार विपणन एवं बाजार उपलब्ध हो पाया है इस अवसर पर जिला कृषि अधिकारी मनोज गौतम राष्ट्रीय आजीविका मिशन, जिला ग्रामोद्योग अधिकारी महेन्द्र मिश्रा जिला अग्रणी बैंक प्रबन्धक सहित जिले के वरिष्ठ अधिकारीगण एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

गैर जनपद की महिलाओं के सहारे हुआ कार्यक्रम का आयोजन

कौशांबी। महिलाओं के उत्थान के लिए नाबार्ड द्वारा संचालित महिला स्वयं सहायता समूह के कार्यक्रम में लगाए गए स्टाल में कौशांबी के लोगों के बजाय गैर जनपद की महिलाओं की अधिक भागीदारी रही है नावार्ड की योजनाएं कौशांबी में सफल नहीं है इनके द्वारा बनाए गए संस्थान केवल अभिलेखों से संचालित होते हैं विभाग का जिले में कहीं कार्यालय नहीं बना है आंकड़ेबाजी कर सरकारी खजाने से रकम निकाले जा रहे हैं जिससे जिले की महिलाओं का नाबार्ड योजना का लाभ नहीं मिल रहा है नाबार्ड योजना की धांधली की यदि शासन स्तर से उच्च स्तरीय जांच कराई गयीतो विभाग की कलई से पर्दा उठना तय है।

न्यूज झरोखा

कायाकल्प योजना : सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कड़ा का हुआ एक्सटर्नल एसेसमेंट

टेढ़ी मोड़ कौशांबी। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कड़ा का कायाकल्प अवार्ड योजना के अंतर्गत राज्य स्तर से गठित टीम मे डॉ आश मोहम्मद ,डॉ राजेश यादव ,डॉ एहतराम हुसैन के द्वारा एक्सटर्नल एसेसमेंट किया गया,कायाकल्प का चेक लिस्ट के माध्यम से हॉस्पिटल अपकीप ,सैनिटेशन हाइजीन ,वेस्ट मैनेजमेंट इनफेक्शन कंट्रोल एवं हाइजीन प्रमोशन एवं हॉस्पिटल बियांड बाउंड्री के एरिया में निरीक्षण किया गया योजना के अंतर्गत एक्सटर्नल असेसमेंट में 70% से अधिक स्कोर प्राप्त होता है तो चिकित्सालय को कायाकल्प अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। निरीक्षण के दौरान चिकित्सालय की साफ-सफाई स्टाफ इंटरव्यू एवं मरीजों को दी जाने वाली सुविधाओं की जानकारी ली गई अधीक्षक डॉ नीरज सिंह के द्वारा टीम को चिकित्सालय में मरीजों को दी जाने वाली सुविधाओं की जानकारी एवं राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत चल रहे समस्त कार्यक्रमों के बारे में पूर्ण जानकारी से अवगत कराया गया निरीक्षण के समय डॉ नीरज सिंह अधीक्षक कड़ा के द्वारा चिकित्सालय परिसर के बाहर से लेकर अंदर तक सभी जगहों का असेसमेंट किया गया और टीम सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के कायाकल्प से संतुष्ट दिखी एवं डॉ हसनैन जिला सलाहकार क्वालिटी एश्योरेंस डॉ वंदना सिंह डॉक्टर कुश शर्मा ,अविरल प्रभाकर सिंह ,फार्मासिस्ट शिव सिंह राजेंद्र सिंह वीरेंद्र सिंह, प्रदीप कुमार बीपीएम ,श्री सुशील कुमार काउंसलर, श्री पुष्पेंद्र सिंह युवराज सिंह, प्रशांत त्रिपाठी, गुरबीर सिंह ,नर्स रेनू यादव डा.सौम्या, सरोजनी देवी ,विमला देवी, वंदना मिश्रा रीता यादव, हरिश्चंद्र सूरज लालचंद राजेश अनिल उपस्थित स्टाफ नर्स एवं अन्य कर्मचारी मौजूद रहे

राज्य महिला आयोग ने की जनसुनवाई

कौशाम्बी। सदस्या उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग सुश्री ऊषा रानी ने आज पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस में महिला उत्पीड़न की घटनाओं की गहन समीक्षा/महिला जनसुनवाई कि जनसुनवाई में कुल 11 पीड़ित महिलाओं ने अपनी समस्याओं से सदस्या को अवगत कराया जिस पर उन्होंने सम्बन्धित अधिकारियों को शीघ्र कार्यवाही करने के निर्देश देते हुए कहा कि पीड़ित महिलाओं की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर निस्तारित किया जाय तथा जनकल्याणकारी योजनाओं से महिलाओं एवं बच्चों को लाभान्वित किया जाय सदस्या ने विगत जनसुनवाई में प्राप्त प्रार्थना पत्रों पर की गई कार्यवाही की भी समीक्षा की तत्पश्चात सदस्या द्वारा पीडिता के घर ग्राम ककोढ़ा जाकर जांच कर आवश्यक कार्यवाही किये हेतु सम्बन्धित अधिकारी को निर्देशित किया गया सदस्या ने जिला चिकित्सालय मंझनपुर वन स्टाप सेन्टर तथा जिला कारागार का निरीक्षण किया गया सदस्या ने निरीक्षण के दौरान जिला अस्पताल में साफ-सफाई ठीक ढंग से न पाये जाने पर नाराजगी प्रकट करते हुए मुख्य चिकित्सा अधीक्षक को बेहतर साफ-सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिये।

धन्नी में पाइप लाइन व नलकूप का चायल विधायक ने किया उद्घाटन

अखंड भारत संदेश

पानी टंकी का लोकार्पण करते विधायक चायल संजय गुप्ता

कौशाम्बी। विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता ने नगर पालिका परिषद भरवारी के सौहार्द नगर (धन्नी) में शुक्रवार को नलकूप एवं पाइप लाइन का फीता काटकर उद्घाटन किया है इस मौके पर चायल विधायक संजय कुमार गुप्ता ने कहा कि नए नलकूप के बनकर तैयार हो जाने और पाइप लाइन के कार्य के पूरा हो जाने से नगरवासियों को शुद्ध पेयजल की आपूर्ति नगर पालिका द्वारा की जाएगी उन्होंने कहा कि नगर पालिका क्षेत्र के निवासी लोगों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए योगी सरकार ने नलकूप और पाइप लाइन में 50 लाख की रकम की स्वीकृति दी थी और 50 लाख की लागत से बने नलकूप और पाइप लाइन का निर्माण किया गया है योगी सरकार में चायल विधायक संजय गुप्ता की पहल पर बनाया गया नलकूप एवं पाइप लाइन का फीता काट कर विधायक संजय गुप्ता ने लोकार्पण किया। इस दौरान आयोजित सभा में विधायक श्री गुप्ता ने कहा कि नगर पालिका परिषद के विकास कार्यों को ध्यान में रखते हुए यह नलकूप बनाया गया है जिससे आप सभी को पीने के लिए शुद्ध पानी आप सभी के घर तक पहुंच सके सैकड़ों की संख्या में उपस्थित स्थानीय लोगों ने संजय गुप्ता जिंदाबाद के नारे लगाए स्थानीय लोगों ने यहां तक कहा कि जब से आप चायल के विधायक बने हैं तब से आपने हम सभी की मान सम्मान की लड़ाई लड़ी है इसलिए हम आपको पुनः विधायक बनाएंगे । कार्यक्रम में मुख्य रूप से नगर पालिका परिषद अधिशासी अधिकारी गिरीश चंद्र लिपिक बबलू गौतम मंडल अध्यक्ष मूरतगंज मनोज साहू उमेश मोदनवाल संजीव चौधरी सहित स्थानीय लोग उपस्थित रहे।

चेकिंग के दौरान की गई कार्यवाही

कौशाम्बी। जनपद मे लाकडाउन के दृष्टिगत सरकार द्वारा निर्गत निदेर्शों के अनुपालन के क्रम में पुलिस अधीक्षक के निदेर्शानुसार जनपद स्तर पर विभिन्न थानों द्वारा अनावश्यक रूप से बाहर घूमने मास्क न लगाने एवं सोशल डिस्टेसिंग का पालन करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चैकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिनमें 137 वाहनों का ई चालान किया गया व 05 वाहनों का चालान कर 3500 रुपए सम्मन शूल्क वसूला गया साथ ही बिना मास्क लगाये घूमने एवं सरकार द्वारा जारी गाइड लाइन का उल्लघन करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करते हुये 02 व्यक्तियों से 450 रुपये जुमार्ना वसूला गया।

ट्रक ड्राइवर ट्रांसपोर्ट ने मिलकर व्यापारी के लाखों के अनाज को बेचा

मुकदमा दर्ज कराने को थाने दौड़ रहा है व्यापारी

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के मूरतगंज के व्यापारी राम बाबू केसरवानी की फर्म सार्थक ट्रेडिंग कंपनी से दो लाख रुपये कीमत का धान अनाज लेकर 23 नवंबर को ट्रक नंबर यूपी70 टी 3766 जीएस सोटेक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड हरदोई के लिए ट्रक चालक इरफान निकला था लेकिन ट्रक चालक हरदोई नहीं पहुंचा जानकारी करने पर मालूम हुआ कि ट्रक चालक और मालिक की नियत खराब हो गई और उसने व्यापारी के धान को चोरी से रास्ते मे बेच लिया है मामले में इलाहाबाद के ट्रांसपोर्ट न्यू भारत रोड लाइन मुंडेरा की भी भूमिका सवालों के घेरे में है कहीं ट्रांसपोर्टर और ट्रक मालिक की साठगांठ से सोची समझी साजिश के तहत मूरतगंज के व्यापारी को चपत तो नहीं लगाई गई है ट्रक चालक और ट्रांसपोर्ट की सांठगांठ से लाखों कीमत का धान बेच लिए जाने के बाद व्यापारी रामबाबू ने मूरतगंज पुलिस चौकी इंचार्ज से संपर्क कर मुकदमा दर्ज कराएं जाने और माल की बरामदगी कराए जाने की मांग की मूरतगंज पुलिस चौकी इंचार्ज इस मामले में रत्ती भर आगे नहीं बढ़ सके है।

कौशांबी प्रेसिडेंसी स्कूल में मनाया गया क्रिसमस

बच्चों के साथ अभिभावकों ने की जमकर मचाया धमाल

प्रेसीडेंसी स्कूल में क्रिसमस पर्व मनाते स्कूली बच्चे

क्रिसमस के मौके पर गुलजार हुआ कौशांबी प्रेसिडेंसी स्कूल, विजेता बच्चे हुए सम्मानित

अपने मम्मी-पापा से मेडल पाकर कौशांबी प्रेसिडेंसी स्कूल के विजेता बच्चों के खिले चेहरे

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। प्रेसिडेंसी स्कूल भीटी में क्रिसमस के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान केक काटा गया एवं बच्चों को उपहार देकर सम्मानित किया गया। बाल दिवस के मौके पर आयोजित हुई प्रतियोगिता के विजेता बच्चों को उनके अभिभावकों के हाथों से मेडल और ट्राफी प्रदान करवाई गई। कार्यक्रम के दौरान अभिभावकों का म्यूजिकल चेयर हुआ जिसमें भाग ले रहे सभी लोग बेहद खुश नजर आए। इस दौरान उनके बच्चे उनका हौसला बढ़ाते नजर आए। कीड्जी एवं केपीएस के संस्थापक मिस्टर देवबाबू बतौर मुख्य अथिति कार्यक्रम में मौजूद रहे। उन्होंने कार्यक्रम को बेहतर तरीके से आयोजित करने के लिए पूरे संस्थान की तारीफ की। प्रिंसिपल सीमा पवार ने उपस्थित अभिभावकों को नववर्ष की बधाई देते हुए कहा- आने वाला वर्ष सुखमय हो। इस दौरान स्कूल के सभी अध्यापक, अभिभावकगण एवं सभी बच्चे मौजूद रहें।

आवारा पशुओं से निजात दिलाने के लिए सीडीओ से गुहार

कौशाम्बी। सरसवा विकासखंड के विमल मिश्रा पुत्र देवमूर्ति मिश्रा निवासी ग्राम टिकरा मजरा देरहा ने पत्र के माध्यम से मुख्य विकास अधिकारी को अवगत कराया कि पेशे से वह किसान है और खेती किसानी करके अपना व अपने परिवार का भरण पोषण करता है प्रार्थी के ग्राम टिकरा में आवारा पशुओं का आँतक है गाँव में इस समय लगभग 40-50 अवारा गोवंश (छुट्टा मवेशी) घूम रहे है और दिन-रात छुट्टा गोवंश प्रार्थी और गाँव के अन्य किसानों की फसलों को चरते रहते हैं प्रार्थी व गाँव के अन्य किसान इस ठण्ड के महीने में गोदशों (छुट्टा मवेशी) को हाँकते हाँकते परेशान रहते है प्रार्थी और गाँव के अन्य किसान अपनी जान जोखिम में डालकर दिन-रात अपनी फसलों की रखवाली करते है कई बार इसकी शिकायत ग्रामीणों ने ग्राम प्रधान व सेक्रेटरी से की तो उन्होंने कहा कि चुनाव तक कुछ नहीं होगा और हमारे पास गो सरंक्षण हेतु बजट नहीं है जिससे हम ग्राम सभा ढेरहा में गो आश्रय केन्द्र बनवा सके। प्रार्थी ने इसकी शिकायत किया तो ग्राम पंचायत अधिकारी बिना कोई जॉच किये गलत आख्या (रिपोर्ट) प्रेषित कर दिया। आख्या में लिखा कि जो गोवंश घूम रहे वो गाँव के ही है, जो सरासर गलत है मजबूर होकर प्रार्थी श्रीमान जी को सूचना दे रहा है।

योग व खेल से बच्चों में मानसिक विकास होता है : संदीप सक्सेना

भवंस मेहता विद्याश्रम भरवारी में धूमधाम से मनाया गया वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

अखंड भारत संदेश

दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते निदेशक संदीप सक्सेना

भरवारी कौशाम्बी। भवंस मेहता विद्याश्रम भरवारी में वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता का आगाज निदेशक व प्रयागराज वा हाई कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता संदीप सक्सेना ने हरी झण्डी और दीप प्रज्वलित कर किया इस मौके पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए मेहता कॉलेज के निदेशक संदीप सक्सेना ने कहा कि योग खेल से बच्चों मे आपसी प्रेम एवं मानसिक विकास होता है इसलिए खेल प्रत्येक बच्चों के लिए आवश्यक है उन्होंने कहा कि विद्यालय में खेल के महत्व को बढ़ाने के लिए मेहता ट्रस्ट द्वारा संपूर्ण संसाधन उपलब्ध कराए गए हैं और खेल संसाधन में जो कमी होगी उसे पूर्ण किया जाएगा लेकिन बच्चों के मन में खेल की भावना जागृत की जाएगी और उनमें आपसी प्रेम और मानसिक विकास भरपूर बढ़ाया जाएगा।

मेहता कॉलेज के खेलकूद प्रतियोगिता में बालक वर्ग सीनियर 100 मी0में मो0 उमर अभिषेक एवं प्रांजल ने क्रमशःप्रथम दितीय तृतीय प्राप्त किया 800मी0 में अमन सिंह अंकुर यादव क्रमशः प्रथम दितीय रहे।गोला फेंक में सुधीर यादव अभिषेक यादव मो0 हसनेन क्रमशः प्रथम,दितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे। जूनियर बालक में-100 मी0 में शिवम केसवार्नी प्रियांशु सौरभ क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय और तृतीय रहे।एल0के0जी0 टाफी दौड़ में-आर्यन पटेल,कृष्णा पटेल प्रथम एवं द्वितीय रहे। बालिका वर्ग 100 मी0 में अदिती गुप्ता प्रथम,छवि दितीय एवं तृतीय रही।लम्बी कूद में-छवि प्रथम एवं द्वितीय निवेदीता,एवम सचिता तृतीय रही।जूनियर बालिका 100मी0 स्मृति प्रथम एन्जिलिना आर सिंह दितीय वैष्णवी तृतीय रही।निदेशक संदीप सक्सेना एवं प्रधानाचार्य संजय श्रीवास्तव ने पुरष्कार वितरित कर खेल में शामिल बच्चों का हौसला बढ़ाया है एवं सुधाकर सिंह ने धन्यवाद दिया संचालन राम सनेही श्रीवास्तव, राकेश सिंह, सीता यादव ने किया। निर्णायक अनिल मिस्त्र, अवधेश मिश्रा, सुशील श्रीवास्तव, शिबम, सचिन, नागेन्द्र, विवेक, रश्मी पाठक, रजनी, पूनम सिंह, साहिबा, दीपाली सिंह, खुशबू गुप्ता आदि सभी ने प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका अदा की।

शिक्षक शिक्षिकाओं ने मेहनत लगन से बच्चो के अंदर निष्ठा लगन एवं ज्ञान का किया संचार : फादर

बेरूवा स्थित सेंट फ्रांसिस सीनियर सेकेंडरी स्कूल में बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया क्रिसमस पर्व

भरवारी कौशांबी। चायल तहसील के बेरूवा स्थित सेंट फ्रांसिस सीनियर सेकेंडरी स्कूल में बड़े ही धूमधाम के साथ क्रिसमस पर्व मनाया गया है परमेश्वर यीशु के जन्म दिवस के उपलक्ष में मनाए जाने वाले इस पर्व को बच्चों ने बड़े ही उत्साह व हर्षोल्लास के साथ मनाया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद फादर विलियम माथियास प्रधानाचार्य बिशप हेरमैन अकादमी फाफामऊ प्रयागराज ने कहा कि बच्चों के उत्साह को देखकर यह महसूस हो रहा है कि इन बच्चों के शिक्षक शिक्षिकाओं ने बड़ी ही मेहनत और लगन के साथ इनके अंदर निष्ठा, लगन एवं ज्ञान का जो संचार किया है उससे परमेश्वर यीशु के जन्मदिन के आयोजन की सार्थकता स्वतः सिद्ध हो रही है। उक्त अवसर पर आकृति खरे एवं आस्था के द्वारा क्लासिकल नृत्य, प्री प्राइमरी के बच्चों द्वारा बेबी शो अलीजा निहारिका, मानसी, संध्या, पुष्पराज, प्रिया, माही, तन्नसुम, दीपांजलि, नंदिनी एंड ग्रुप द्वारा मनमोहक नृत्य, क्लास 10वँ बॉयज द्वारा परमेश्वर के द्वारा निर्देशित कार्य एवं शैतानी ताकतों द्वारा समाज में किए जाने वाले कार्यों को लघु नाटिका द्वारा उपस्थित जनसमूह को बखूबी समझाया। वहीं क्लास फर्स्ट से इलेवेंथ तक के बच्चों द्वारा प्रभु यीशु के जन्म, धरती पर अवतरित होने के उद्देश्य एवं मानव समाज के हितार्थ किये जाने वाले कार्यों को स्किट के माध्यम से दिखाया। कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि द्वारा विभिन्न अभिरुचियों के अंतर्गत प्रथम स्थान प्राप्त क्लास सेकंड, थर्ड, सिक्स, एट , इलेवंथ आर्ट्स एवं द्वितीय स्थान के अंतर्गत क्लास फर्स्ट, फोर्थ, सेवंथ एवं नाइंथ के बच्चों को प्रमाण पत्र के माध्यम से सम्मानित किया गया। उक्त कार्यक्रम का सफल संचालन तनुश्री वर्मा क्लास 11वँ एवं अमन सिंह क्लास इलेवेंथ के द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में प्रधानाचार्य जेराल्ड पी डिसूजा सहित समस्त शिक्षक एवं शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज होने के बाद नहीं हटाए गए आरोपी उपनिरीक्षक

आखिर कब मिलेगा अनुयूचित जाति की महिला को न्याय

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र में एक आरोपी को पकड़ने के बहाने महिला से मारपीट के मामले में अदालत के आदेश पर गम्भीर धाराओं में मुकदमा दर्ज होने के बाद भी आरोपी उप निरीक्षक और पुलिस जनों को अभी तक निलंबित नहीं किया गया है अदालत के आदेश पर मुकदमा दर्ज होने के बाद आरोपियों ने रौद्र रूप धारण कर लिया है और पीड़ित परिजनों पर बलपूर्वक दबाव बना कर समझौते का दबाव बना रहे है योगीराज में इस कदर पुलिस निरंकुश हो जाएगी इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता था महिला के साथ अत्याचार जुल्म ज्यादती करने वाली अत्याचारी पुलिस की शिकायत के बाद भी आला अधिकारियों ने दोषी उपनिरीक्षक और पुलिस जनों पर मुकदमा नहीं दर्ज किया था एक वर्ष तक महिला न्याय के लिए भटकती रही और अदालत के निर्देश पर मुकदमा दर्ज होने के बाद भी आरोपियों को निलंबित नहीं किया गया है कैसे आम जनमानस को अत्याचारी पुलिस के जुल्म ज्यादती से न्याय मिलेगा यह योगी सरकार की व्यवस्था पर बड़ा सवाल खड़ा हो रहा है। थाना चरवा के अंतर्गत एक गांव की अनुसूचित जाति की महिला रेखा कुमारी छछइ की पढ़ाई कर रही है 13.12.2020 को समय करीब 01:00 बजे दिन थाना चरवा की पुलिस उप निरीक्षक बिजेन्द्र सिंह, देवेन्द्र प्रताप भारद्वाज, उप निरीक्षक आदित्य कुमार, सिपाही नरेन्द्र सिंह ने पीड़ित रेखा पर बेरहमी से हमला कर दिया उससे मारपीट कर लहूलुहान कर दिया उसके घर में लूटपाट भी की उपरोक्त मामले में न्यायालय के आदेश पर थाना चरवा मे अ०सं० 258/ 2021 धारा 308, 394, 323, 504, 506 ता०ही० व 3 (2) (5) 3 (1) या रउ/रळ एक्ट के अंतर्गत अभियोग पंजीकृत हुआ है अभियोग पंजीकृत होने के पश्चात अब अत्याचारी पुलिस ने रौद्र रूप धारण कर लिया है और मुकदमे के वादी पर जायज नाजायज दबाव बना रही है पीड़िता का आरोप है कि बदमाश पीछा कर रहे है पुलिस वाले धमकी दिलवा रहें है सुलह हो जाओ नही तो तुझे मरवा देगे या मुकदमे मे फाइनल रिपोर्ट लगवा देंगे पीड़ित रेखा का यह भी कहना है कि अगर न्याय नहीं मिला तो परिवार समेत जान दे देंगे।

विधायक के पत्र पर 3 सदस्यीय टीम करेगी पत्रकार के कारनामों की जांच

अखंड भारत संदेश

विधायक ने कहा कि जो जनमत से नहीं हटा पा रहे हैं वह रास्ते से हटाने के लिए रच रहे हैं साजिश

कौशांबी। चायल विधायक संजय गुप्ता के पत्र पर पुलिस अधीक्षक ने क्षेत्राधिकारी सिराथू के नेतृत्व में 3 सदस्यीय टीम का गठन किया है विधायक द्वारा लगाए गए आरोपों की जांच क्षेत्राधिकारी सिराथू के नेतृत्व में गठित 3 सदस्यीय टीम करेगी टीम गठित करते हुए पुलिस अधीक्षक ने 5 दिन के भीतर जांच आख्या प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है।

चायल विधायक संजय गुप्ता के पत्र पर टीम गठित करते हुए पुलिस अधीक्षक ने लिखा है कि विधायक ने उन्हें पत्र के माध्यम से अवगत कराया है कि विधानसभा चुनाव नजदीक आते ही कुछ साजिशें ऐसी रची जा रही हैं जो मर्यादा के विपरीत हैं एसपी ने पत्र के माध्यम से बताया कि चायल विधायक ने अपने पत्र के माध्यम से उन्हें अवगत कराया है कि अमर नाथ झा पत्रकार द्वारा अपने सोशल मीडिया पर पहले टिकट को लेकर अफवाह फैलाई जा रही थी फिर सरकारी जमीनों में अवैध कब्जा धारक बताते हुए भू माफिया बताने का प्रयास किया गया है जिस पर कोखराज थाने में 3 दिसंबर को मुकदमा दर्ज कराया गया है 12 दिसंबर को जान से मारने की नियत से विधायक के वाहन पर हमले का प्रयास किया गया है जिसका मुकदमा पूरामुफ़्ती थाने में दर्ज है राजनीतिक शत्रु जो जनमत से चायल विधायक संजय गुप्ता को पीछे नहीं कर पा रहे हैं रास्ते से हटाने की साजिश रची जा रही है विधायक का कहना है कि साजिश में विफल होने वाले लोगों ने अमरनाथ झा के माध्यम से आरोप लगाकर समाज में छवि खराब करने का प्रयास कर रहे है विधायक के पत्र पर पुलिस अधीक्षक ने क्षेत्राधिकारी के नेतृत्व में 3 सदस्य टीम का गठन कर 5 दिन के अंदर जांच आख्या प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर पत्रकार की जांच शुरू हो गई है पत्रकार के मोबाइल नंबर से कॉल डिटेल खंगाली जा रही है।

पत्रकार के जरिए मोबाइल से किसको किसको व्हाट्सएप में मैसेज भेजे गए हैं इसकी भी जांच टीम द्वारा की जाएगी पत्रकार के पास कुछ समय में कहां से लग्जरी कार आई इसकी भी जांच टीम द्वारा की जाएगी।

सम्पादकीय

अयोध्या में राम नाम की लूट

उत्तरप्रदेश के चुनावों में अयोध्या में बन रहे राम मंदिर को लेकर भाजपा अपनी दावेदारी मजबूत करने में लगी थी। लेकिन मंदिर के नाम पर जमीन घोटाले के आरोप में भाजपा फंस गई है। गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट ने जब रामजन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद में फैसला दिया और मंदिर विवाद का रास्ता साफ हुआ तो उस के बाद खबर आई कि विधायकों, मेयर, आयुक्त, एसडीएम और डीआईजी के रिश्तेदारों ने अयोध्या में जमीनें खरीदी हैं। एक राष्ट्रीय अखबार की रिपोर्ट में बताया गया है कि ये जमीन महंगे दामों में ली गई हैं। वहीं महर्षि रामायण विद्यापीठ ट्रस्ट ने 1990 के दशक की शुरूआत में, राम मंदिर स्थल से 5 किलोमीटर से भी कम दूर बरहटा मांझा गांव और अयोध्या में आसपास के कुछ अन्य गांवों में बड़े पैमाने पर जमीन का अधिग्रहण किया था, इस जमीन में से लगभग 21 बीघा जमीन कथित तौर पर दलितों से नियमों का उल्लंघन करते हुए खरीदी गई थी। इस खबर के सामने आने के बाद योगी सरकार ने अपर मुख्य सचिव राजस्व मनोज कुमार सिंह के नेतृत्व में जांच बैठाई है। विशेष सचिव राजस्व जमीन खरीद मामले को लेकर जांच करेंगे और शासन को 1 हफ्ते में रिपोर्ट सौंप देंगे। लेकिन अब यह मामला धार्मिक और कानूनी सरहदों से आगे बढ़ता हुआ राजनैतिक हो गया है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने इस मसले को एक बार फिर हिंदू और हिंदुत्व की अपनी व्याख्या जोड़ा है। राहुल गांधी ने ट्वीट किया- हिंदू सत्य के रास्ते पर चलता है, हिंदुत्ववादी धर्म की आड़ में लूटता है। वहीं कांग्रेस पार्टी के महासचिव और मुख्य प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 'चंदे की लूट' और 'जमीन की लूट' पर जवाब देना चाहिए और पूरे प्रकरण की जांच करानी चाहिए। जबकि उप्र में कांग्रेस का जिम्मा संभाल रही प्रियंका गांधी ने इस मामले में एक प्रेस वार्ता में कहा कि पहले राम मंदिर के चंदे में घोटाला किया गया और अब दलितों की जमीन को हड़पा जा रहा है। उन्होंने कहा कि जिला अधिकारी स्तर पर जांच हो रही है। जांच भी उच्च न्यायालय की निगरानी में की जानी चाहिए, क्योंकि राम मंदिर को बनवाने का आदेश सुप्रीम कोर्ट ने दिया था। देश भर में चंदा मांगा गया और सभी की भावनाएं हैं और वे उन भावनाओं को आहत कर रहे हैं।

प्रियंका गांधी के ये इल्जाम भले ही चुनावी गणित के हिसाब से लगाए गए हैं, लेकिन इतना तो तय है कि राम के नाम पर लूट का खेल बीजेपी खेल रही है और यह अकेले अयोध्या तक ही सीमित नहीं है, इसका दायरा काशी तक फैल ही चुका है और शायद मथुरा तक भी यह बढ़ जाए। वैसे भी भाजपा सांसद हेमा मालिनी ने पिछले दिनों बयान दिया है कि मथुरा भगवान कृष्ण की जन्मभूमि है और अब वहां उनका भव्य मंदिर बनना चाहिए। उनके पहले उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य भी कृष्ण मंदिर की वकालत कर चुके हैं और मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी बार-बार मथुरा के चक्कर काट रहे हैं। इधर काशी में पिछले दिनों काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का उद्घाटन प्रधानमंत्री कर ही चुके हैं। जिसमें भगवान की पूजा अर्चना के साथ-साथ पूजन सामग्री के व्यापार औ? श्रद्धालुओं की सुख सुविधा के लिए बड़े इंतजाम किए गए हैं। हालांकि इस भव्यता की कीमत जनता की जेब से चुकाई जा रही है। बाबा विश्वनाथ के दर्शन-पूजन के लिए पहले मामूली रकम लगती थी, लेकिन अब इसकी भी बाकायदा रेटलिस्ट जारी हो गई है। जिसका भुगतान कम से कम गरीब के लिए संभव नहीं है। जब अयोध्या में राम मंदिर बन कर तैयार हो जाएगा, तब भी रामलला तक पहुंचने के मौके और हक शायद अमीरों को ही मिलेंगे, क्योंकि गरीब आदमी के लिए जेब ढीली कर भगवान का दर्शन भी विलासिता की तरह ही होगा। अब वो दिन शायद चले गए जब भगवान दीनवत्सल हुआ करते थे। अब भगवान के नाम पर व्यापार इस कदर बढ़ गया है कि दीन-दुखियों की जगह केवल अमीरों की पहुंच भगवान तक हो गई है। मंदिरों में दर्शन, पूजा और प्रसाद के नाम पर व्यापार तो शुरू हो ही गया है, मंदिरों के नाम पर बने न्यासों में जो लाखों-करोड़ों की कमाई होती है, उस पर भी व्यापारियों की नजर टिकी रहती है। कई मंदिर ट्रस्ट अपने खर्च पर गरीबों की पढ़ाई, इलाज जैसे काम करते हैं। मगर जिस तरह धर्म को धंधा बना लिया गया है, उसमें परोपकार के ये काम कितने देर तक चलेंगे, कहना कठिन है। अयोध्या में जिस तरह जमीन खरीद-फरोख्त में गड़बड़ी का मामला उजागर हुआ है, उसे भविष्य में होने वाली गड़बड़ियों का एक संकेत समझना चाहिए। मगर ऐसा लगता नहीं कि भाजपा इस संकेत को देखना या समझना चाहती है। क्योंकि इससे उसकी हिंदुत्व की राजनीति मुश्किल में पड़ जाएगी।

मुझे कार्यकर्ता पद से कोई हटा नहीं सकता

प्रभात झा

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जयंती पर विशेष

आगरा स्थित बटेश्वर निवासी सामान्य शिक्षक श्री कृष्ण बिहारी वाजपेयी के ग्वालियर स्थित घर अटलजी पैदा हुए। उनकी कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं थी। भारत में उन्होंने अपनी वाणी से लोगों के दिल में अपना स्थान बनाया। केरल से कश्मीर और अटक से कटक तक उन्होंने अपनी वाणी के प्रभाव से करोड़ों लोगों को जोड़ा। अथक साधना से निर्मित अटलजी का जो व्यक्तित्व हमारे सामने है, उनके कौन से रूप का वर्णन हो, कौन-सा अछूता छोड़ दिया जाए, यह निर्णय कठिन है। समग्र समेटना तो संभव नहीं, फिर भी उनका स्मरण आते ही उनकी सौम्य छवि आंखों में तैर जाती है। ग्वालियर की गलियों से निकलकर प्रधानमंत्री बनने की इस यात्रा में अनेक पड़ावों से गुजरते हुए अटलजी ने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व को अहर्निश साधना के साथ जिन ऊंचाइयों तक पहुंचाया, उन्हें शब्दों में बांधना कठिन है। उनका व्यक्तित्व उस सरिता की तरह रहा जो निर्बाध गति से निश्छल बहती रहती है, हर पथिक की प्यास बुझाती है, किन्तु अपने अंदर बहुत कुछ समेटे रहती है। वे उदारता के प्रतीक थे। वे सदैव सिद्धांत पर अडिग रहे। उन्होंने भले ही प्रधानमंत्री बनने का सपना न सोचा हो, पर देश सदैव उनके बारे में सोचता रहा कि आज नहीं तो कल, अटलजी प्रधानमंत्री बनेंगे। मध्य प्रदेश के दतिया निवासी विभाग संघचालक स्वर्गीय राजेंद्र तिवारी ने 'हमारे अटलजी' नामक पुस्तक में संस्मरण लिखते हुए बताया कि भारतीय जनसंघ के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्री गुरुजी गोलवलकर ने कहा था, ₹मैं आपको संघ के पांच पांडव दे रहा हूं। ये भारत के कर्णधार एवं सजग प्रहरी होंगे।₹ श्रीगुरुजी ने पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी को युधिष्ठिर, अटलजी को अर्जुन, जगन्नाथ राव जोशीजी को भीम, यज्ञ दत्त शर्माजी को नकुल और वसंत राव ओकजी को सहदेव कहा करते थे। उनके ये संबोधन अटलजी के लिए अर्जुन के रूप में सत्य ही चरितार्थ हुआ। अपने सम्पूर्ण जीवन को राष्ट्र की सेवा में प्रतिक्षण समर्पित करने वाले भारत माता के सपूत अटलजी पर सम्पूर्ण राष्ट्र गौरवान्वित रहा। उनका अपने सम्पूर्ण जीवन में व्यक्तिगत कुछ भी नहीं रहा, राष्ट्र की सेवा और संघ का सिद्धांत ₹तन समर्पित मन समर्पित और ये जीवन समर्पित₹ के जीवंत मूर्तिस्वरूप अटलजी भारत के प्रत्येक वर्ग में और मुख्यतः युवा हृदयों के सम्राट के रूप में पहचाने गए। राष्ट्रवाद, अनुशासन, निष्ठापूर्वक ध्येय पूर्ति के लिए सतत प्रयास, ऐसे अनेक गुण जो एक स्वयंसेवक के रूप में उन्हें प्राप्त हुआ, उनके महान और सर्वस्वीकार्य छवि को गढ़ने का काम किया।

अटलजी पाञ्चजन्य, स्वदेश एवं वीर अर्जुन के संपादक रहे। भारतीय जनसंघ के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जब बिना परमिट के जम्मू-कश्मीर जाने की घोषणा की, अटलजी उनके साथ बतौर वैचारिक पत्रकार के रूप में गए। डॉ. मुखर्जी को जम्मू-कश्मीर के प्रवेश द्वार लखनपुर में जब पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया तो उन्होंने अटलजी से कहा, ₹वाजपेयी गो बैक एंड टेल द पीपल ऑफ इंडिया, डॉ. मुखर्जी हैज इंटरड जम्मू एंड कश्मीर विदाउट परमिट।₹ डॉ. मुखर्जी की ये बात सुन अटलजी वहां से लौटे। इसी बीच डॉ. मुखर्जी की वहां रहस्यमय परिस्थिति में मृत्यु हो गई। अटलजी ने वहीं मन में ठाना कि डॉ. मुखर्जी के अधूरे सपनों को पूरा करना है। इसके बाद ही वे भारतीय जनसंघ के कार्य में पूर्णतः जुट गए। अटलजी थे तो जनसंघ और आगे भाजपा के, परंतु उन्हें सभी दलों के लोग अपना मानते थे। उनकी ग्राह्यता और स्वीकार्यता तो इसी से पता लग जाती है कि अटलजी को भारत के पूर्व प्रधानमंत्री कांग्रेस नेता पी.वी. नरसिंहराव ने सन् 1994 में प्रतिपक्ष का नेता रहते हुए जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग में भारत के प्रतिनिधिमंडल के नेता के रूप में भेजा था। जबकि ऐसी बैठकों में भारत का प्रधानमंत्री या अन्य ज्येष्ठ मंत्री ही नेता के रूप में जाते हैं, इस घटना से सारा विश्व चकित था। नरसिंहराव ने अपने एक भाषण में कहा था कि, ₹अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर अटलजी की जानकारी और विदेश मंत्री के तौर पर उनके अनुभव के कारण आज विश्व में वह अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के शीर्ष विशेषज्ञों में से एक हैं।₹ भारत के राजनैतिक विश्लेषकों का मानना था कि अटलजी अगर दस वर्ष पूर्व भारत के प्रधानमंत्री बन गए होते तो भारत का भविष्य कुछ और होता। आजादी के दूसरे दिन जो प्राथमिकताएं तय होनी थीं, वह अटलजी के प्रधानमंत्री बनने तक तय नहीं हुई थीं।सत्ता-लोलुपता के ऊहापोह के बीच निर्विकार भाव से जनसेवा के लिए प्रस्तुत रहने का सामर्थ्य हर किसी में हो ही नहीं सकता। दलगत राजनीति के जंगलराज में अपने आप को निष्पक्ष रख पाना अत्यंत दुष्कर कार्य है। अटलजी विदेश मंत्री रूप में, नेता प्रतिपक्ष के रूप में और प्रधानमंत्री की महत्वपूर्ण भूमिका के दायित्व का निर्वाह करते हुए इन मर्यादाओं का पालन किया। लोकतंत्र में विपक्ष की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। प्रतिपक्ष में रहते हुए अटलजी रचनात्मक आलोचना के हिमायती थे। रचनात्मक दृष्टिकोण तभी संभव है जब गहन अध्ययन, सभ्यता, बाह्य और संस्कृति के अंतरंग स्वरूप से सुपरिचय, जीवन मूल्यों के प्रति लगाव और मनुष्य-मनुष्य के बीच रागात्मक संबंधों की स्थापना का लगन हो। अटलजी को प्रधानमंत्री बनने की यात्रा में सफलता की पुष्पमालाएं ही नहीं मिलती रहीं, ऐसे क्षण भी आए जब एक तरफ जनसंघ के संस्थापक डॉ. मुखर्जी की 1953 में संदिग्ध मौत हो गई वहीं पंडित दीनदयालजी की दारुण और रहस्यमय हत्या हो गई। इसके बाद दल को घोर निराशा और वेदना के भंवर से उबारने वाले नाविक की भूमिका इन्हें निभानी पड़ी। चुनावों को सफलता का एकमात्र मापदंड मानने वालों की दृष्टि में संसद में केवल दो स्थान, जो डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में लड़े गए पहले चुनाव में पाई गई तीन सीटों से भी कम थी, तब आस्था और विश्वास का संबल बनना पड़ा, ऐसे क्षण भी आए। अटलजी इसके बाद भी टूटे नहीं। इसके बाद भी देशभर में प्रवास की अखंड धारा चली। संसद से सड़क तक संघर्ष जारी रखा। सन 1984 में अटलजी ग्वालियर से चुनाव लड़ रहे थे। वे उस चुनाव में पराजित हो गए। इसके बाद वे रक्षाबंधन के पर्व पर अपनी छोटी बहन से राखी बंधवाने ग्वालियर आए, उस समय पत्रकार के नाते इस पंक्ति का लेखक वहां उपस्थित था। हम सभी पत्रकार उनके पास पहुंचे। एक वरिष्ठ पत्रकार ने अटलजी से कहा, ₹आपके भाषण सुनकर जनता के मन में अपार श्रद्धा उत्पन्न होती है।₹ अटलजी ने त्वरित जवाब देते हुए कहा, ₹भाषण में श्रद्धा और वोट में श्राद्ध।₹ यह सुनकर सभी पत्रकारों ने राजनीति की गहराई समझा। अटलजी मनोविनोद में बहुत गहरी बातें कह जाते थे। उन्होंने अपनी वाणी की शैली से अपनी अलग पहचान बनाई। वे भारत के ऐसे राजनेता थे जिनकी सभा का संदेश सुनकर लाखों लोग सहज उन्हें सुनने आ जाते थे।

अटलजी प्रधानमंत्री बनें, यह सिर्फ भाजपा की नहीं बल्कि पूरे भारत की इच्छा थी। वर्षों तक विपक्ष के नेता रहते हुए भारत का अनेक बार भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान अपनी वाणी से प्रत्येक भारतीयों को जहां जोड़ा और भारत को समझा, वहीं सदन के भीतर सत्ता में बैठे लोगों पर मां भारती के प्रहरी बनकर सदैव उनकी गलतियों को देश के सामने रखते रहे। भारतीय राजनीति में विपक्ष में रहते हुए जितने लोकप्रिय और सर्वप्रिय अटलजी रहे, प्रधानमंत्री रहते हुए भी पंडित जवाहरलाल नेहरू उतने लोकप्रिय नहीं हुए। अटलजी के आचरण और वचन में लयबद्धता और एकरूपता थी। वे जब तक सदन में विपक्ष या सत्ता में रहे तब तक सदन के राजनैतिक हीरो अटलजी ही रहे। इस बात को हम नहीं बल्कि तत्कालीन अनेक वरिष्ठ नेतागण स्वयं कहते थे। सन् 1996 में पहली बार 13 दिन के लिए प्रधानमंत्री बनने, बाद में सन् 1999 में मात्र एक वोट से सरकार गिर जाने जैसी दुखद स्थिति में भी न वे स्वयं विचलित हुए, न पार्टी के सदस्यों को हार के कारण दुखी और हतप्रभ होने दिया। यह सब तभी संभव है जब व्यक्ति में आत्मबल हो और अपने आप पर पूर्ण विश्वास हो। अटलजी ने कहा भी, ह्लखरीद-फरोख्त और ऐसी कोई भी जोड़-तोड़ की सरकार बनती है तो उसे चिमटे से भी छूना पसंद नहीं करूंगा।ह्व इसके लिए विरोधी नेताओं ने भी सदन में उनकी प्रशंसा की। प्रत्येक भारतीय ने भी अटलजी के दर्द को महसूस किया। देश के लोगों के आशीर्वाद से सन् 1999 के चुनाव में फिर प्रधानमंत्री बने।

यही था अटलजी का अटल और विराट व्यक्तित्व। अटलजी अक्सर कहा करते थे, ₹दोस्त बदल सकते हैं, पड़ोसी नहीं।₹ यही कारण था वे भारत से बस लेकर लाहौर गए लेकिन जब पाकिस्तान ने आंख दिखाई तो कारगिल के युद्ध में उसे बुरी तरह पराजित भी किया। वे छोटे राज्यों के हिमायती थे। उन्होंने बड़ी सरलता से छत्तीसगढ़, झारखंड एवं उत्तराखंड का गठन अपने कार्यकाल में कर दिया। भारत के गांवों को सड़क से जोड़ने का ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए उसे फलीभूत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए पोखरण में परमाणु परीक्षण कर विश्व को संदेश दिया कि हम किसी से कमजोर नहीं। अटलजी सिद्धांतवादी, विचार एवं व्यवहार से सरल और जमीन से जुड़े महान नेता थे। उन्होंने विपक्ष में रहते हुए भी देश के हर दल के राजनेताओं और कार्यकताओं के मन में अपना विशिष्ट स्थान बनाया था। वह विपक्षी नेताओं का भी दिल जीत लेते थे। उनका मानना था कि भाजपा कार्यकताओं की पार्टी है। जो नेता है, वह भी कार्यकर्ता है। उनका कहना था कि जो आज विधायक हैं, वह कल शायद विधायक नहीं रहें। सांसद भी सदैव नहीं रहेंगे। कुछ लोगों को पार्टी बदल देती है, कुछ को लोग बदल देते हैं, लेकिन कार्यकर्ता का पद ऐसा है, जो बदला नहीं जा सकता। कार्यकर्ता होने का हमारा अधिकार छीना नहीं जा सकता। आज अटलजी हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन जनसंघ के घोषणा-पत्र में लगातार जो बातें आती रहीं, उन सभी को आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी साकार कर रहे हैं। अटलजी को भारत रत्न से विभूषित कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी ने केवल अटलजी का ही नहीं, भारत के करोड़ों लोग जो अटलजी के प्रशंसक थे, उनका सम्मान किया। अटलजी कहा करते थे, ₹सरकार गरीबों के लिए, सरकार समाज के लिए, सरकार राष्ट्र के लिए और सरकार एक-एक भारतीय के लिए होनी चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी की सरकार आज अपनी योजनाओं से देश के गरीबों तक पहुंच रही है। ₹सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास₹ अटलजी के दिखाए गए मार्ग का प्रकटीकरण ही तो है।

केंद्रीय गृह राज्यमंत्री अजय मिश्र को हटाने की मौजूद हैं कई वजहें

अनिल जैन

एसआईटी के ऊपर दबाव था क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने जांच में देरी पर कई बार उसे फटकार लगाई थी। इसके बावजूद जांच रिपोर्ट में राजनीति देखी जा रही है। केंद्रीय राज्य मंत्री और मुख्यमंत्री के टकराव वाले रिश्ते को भी इससे जोड़ा जा रहा है। एक तरफ ब्राह्मण वोट की चिंता है तो दूसरी ओर निजी मसले हैं। लेकिन ऐसा लग रहा है कि राज्य की सत्ता ने पुराना हिसाब चुकता कर लिया है अब देखना है कि केंद्र की सत्ता कैसे अजय मिश्र को कैसे और कब तक बचाती है? लखीमपुर खीरी कांड में उत्तर प्रदेश सरकार के विशेष जांच दल (एसआईटी) की रिपोर्ट के आधार पर विपक्षी पार्टियां केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्र उर्फ टेनी को बर्खास्त करने की मांग रही है लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी न तो उनसे इस्तीफा मांग रहे हैं और न ही उन्हें बर्खास्त कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी अजय मिश्र का बचाव इस आधार पर कर रही है कि बेटे के अपराध के लिए पिता को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। गौरतलब है कि लखीमपुर में चार किसानों और एक पत्रकार को गाड़ी से कुचल कर मारने के मामले में अजय मिश्र का बेटा आशीष मिश्र मुख्य आरोपी है और गिरफ्तार है। एसआईटी ने अपनी प्रारंभिक रिपोर्ट में इस घटना को एक सोची-समझी साजिश का परिणाम बताया है। भाजपा और केंद्र सरकार मामले को इस तरह पेश कर रहे है, जैसे आशीष मिश्र के अपराध के लिए अजय मिश्र का इस्तीफा मांगा जा रहा है। लेकिन ऐसा नहीं है।

अजय मिश्र के बेटे किसानों को कुचल कर बाद में मारा है, उससे पहले अजय मिश्र ने किसानों को, जो उनके खिलाफ काले झंडे दिखाते हुए प्रदर्शन कर रहे थे, सार्वजनिक मंच से सबक सिखा देने की चेतावनी दी थी। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्र ने 25 सितंबर को एक सार्वजनिक कार्यक्रम में अपने बारे में गर्व से बताते हुए कहा था- 'सिर्फ मंत्री या सांसद, विधायक भर नहीं हूं। जो लोग मेरे विधायक और सांसद बनने से पहले मेरे बारे में जानते होंगे, उनको यह भी मालूम होगा कि मैं किसी चुनौती से भागता नहीं हूं। जय मिश्र ने अपने भाषण में आंदोलन कर रहे किसानों को चेतावनी देते हुए कहा था- 'जिस दिन मैंने उस चुनौती को स्वीकार कर लिया उस दिन पलिया नहीं, लखीमपुर खीरी तक छोड़ना पड़ जाएगा, यह याद रहे।' इस भाषण के वायरल हुए वीडियो में वे यह भी कहते सुनाई दे रहे हैं कि सामना करो आकर, 'हम आपको सुधार देंगे, दो मिनट लगेंगे गौरतलब है कि केंद्रीय मंत्री अजय मिश्र के ऊपर हत्या सहित कई दूसरे आपराधिक मुकदमे पहले से ही चल रहे हैं। उन्होंने किसानों को उन मुकदमों की याद दिलाई थी और सबक सिखा देने की चेतावनी दी थी। दरअसल अजय मिश्र का जैसा अतीत है, उसे देखते हुए उनको मंत्री बनाना ही नहीं चाहिए था, लेकिन वे भाजपा उम्मीदवार के तौर पर न सिर्फ सांसद चुने गए बल्कि प्रधानमंत्री मोदी ने उनको अपनी सरकार में मंत्री भी बना दिया। ठीक है, अगर मंत्री बना भी दिया तो इस भाषण के बाद ही उन पर कार्रवाई होनी चाहिए थी, जो कि नहीं हुई और उनके भाषण के ठीक एक हफ्ते बाद तीन अक्टूबर को उनके नाम से रजिस्टर्ड गाड़ी से किसानों को कुचल कर मार दिया गया। गाड़ी में अजय मिश्र का बेटा मौजूद था। जब राज्य सरकार की एसआईटी ने अपनी अंतरिम रिपोर्ट में कहा है कि किसानों को कुचल कर मार डालने की घटना एक सोची-समझी साजिश के तहत हुई है तो यह क्यों नहीं माना जाए कि इस साजिश में मंत्री भी शामिल हो सकते हैं?

अजय मिश्र का मंत्रिपरिषद से इस्तीफा इसलिए भी होना चाहिए कि एसआईटी ने अभी अपनी अंतिम जांच रिपोर्ट दाखिल नहीं की है, क्योंकि जांच अभी भी जारी है, जिसे प्रभावित किया जा सकता है। अजय मिश्र केंद्र सरकार के गृह राज्य मंत्री है, जो अपनी आधिकारिक हैसियत से जांच को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। उनका इस्तीफा इसलिए भी होना चाहिए कि उन्होंने अपने बेटे के कथित अपराध की एसआईटी जांच के बारे में सवाल पूछने पर एक पत्रकार को पीट दिया और मोबाइल फोन छीन लिया। सो, यह सिर्फ नैतिकता का मामला नहीं है, जिसके आधार पर मंत्री का इस्तीफा मांगा जा रहा है, बल्कि धमकी देने, मंत्री के तौर पर गलत आचरण करने और एक साजिश में शामिल होने की संभावना के कारण इस्तीफा मांगा जा रहा है। अजय मिश्र से इस्तीफा मांगे जाने या उन्हें मंत्रिपरिषद से बर्खास्त किए जाने के पर्याप्त आधार मौजूद होने के बावजूद प्रधानमंत्री ने उन्हें मंत्री बनाए रखा है और उनकी पार्टी उनका बचाव कर रही है तो सिर्फ इसलिए कि उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं।

जटिल है असमानता का विमर्श

डॉ राजू पाण्डेय

अर्थशास्त्रियों का एक बड़ा वर्ग यह मानता है कि उदारीकरण और वैश्वीकरण के लाभ तभी हमारे श्रमिकों को मिल सकते हैं जब उनकी कुशलता में सुधार आए। किंतु अकुशल एवं अर्द्ध कुशल श्रमिकों को कुशल बनाने की आशा कम से कम निजी क्षेत्र से तो नहीं की जा सकती। जाहिर है कि इसकी जिम्मेदारी सरकार को ही उठानी होगी। ऐसा लगा कि मोदी सरकार इस विषय को गंभीरता से लेगी। विश्व असमानता रिपोर्ट 2022 के आंकड़ों के बाद भारत में बढ़ती आर्थिक असमानता फिर चर्चा में है। रिपोर्ट के अनुसार भारत में 1 प्रतिशत सर्वाधिक अमीर लोगों के पास 2021 में कुल राष्ट्रीय आय का 22 प्रतिशत हिस्सा था, जबकि शीर्ष 10 प्रतिशत लोग राष्ट्रीय आय के 57 प्रतिशत भाग पर काबिज थे। हमारे देश की आधी आबादी सिर्फ 13.1 फीसदी कमाती है। आर्थिक समानता हमारे संवैधानिक लोकतंत्र की समानता की अवधारणा को साकार करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। हाशिए पर धकेले गए समुदायों को समान अवसर और अधिक प्रतिनिधित्व मिले यह सुनिश्चित करने में आर्थिक समानता की बड़ी भूमिका है। आर्थिक असमानता अर्थव्यवस्था को अस्थिर बना सकती है। इसके कारण स्वास्थ्य, शिक्षा एवं अनुसंधान जैसे आवश्यक क्षेत्रों में निवेश में कमी आ सकती है। हाल में किए गए अध्ययनों ने यह दशार्या है कि कोरोना काल में घटती हुई मजदूरी और आय ने कुल मांग पर विपरीत प्रभाव डाला है क्योंकि आम लोगों के उपभोग में कमी आई है। अनेक आर्थिक विशेषज्ञों के अनुसार कम आय में जीवन बिताने वाले बहुसंख्य लोगों की इस दशा के लिए शीर्ष पर मौजूद मुी भर लोगों के पास संपत्ति का एकत्रीकरण उत्तरदायी नहीं है। यदि इस विवादित स्थापना को स्वीकार कर भी लिया जाए तब भी इतना तो तय है कि शीर्ष के चंद लोगों के पास संपत्ति के एकत्रीकरण ने आम लोगों के जीवन स्तर और रहन-सहन तथा उन्हें मिलने वाली सुविधाओं पर विपरीत प्रभाव डाला है। जहां तक भारत का संबंध है यहां आर्थिक गैरबराबरी के लिए केवल वितरण की असमानता को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। जाति प्रथा और अस्पृश्यता जैसी सामाजिक कुरीतियां तथा श्रम बाजार में जातिगत भेदभाव वे कारक हैं जो दलितों को भूमि और संपत्ति तथा उनके श्रम के उचित मूल्य से वंचित रखने में मुख्य भूमिका निभाते हैं। सावित्री बाई फुले विश्वविद्यालय पुणे,जेएनयू तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ दलित स्टडीज द्वारा 20 राज्यों के 110800 परिवारों को सम्मिलित करते हुए सन् 2015 से 2017 के मध्य किए गए अध्ययन के बाद संबंधित अध्ययनकर्ताओं ने अपने निष्कर्ष में बताया कि 22.3 प्रतिशत उच्चतर जातियों के हिंदुओं के पास देश की 41 प्रतिशत संपत्ति है। जबकि 7.8 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति की आबादी के पास 3.7 प्रतिशत संपत्ति ही है। हिन्दू अनुसूचित जाति के लोगों के पास केवल 7.6 प्रतिशत संपत्ति ही है। अनुसूचित जाति का कोई श्रमिक सामान्य जाति के अपने समकक्ष श्रमिक की आय का केवल 55 प्रतिशत ही प्राप्त कर पाता है। श्रम बाजार में महिलाओं की भागीदारी के मामले में वैश्विक दृष्टि से भारत की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। वर्ष 2011-19 के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यस्थलों पर महिलाओं की भागीदारी 35.8 प्रतिशत से घटकर 26.4 प्रतिशत ही रह गई। महिलाओं को मिलने वाली मजदूरी पुरुषों की तुलना में बहुत कम होती है। श्रम बाजार में लैंगिक भेदभाव इतना अधिक है कि बहुत से कार्य एवं व्यवसाय पुरुषों के लिए आरक्षित हैं। तमाम कानूनी प्रावधानों तथा सामाजिक जागरूकता अभियानों के बावजूद संपत्ति और भूमि के अधिकार से महिलाओं को वंचित रखा जाता है। महिलाएं शहरों और ग्रामों को मिलाकर हमारी कुल पेड वर्क फोर्स का 18 से 19 प्रतिशत हैं। कोई महिला अपने पुरुष समकक्ष को होने वाली आय का केवल 62.5 प्रतिशत ही कमा पाती है।

आदिवासी समुदाय औद्योगिक विकास से सर्वाधिक प्रभावित होता है। यह विस्थापन की मार झेलता है एवं अपने पारंपरिक व्यवसाय को त्यागने हेतु विवश होता है। स्वाभाविक रूप से आदिवासी समूहों के आय एवं जीवन स्तर में गिरावट देखी जाती है। भारतीय समाज में अंतर्निहित विसंगतियों के कारण आर्थिक असमानता का विमर्श पहले ही अनेक जटिलताओं से युक्त था। इसी दौरान नवउदारवाद और वैश्वीकरण के उभार ने ऐसी आर्थिक नीतियों को जन्म दिया जिनमें असमानता विकास प्रक्रिया का एक अपरिहार्य बाय प्रोडक्ट थी। विश्व असमानता रिपोर्ट के पिछले कुछ वर्षों के आंकड़े यह दशार्ते हैं कि शीर्ष पर स्थित एक प्रतिशत जनसंख्या की संपत्ति में असाधारण वृद्धि हो रही है। नवउदारवादी नीतियों के कारण शहरों में आर्थिक असमानता बढ़ी है। गांवों और शहरों के मध्य आर्थिक असमानता की खाई गहरी हुई है जिसके परिणामस्वरूप अलग-अलग क्षेत्रों में विकास की मात्रा एवं स्वरूप में गहरा अंतर पैदा हुआ है। अनेक अर्थशास्त्रियों को यह आशा थी कि नवउदारवाद और वैश्वीकरण जैसी आधुनिक अवधारणाएं भारतीय सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था से जातीय और लैंगिक गैर बराबरी को दूर करने में सहायक होंगी किंतु ऐसा हुआ नहीं। औद्योगिक संस्थानों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों को हमेशा प्रशिक्षित, कार्यकुशल, दक्ष एवं सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों तथा श्रमिकों की आवश्यकता होती है जिनसे अधिकतम कार्य लेकर सर्वाधिक मुनाफा कमाया जा सके। निजी क्षेत्र का तर्क यह है कि सामाजिक-आर्थिक-शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों (दलित-आदिवासी-महिला) में इस तरह के सुयोग्य श्रमिकों का स्वाभाविक रूप से अभाव होता है, इस कारण उन्हें निजी क्षेत्र में अवसर नहीं मिल पाता। सरकारी नौकरियों में तो आरक्षण की सशक्त व्यवस्था है किंतु निजी क्षेत्र में तो ऐसा भी नहीं है। यही कारण है कि अर्थव्यवस्था में कॉरपोरेट वर्चस्व के बाद जो नए रोजगार सृजित हुए हैं उनमें वंचित समुदायों की हिस्सेदारी नहीं के बराबर है। वर्ष 2006 में यूपीए सरकार ने अनुसूचित जाति और जनजाति हेतु सकारात्मक कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए एक समिति का गठन किया था। इसका उद्देश्य निजी क्षेत्र में इन वर्गों को नौकरियों में प्रतिनिधित्व दिलाना था। लगभग एक दशक तक इस दिशा में कुछ खास नहीं हुआ। इन वर्गों में बढ़ते असंतोष के मद्देनजर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस विषय में सितंबर 2018 में एक बैठक ली। इसमें विभिन्न औद्योगिक एसोसिएशनों द्वारा दिए गए आंकड़े निराशाजनक परिदृश्य प्रस्तुत करते हैं। इन एसोसिएशनों से सम्बद्ध 17788 कंपनियों में से केवल 19 प्रतिशत ने ही सकारात्मक कार्रवाई की स्वैच्छिक संहिता को स्वीकार किया है। यह आश्चर्यजनक है कि निजी क्षेत्र अजा, जजा के छात्रों को व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं छात्रवृत्ति देने के मामले में तो उदारता दशार्ता है लेकिन जब इन्हें रोजगार देने की बात आती है तो वह पीछे हटने लगता है। सीआईआई और फिक्की में रोजगार पाने वाले अनुसूचित जाति एवं जनजाति के व्यक्तियों की संख्या केवल एक लाख है। अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय की स्टेट ऑफ वर्किंग इंडिया रिपोर्ट के अनुसार कम वेतन वाली नौकरियों में अजा, जजा के लोगों का प्रतिनिधित्व आनुपातिक दृष्टि से बहुत अधिक है जबकि उच्च वेतन वाली नौकरियों में नगण्य के बराबर है। महिलाओं के लिए भी निजी क्षेत्र ने बहुत अधिक अवसर उत्पन्न किए हों ऐसा नहीं है। नैसकॉम के अनुसार, ई कॉमर्स, रिटेल तथा आईटी कुछ ऐसे सेक्टर हैं जहां महिलाओं की हिस्सेदारी क्रमशः 67.7,52 तथा 34 प्रतिशत के आंकड़े के साथ कुछ उम्मीद जगाती है। किंतु कोविड-19 के कारण निजी क्षेत्र के कर्मचारियों ने नौकरियां गंवाईं हैं। निजी क्षेत्र में कार्यरत महिलाएं इससे सर्वाधिक प्रभावित हुई हैं। अर्थशास्त्रियों का एक बड़ा वर्ग यह मानता है कि उदारीकरण और वैश्वीकरण के लाभ तभी हमारे श्रमिकों को मिल सकते हैं जब उनकी कुशलता में सुधार आए। किंतु अकुशल एवं अर्द्ध कुशल श्रमिकों को कुशल बनाने की आशा कम से कम निजी क्षेत्र से तो नहीं की जा सकती। जाहिर है कि इसकी जिम्मेदारी सरकार को ही उठानी होगी। ऐसा लगा कि मोदी सरकार इस विषय को गंभीरता से लेगी। पहली बार कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय की स्थापना वर्ष 2014 में की गई। जुलाई 2015 से प्रारंभ स्किल इंडिया मिशन के अंतर्गत 2022 तक 40 करोड़ लोगों को रोजगार पाने योग्य स्किल ट्रेनिंग देने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। 2016 से शुरू हुई प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना में कंस्ट्रक्शन, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा हार्डवेयर, फूड प्रोसेसिंग,फर्नीचर एवं फिटिंग, हैंडीक्रॉफ्ट, जेम्स और ज्वेलरी तथा लेदर टेक्नोलॉजी जैसे करीब 40 तकनीकी क्षेत्र सम्मिलित किए गए हैं। इसके तहत 2016 से 2020 की अवधि में एक करोड़ युवाओं को कुशल बनाने का लक्ष्य था। किंतु इस अवधि में 50 लाख युवाओं को ही कुशल बनाया जा सका है। योजना के तहत देश भर में खोले गए 2500 केंद्रों में से अनेक बंद हो गए हैं। स्किल इंडिया मिशन मोदी सरकार की अनेक बहुप्रचारित योजनाओं की भांति ही सरकारी विज्ञापनों में ही सफल है। सरकार इसके लिए समुचित बजट तक नहीं देती। ऑक्सफेम द्वारा जनवरी 2019 में प्रकाशित रिपोर्ट 'पब्लिक गुड ऑर प्राइवेट वेल्थ' में असमानता खत्म करने हेतु अनेक महत्वपूर्ण सिफारिशें की गई हैं। रिपोर्ट के अनुसार, सरकारों को स्वास्थ्य, शिक्षा तथा अन्य सार्वजनिक सेवाओं की सार्वभौम उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए। इनका निजीकरण बंद हो। सामाजिक सुरक्षा और पेंशन तथा शिशु कल्याण सरकारी नीतियों का अंग हों। सरकारों की सभी योजनाएं महिलाओं के लिए समान रूप से लाभकारी हों। कर प्रणाली की समीक्षा के लिए वैश्विक स्तर पर सहमति बनाई जाए। हमें कॉरपोरेट्स और सुपर रिच लोगों द्वारा किए जाने वाले कर अपवंचन पर रोक लगानी होगी। इन पर अधिक करारोपण करना होगा। हाल ही में अमेरिका जैसे देश में एलेक्जेंड्रिया ओकेसिओ कॉर्टेज, एलिजाबेथ वारेन तथा बर्नी सैंडर्स जैसे राजनेताओं ने धनपतियों पर भारी करारोपण का सुझाव देकर कर प्रणाली में सुधार के विषय को आम जनता के बीच बहस का मुद्दा बना दिया है। भारत में भी इस विषय पर खुली चर्चा होनी चाहिए।

टीम इंडिया के दिग्गज स्पिनर हरभजन सिंह ने इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास लेने का किया ऐलान

नई दिल्ली। भारत के दिग्गज स्पिनर हरभजन सिंह ने इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास लेने का ऐलान कर दिया है। हरभजन सिंह ने शुक्रवार को ट्वीट कर इसकी जानकारी दी। हरभजन सिंह भारत की तरफ से टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक टेस्ट विकेट लेने वाले गेंदबाजों की सूची में चौथे नंबर पर हैं। हरभजन सिंह ने भारत के लिए अपना आखिरी इंटरनेशनल मैच 5 साल पहले साल 2016 में यूएई के खिलाफ एशिया कप टी-20 में खेला था। हरभजन ने ट्वीट कर लिखा,'सभी अच्छी चीजें खत्म हो जाती हैं और आज मैं उस खेल से विदा लेता हूं, जिसने मुझे जीवन में सब कुछ दिया है, मैं उन सभी को धन्यवाद देना चाहता हूं, जिन्होंने इस 23 साल की लंबी यात्रा को सुंदर और यादगार बनाया।

आपका तहे दिल से शुक्रिया,आभार।' 41 साल के हरभजन सिंह ने भारत के लिए 23 साल तक इंटरनेशनल क्रिकेट खेला। हरभजन ने साल 2008 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट में डेब्यू किया था। उन्होंने साल 1998 में शारजाह में न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे मैच में इंटरनेशनल डेब्यू किया था। भज्जी ने साल 2006 में साउथ अफ्रीका के खिलाफ पहला टी-20 मैच खेला था। हरभजन सिंह ने आईपीएल 2021 में केकेआर की तरफ से खेला था। वो आईपीएल में मुंबई इंडियंस और चेन्नई सुपरकिंग्स की तरफ से भी खेल चुके हैं। हरभजन सिंह ने भारत की तरफ से 103 टेस्ट मैच खेले और 417 विकेट लिए। वहीं वनडे की बात करें तो उन्होंने भारत की तरफ से 236 वनडे मैचों में 269 विकेट लिए। वहीं टी-20 इंटरनेशनल की बात करें तो भज्जी ने 28 टी-20 में 25 विकेट लिए। आईपीएल में हरभजन सिंह ने 163 मैचों में 150 विकेट लिए हैं। हरभजन ने 21 साल की उम्र में साल 2001 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ कोलकाता के ईडन गार्डन्स में हैट्रिक लेकर भारत को मैच जिताया था।

मोहम्मद शमी-जसप्रीत बुमराह पहले टेस्ट में हासिल कर सकते हैं खास उपलब्धि

नईदिल्ली। टीम इंडिया साउथ अफ्रीका के खिलाफ बॉक्सिंग डे टेस्ट खेलने के लिए तैयार है। इस साल सितंबर के बाद जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद शमी की जोड़ी के टेस्ट क्रिकेट में भारतीय तेज आक्रमण की अगुवाई करने की संभावना है। बुमराह और शमी ने आखिरी बार ओवल में एक साथ टेस्ट मैच खेला था।

इस टेस्ट में भारत ने शानदार जीत दर्ज की थी। इसके बाद इस जोड़ी ने टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में हिस्सा लिय। इसके बाद वर्कलोड मैनेजमेंट के चलते उन्हें टेस्ट से दूर रखा गया। बुमराह और शमी को न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू टेस्ट सीरीज में आराम दिया गया था।

भारत साउथ अफ्रीका के खिलाफ 26 दिसंबर से शुरू होने वाले पहले टेस्ट में ये जोड़ी मैदान में वापसी करेगी। इस मैच में बुमराह और शमी मील का पत्थर छू सकते हैं। बुमराह ने 24 टेस्ट में 101 विकेट लिए हैं, और ये खास बात है कि उनमें से उन्होंने भारत में सिर्फ 4 विकेट लिए हैं। बुमराह ने विदेश में 97 विकेट लिए हैं। उन्हें विदेशों में अपने 100 विकेट पूरे करने से 3 विकेट दूर हैं। 28 साल के बुमराह ने साल 2018 में भारत की तरफ से दक्षिण अफ्रीका में टेस्ट डेब्यू किया था।

बल्लेबाज ने मैच के दौरान की ये बड़ी गलती, पूरी टीम को चुकानी पड़ी भारी कीमत

नई दिल्ली। बिग बैश लीग के एक मुकाबले में होबार्ट हरिकेंस को मेलबर्न स्टार्स के खिलाफ गलती की बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। होबार्ट हरिकेंस के बल्लेबाज टिम डेविड की वजह से पूरी टीम को ये सजा भुगतनी पड़ी। टिम डेविड ने होबार्ट हरिकेंस की बैटिंग के दौरान शॉर्ट रन लिया। इसके बाद अंपायर उन्हें जानबूझकर शॉर्ट रन लेने का दोषी मानते हुए 5 रनों की पेनल्टी लगाई। बीबीएल में ये पहली बार है कि जब किसी टीम पर 5 रन की पेनल्टी लगाई गई है। होबार्ट हरिकेंस की पारी की आखिरी बॉल के दौरान होबार्ट के बल्लेबाज टिम डेविड ने यॉर्कर लेंथ की डिलीवरी को लॉन्ग-आन की तरफ खेला। इसके बाद दोनों बल्लेबोजों ने 2 रन लिए। लेकिन रन लेते समय डेविड ने फिनिशिंग लाइन को नहीं छुआ था। दो रन लेने के चक्कर में वो एक रन शॉर्ट भागे। डेविड को जानबूझकर एक रन शॉर्ट लेने का दोषी पाया गया और विपक्षी टीम को पेनल्टी के तौर पर पांच रन दे दिए गए। इसका नतीजा ये हुआ कि जब मेलबर्न स्टार्स बैटिंग करने उतरी तो उसके खाते में 5 रन पहले से ही जोड़ दिए गए। होबार्ट हरिकेन ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 180 रन बनाए। मेलबर्न स्टार्स 181 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 156 रन ही बना पाई। इसी के साथ होबार्ट हरिकेन ने 24 रनों से मैच जीत लिया।

साहब ! राशन डीलर नही देता राशन

एसडीएम ने तत्काल आपूर्ति निरीक्षक को दिये जांच के आदेश

अखंड भारत संदेश

बिछवां/मैनपुरी। सुल्तानगंज क्षेत्र के एक सैकड़ा से अधिक ग्रामीणों ने तहसील कुरावली पर पहुंचकर एसडीएम को प्रार्थना पत्र देते हुये कहा कि साहब राशन डीलर अपनी मनमानी के चलते राशन नही देता है। एसडीएम ने आपूर्ति निरीक्षक को जांच कर कार्यवाही करने के निर्देश दिये हैं।

गुरुवार को विकास खण्ड सुल्तानगंज क्षेत्र के ग्राम मरहरी के दर्जनों ग्रामीणों ने तहसील में प्रदर्शन करते हुये राशन डीलर रामनरेश यादव पर राशन न बॉटने का आरोप लगाया है। जिसका प्रार्थना पत्र एसडीएम नरेंद्र सिंह यादव को दिया गया है। एसडीएम ने आपूर्ति निरीक्षक पुष्पकांत यादव को निर्देशित करते हुये कहा कि राशन डीलर रामनरेश के द्वारा पात्र लोगों को राशन क्यों नही दिया जा रहा है इसकी गहनता से जांच की जाये। दोषी के खिलाफ कार्यवाही की जाये। पात्रों को राशन वितरण समय से कराया जाये। ग्रामीणों का आरोप था कि राशन डीलर के द्वारा अंगूठा लगवा लिया जाता है और राशन नही दिया जाता है। डीलर की घटतौली भी चरमसीमा पर है ।इस मौके पर संदीप, रामप्रकाश, राजू, सिलेटी सिंह, कीरतमल, टिंकू, शेरसिंह, कृपाल सिंह, कुँवरपाल, नरेंद्र सिंह, राकेश कुमार, सरला देवी, राजेश, सजीव कुमार, पूरनमल, राजपाल सिंह, दफेदार, अबधेश, किशनपाल, प्रधानप्रदीप यादव, जीतू यादव, पिंटू, महाराजदास, विनोद, आकाश यादव, विपिन कुमार, रीता, जागेश्वर, कालीचरन, सर्वेश कुमार, रविन्द्र कुमार, बलराम, ममता बाल्मीकि, सुखरानी बाल्मीकि, जसोदा, मंजू देवी, बिंदु बाल्मीकि, विनोद कुमार आदि लोगों ने राशन डीलर पर कार्यवाही करने की मांग की है।

क्या कहते एसडीएम कुरावली....

मामला संज्ञान में आया है कि राशन डीलर के द्वारा पात्र लोगों को राशन नही दिया जा रहा है। आपूर्ति विभाग को तत्काल जांच कर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये। पात्रों को राशन दिलवाये जाने को निर्देशित किया गया है।नरेंद्र सिंह यादव एसडीएम कुरावली

खाली प्लाट में बम फटा, युवक घायल

एसडीएम ने किया घटना स्थल का किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

कुरावली/मैंनपुरी। गुरुवार की दोपहर कूड़े के ढेर में पत्थर से ढकी बोरी में रखा बम अचानक फट गया। जिससे कूड़े के ढेर में शौच कर रहा युवक राहुल उर्फ असलम पुत्र सौकीन 18 वर्षीय बुरी तरह जख्मी हो गया। जिसे नगर की महिला प्रकोष्ठ सपा नेत्री अम्रता गुप्ता, सपा पूर्व नगर अध्यक्ष मुकीम खां ने कस्वा के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। हालत गंभीर देखते हुये चिकित्सकों ने जिला अस्पताल रैफर कर दिया। वहां से भी चिकित्सकों ने सैफई पीजीआई के लिये रेफर कर दिया। एसडीएम नरेंद्र सिंह यादव ने सीओ पीपी सिंह के साथ घटनास्थल का निरीक्षण किया। पीड़ित पिता की तहरीर पर पुलिस जांच में जुट गयी है।

कस्वा के मोहल्ला सराय निवासी सौकीन का 18 बर्षीय पुत्र असलम उर्फ राहुल शहर में कबाड़ा व फेरी का काम करता है। गुरुवार को वह कबाड़ा बीनता हुआ जीटी रोड़ स्थित बैंक ऑफ इंडिया के सामने खाली पड़ा पन्ना लाल के आहता में शौच क्रिया करने के लिया चला गया। तभी कूड़े के ढेर पर उसका पैर रख गया पैर रखते ही बम फूटने की तेज आबाज हुई। आसपास के क्षेत्र में धुंध सी छा गयी। आस पास के दुकानदारों में खलबली मच गयी। आबाज सुनते ही दुकानों के शटर गिरने लगे। लोगों का कहना है कि दबी बम पर उसका पैर पड़ने से बिस्फोट हो गया। बिस्फोट से निकली बारूद की चपेट में आने से वह गम्भीर रूप से घायल हो गया। धमाके की आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे तो असलम घायल अवस्था मे पड़ा हुआ था। घायल युवक के पिता के द्वारा अज्ञात लोगों पर बिस्फोट बम दबाने का आरोप लगाया है। एसडीएम नरेंद्र सिंह यादव ने क्षेत्रीय लेखपाल राकेश यादव के साथ घटनास्थल का निरीक्षण किया। एसडीएम ने पीड़ित परिवार को आर्थिक सहायता दिलवाये जाने का आश्वासन दिया। पीड़ित पिता ने थाने में तहरीर दी है। पुलिस जांच करने में जुट गयी है। एसडीएम के निरीक्षण के दौरान सीओ पीपी सिंह, वरिष्ठ उपनिरीक्षक सुखवीर सिंह मौजूद रहे।

महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने रोहित शर्मा की तारीफ कर बताया, टेस्ट क्रिकेट में क्यों इतने सफल हैं 'हिटमैन'

नई दिल्ली। टीम इंडिया के सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा ने शानदार तरीके से टेस्ट क्रिकट में वापसी की है। रोहित इस साल टेस्ट क्रिकेट में भारत के सबसे बल्लेबाजों में से एक रहे हैं। इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज में उन्होंने जिस तरह का प्रदर्शन किया, उसकी हर किसी ने तारीफ की। ??'हिटमैन' के नाम से मशहूर रोहित ने इंग्लैंड के खिलाफ खेले गए चार टेस्ट मैचों में टीम के लिए सर्वाधिक 368 रन बनाए थे। हाल में टेस्ट टीम के नए उप-कप्तान बनाए गए रोहित ने टेस्ट क्रिकेट की जरूरतों के अनुकूल होने के लिए अपने स्वभाव और बल्लेबाजी शैली में किए गए बदलावों पर ध्यान दिया था, खासकर विदेशी परिस्थितियों में। रोहित ने इस साल की शुरूआत में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया जिसमें भारत ने ऑस्ट्रेलिया को 2-1 से मात दी थी। क्रिकेट के सबसे लंबे प्रारुप में रोहित की शानदार बल्लेबाजी की भारत के महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर भी कायल हुए हैं। सचिन ने बोरिया मजूमदार के साथ बातचीत के दौरान रोहित की तारीफ करते हुए कहा, 'यह मानसिक है, जब आप खुद से यह कहना शुरू करते हैं कि यह कुछ ऐसा है जो मैं नहीं करने वाला यह होगा। मैं ज्यादा से ज्यादा यही कहूंगा कि कोशिश करें और अपने आप से पूछें कि आपको क्या करने की उम्मीद है और आप क्या करना चाहते हैं, बजाय इसके कि आपको क्या नहीं करना चाहिए।'

भारत के लिए टेस्ट और वनडे में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले सचिन ने आगे कहा, 'विरोधी टीम घबराई हुई मानिसकता का फायदा उठा सकती है। यह सब पॉजिटिव माइंडसेट के बारे में है।

छात्र छात्राओं ने निकाली मतदाता रैली,एसडीएम ने दिखाई हरी झंडी

अखंड भारत संदेश

बिछवां/मैनपुरी। बिकास खंण्ड सुल्तानगंज क्षेत्र के एक विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने रैली निकालकर मतदाताओं को मतदान करने के लिये जागरूक किया। रैली को एसडीएम कुरावली नरेंद्र सिंह यादव ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर ग्रामींण व बिद्यालय का स्टाफ मौजूद रहा ।

बिकास खंण्ड सुल्तानगंज क्षेत्र के राममूर्ति देवी शिक्षण संस्थान अभिलाष नगर बगिया हन्नूखेड़ा के छात्र-छात्राओं ने गुरुवार को मतदाता जागरूकता रैली निकाली। रैली को एसडीएम नरेंन्द्र सिंह यादव ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को मतदान करना चाहिए, प्रत्येक व्यक्ति मतदान के प्रति जागरूक भी होना आवश्यक है। मतदाता रैली गाँव बगिया , हंन्नूखेड़ा , नगला कुआं, मुगरौरा की गलियों में घूम मतदाताओं को मत डालने के लिये जागरूक किया। छात्र , छात्राएं सुवह सुवह करो मतदान , उसके बाद करो स्नान आदि नारे लगा रहे थे। इस अवसर पर सुमित चौहान ,अभिलाष सिंह यादव , पंकज पाण्डेय , संजीव चौहान , शिववीर सिंह ,वीरेश चौहान , चक्रेश यादव ,चंन्द्रप्रकाश मिश्रा आदि लोग मौजूद थे।

'एक साल पहले मैंने कभी सोचा नहीं था दोबारा टेस्ट क्रिकेट खेलूंगा'

नई दिल्ली। भारतीय टीम दक्षिण अफ्रीका दौरे पर रविवार से तीन मैचों की टेस्ट सीरीज खेलने के लिए तैयार है। व्हाइट बाल के कप्तान रोहित शर्मा चोट के कारण दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ रेड बॉल क्रिकेट से बाहर हो चुके हैं। रोहित टेस्ट टीम के उपकप्तान थे और उनके बाहर होने के बाद केएल राहुल को उपकप्तान की जिम्मेदारी सौंपी गई है। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच पहला टेस्ट सेंचुरियन के सुपरस्पोर्ट पार्क में खेला जाएगा। इस मैच में मयंक अग्रवाल और केएल राहुल टीम इंडिया के लिए ओपनिंग कर सकते हैं। राहुल ने टेस्ट टीम की उपकप्तानी मिलने के बाद मयंक अग्रवाल के साथ बीसीसीआई टीवी पर इंटरव्यू के दौरान अपने विचार शेयर किए।

जन विश्वास यात्रा पहुंचा मैनपुरी , लोगों की लगी रही भीड़

अखंड भारत संदेश

मैनपुरी ' मैनपुरी के करहल नगर मे पहुचा विश्वास यात्रा में वाहनों का काफिला देख भाजपाइयों की खिली बाहें / जनपद फिरोजाबाद से मैनपुरी के करहल विधानसभा क्षेत्र में पहुंची भाजपा की जन विश्वास यात्रा का समर्थकों ने जमकर किया।

स्वागत ओर दिहुली बरनाहल नवाटेढा करहल कुर्रा से जाकर किसनी विधान सभा मे पहुंच कर आदि लोगो व स्थानों पर समर्थकों ने पुष्प वर्षा कर यात्रा का स्वागत समारोह रखा ओर रथ पर भाजपा राज्यसभा सांसद गीता शाक्य जिलाध्यक्ष प्रदीप चौहान करहल नगर पंचायत चेयरमैन संजीव यादव व अनुजेश यादव आशु दिवाकर आदि तमाम नेता गण ने क्षेत्रवासियों का अभिवादन स्वीकार कर योगी सरकार के लिए भाजपा को जिताने का आव्हान किया ओर कस्बा करहल की किशनी चौराहा स्थित स्वर्गीय नत्थू सिह यादव की प्रतिमा को नमन कर कार्य कर्ताओ मे रोश दिखाई दिया ओर नारे भी लगाये कि संजीव तुम संघर्ष करो हम तुम्हारे साथ हैं कस्बा करहल के किशनी चौराहे पर लगे नारे ओर जन विश्वास यात्रा के दौरान भाजपाई रंग में सजी गाड़ियां लोगों का आकर्षण का बनी केंद्र ओर इसी दौरान भाजपा नेताओं में ब्रह्मानंद तिवारी भुवनेश यादव कल्पेंद्र भारतीय मनोज कश्यप गगन दुबे मोहम्मद आसिफ सचिन वर्मा छोटू डॉ प्रदीप उपाध्याय अरविंद गुप्ता आकाश वर्मा हिमांशु गुप्ता दिनेश यादव सौरभ कठेरिया हिमांशु वर्मा रामवीर बाल्मिक आदि तमाम सक्रिय कार्यकर्ता यात्रा में हुए शामिल हुए।

हरभजन सिंह के क्रिकेट से संन्यास लेने पर राहुल द्रविड़- विराट कोहली ने कहा

नई दिल्ली। टीम इंडिया के दिग्गज स्पिनर हरभजन सिंह ने शुक्रवार को 41 साल की उम्र में इंटरनेशनल क्रिकेट को अलविदा कहा। भज्जी ने 23 साल तक इंटरनेशनल क्रिकेट में अपनी धाक जमाई। वो टी-20 वर्ल्ड कप 2007 और 2011 वर्ल्ड कप जीतने वाली टीम के सदस्य थे। आईपीएल में उन्होंने मुंबई इंडियंस, चेन्नई सुपर किंग्स और कोलकाता नाइट राइडर्स की तरफ से खेला। शुक्रवार को ट्विटर पर उनके संन्यास के ऐलान के बाद टीम इंडिया के मुख्य कोच राहुल द्रविड़ और विराट कोहली ने उनके भारतीय क्रिकेट में दिए योगदान के लिए उनकी सराहनी की। बीसीसीआई ने एक वीडियो शेयर किया है। इसमें द्रविड़ और विराट हरभजन के संन्यास को लेकर अपनी राय जाहिर कर रहे हैं।द्रविड़ ने बीसीसीआई से कहा,'हरभजन के करियर में कई उतार-चढ़ाव आए। लेकिन वो हमेशा लड़ते रहे। महान प्रतियोगी और एक महान टीम मैन, जिनके साथ आप लड़ाई में जाना चाहते हैं। जाहिर है कि वो भारत के लिए खेलने वाले महान खिलाड़ियों में से एक हैं। अनिल कुंबले के साथ कमाल की जोड़ी बनाकर वह उस अवधि के दौरान हमारी कई बड़ी जीत का हिस्सा थे।

दूसरे टी201 में आयरलैंड की वापसी, 9 रन से मुकाबला जीतकर सीरीज में की बराबरी

नई दिल्ली। पहले टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट मैच में मिली हार के बाद आयरैंलड ने शानदार वापसी करते हुए फ्लोरिडा के सेंट्रल ब्रोवार्ड रीजनल पार्क स्टेडियम में खेले गए दूसरे टी20 मुकाबले में अमेरिका को 9 रनों से हराकर सीरीज में 1-1 की बराबरी हासिल कर ली। अमेरिका के कप्तान मोनांक पटेल ने टॉस जीतकर गेंदबाजी करने का फैसला किया। पहले बैटिंग करते हुए आयरलैंड ने 18.5 ओवर में 150 रन का स्कोर बनाया और इसके बाद उसने अपने से कम अनुभव वाली अमेरिका क्रिकेट टीम को 141 रन पर रोक दिया।

आयरलैंड के लिए लोरकान टकर एक छोर पर संभल कर बल्लेबाजी करते हुए 56 गेंदों पर 9 चौके और 3 छक्के की मदद से 84 रनों की शानदार पारी खेली और अपनी टीम को एक सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया। उनके अलावा कर्टिस कैम्फर ने 17, पॉल स्टर्लिंग 5 और कप्तान एंडी बैलबर्नी ने 10 रन बनाए। आयरलैंड की ओर से सौरभ नेत्रवालकर ने तीन और निसर्ग पटेल, यासिर मोहम्मद तथा वतसल वघेला को दो-दो सफलतता मिली।

यूपी के 396 में से 45 विधायक नहीं लड़ पाएंगे विधानसभा चुनाव? एडीआर ने रिपोर्ट जारी कर बताई वजह

लखनऊ। प्रदेश के मौजूदा 396 में से 45 विधायकों के चुनाव लड़ने पर संशय है। एसोसिएट डेमोक्रेटिक रिफार्म (एडीआर) की शुक्रवार को जारी रिपोर्ट में यह खुलासा हुआ है कि मौजूदा 45 विधायकों पर एमपी-एमएलए कोर्ट में आरोप तय हो गए हैं। आरपी अधिनियम (रिप्रेजेन्टेशन ऑफ पीपुल एक्ट/लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम) 1951 की धारा 8(1), (2) और (3) के तहत सूचीबद्ध अपराधों में ये आरोप तय हुए हैं। इन मामलों में न्यूनतम छह महीने की सजा होने पर ये विधायक चुनाव नहीं लड़ सकेंगे। एडीआर ने यह रिपोर्ट पहली बार जारी की है।

यह महत्वपूर्ण इसलिए है कि सजा काटने और रिहाई के छह साल बाद तक विधायक चुनाव नहीं लड़ सकते। हालांकि चुनाव लड़ने की पात्रता या अपात्रता तय करने का अधिकार केन्द्रीय चुनाव आयोग के पास है। एडीआर के मुख्य समन्वयक डा संजय सिंह ने रिपोर्ट जारी करते हुए कहा कि इनमें भाजपा के 32, सपा के पांच, बसपा व अपना दल के 3-3 और कांग्रेस व अन्य दल का एक-एक विधायक शामिल है। इन 45 विधायकों के खिलाफ आपराधिक मामले लंबित रहने की औसत संख्या 13 वर्ष है। ड्ड32 विधायकों के खिलाफ दस साल या उससे अधिक समय से कुल 63 आपराधिक मामले लंबित हैं।

गंभीर/भयानक/जघन्य प्रकृति अपराध यानी भारतीय दंड संहिता, 1860(आईपीसी) के तहत हत्या, बलात्कार, डकैती, लूट, अपहरण, महिलाओं के ऊपर अत्याचार, रिश्वत, अनुचित प्रभाव, धर्म, नस्ल, भाषा, जन्म स्थान के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच शुत्रता जैसे अपराध शामिल हैं। इसमें भ्रष्टाचार और मनी लॉन्ड्रिंग, उत्पादन/विनिर्माण/खेती, कब्जा, बिक्री, खरीद, परिवहन, भंडारण और/या किसी भी नशीली दवा के सेवन से संबंधित अपराध] जमाखोरी और मुनाफाखोरी से संबंधित अपराध, भोजन और दवाओं में मिलावट, दहेज आदि से संबंधित अपराध भी शामिल हैं। दोषी ठहराने के बाद कम से कम दो साल के कारावास की सजा भी इसमें शामिल है। आरोप तय होने और तयशुदा सजा मिलने के बाद चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य घोषित किए जाने का नियम पहले से है लेकिन अभी तक विभिन्न कोर्टों में मामले चलते रहते थे। ज्यादातर जगहों पर अपराध तय होने को टाला जाता था और लम्बे समय तक मुकदमे चलने के बाद भी आरोप तय नहीं हो पाते थे। सूचनाओं को छिपाया भी जाता था मसलन किसी कोर्ट में अपराध तय भी हो गया तो उम्मदीवार उसे छुपा लेते थे। लेकिन 2018 में सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद एमपी-एमएलए कोर्ट की स्थापना हुई और यहां तीन सालों की अवधि में ही इन विधायकों पर आरोप तय कर लिए गए। एडीआर और यूपी इलेक्शन वॉच के मुख्य समन्वयक संजय सिंह ने बताया, मैं राजनीतिक दलों से अपील करता हूं कि वे इन विधायकों को टिकट न दे।

ओमिक्रॉन से बचने के लिए भारत में भी लगेगा बूस्टर डोज! सरकार बोली- वैज्ञानिक डेटा की समीक्षा कर रहे हैं

नई दिल्ली। तेजी से फैल रहे कोरोना के नए ओमिक्रॉन वैरिएंट से बचने के लिए भारत में भी बूस्टर डोज लगाया जा सकता है। इसको लेकर केंद्र सरकार ने कहा है कि जल्द ही फैसला लिया जाएगा। भारत में वैक्सीन बूस्टर शॉट्स दिए जाने को लेकर आईसीएमआर के डीजी डॉ बलराम भार्गव ने कहा कि विचार-विमर्श जारी है। उन्होंने कहा, ₹विचार-विमर्श चल रहा है, हम नीति बनाने के लिए वैज्ञानिक डेटा की समीक्षा कर रहे हैं।₹ बता दें कि दुनिया के कई देशों में कोरोना वैक्सीन की बूस्टर डोज दी जा रही है। बूस्टर डोज वैक्सीन की तीसरी खुराक को कहते हैं। यहां तक कि जर्मनी और ब्रिटेन चौथी बूस्टर डोज देने पर भी विचार कर रहे हैं। फिलहाल भारत में अभी कोरोना वैक्सीन की दो ही डोज दी जा रही हैं। बलराम भार्गव ने कहा, ₹क्ळटफ और उ्इळ मिलकर वायरस को

कल्चर करने का काम कर रहे हैं। हम उडश्क्ला9 के ओमिक्रॉन वैरिएंट के खिलाफ टीकों की प्रभावकारिता का भी परीक्षण कर रहे हैं।₹ आईसीएमआर डीजी ने कहा, ₹हाल ही में पहचाने गए क्लस्टर सहित भारत में प्रमुख स्ट्रेन डेल्टा ही है। इसलिए, हमें कोविड के उपयुक्त व्यवहार और टीकाकरण को बढ़ाने की समान रणनीति के साथ जारी रखने की आवश्यकता है। वहीं केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने शुक्रवार को ₹अफ्र-उङ्क्श-2 के नए वैरिएंट, ओमिक्रॉन मामलों में वृद्धि के मद्देनजर कोविड-19 महामारी के खिलाफ एक नई चेतावनी जारी की है। 23 दिसंबर को, दुनियाभर में 9 लाख से अधिक कोविड-19 मामले दर्ज किए। ये आंकड़े महामारी की एक नई लहर की ओर इशारा कर रहे हैं।

29 दिसंबर को मंत्रिपरिषद की बैठक करेंगे पीएम मोदी, लिए जा सकते हैं कई बड़े फैसले

नई दिल्ली। कोरोना के नए ओमिक्रॉन वैरिएंट के बढ़ते मामलों के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 29 दिसंबर को मंत्रिपरिषद की बैठक करेंगे। ये बैठक किस मुद्दे पर होगी इसको लेकर अभी पीएमओ की तरफ से कोई बयान नहीं आया है। बैठक बुधवार को शाम 4 बजे होगी जिसमें लगभग सभी मंत्रियों के मौजूद रहने की संभावना है। ऐसा माना जा रहा है कि बैठक में अगले साल की शुरूआत में होने वाले विधानसभा चुनावों को लेकर चर्चा हो सकती है। इस बीच, पीएम मोदी शनिवार, 25 दिसंबर को गुजरात के कच्छ में गुरुद्वारा लखपत साहिब में गुरु नानक देव जी के गुरुपर्व समारोह को वर्चुअली संबोधित करेंगे। प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) के अनुसार, पीएम मोदी क्रिसमस के दिन दोपहर करीब 12:30 बजे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए गुरुपर्व समारोह को संबोधित करेंगे। हर साल 23 दिसंबर से 25 दिसंबर तक गुजरात की सिख संगत गुरुद्वारा लखपत साहिब में गुरु नानक देव जी का गुरुपर्व मनाती है। अपनी यात्रा के दौरान गुरु नानक देव जी लखपत में रुके थे। गुरुद्वारा लखपत साहिब में उनके अवशेष हैं जिनमें लकड़ी के जूते और पालकी के साथ-साथ गुरुमुखी की पांडुलिपियां और चिह्नों की लिपियां शामिल हैं। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 23 दिसंबर को एक उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता की जिसमें कोविड-19 की स्थिति और ओमिक्रॉन जैसे मुद्दों पर चर्चा हुई। बैठक में कोविड-19 की स्थिति और ओमिक्रॉन, चिंताजनक नए वेरिएंट (वीओसी), कोविड-19 की रोकथाम और प्रबंधन के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रतिक्रिया उपायों, दवाओं की उपलब्धता सहित स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे को मजबूत किए जाने सहित ऑक्सीजन सिलेंडर और कंसेन्ट्रेटर्स, वेंटिलेटर, पीएसए संयंत्र, आईसीयू/ऑक्सीजन समर्थित बेड, मानव संसाधन, आईटी हस्तक्षेप और टीकाकरण की स्थिति की समीक्षा की गई।

उत्तराखंड विधानसभा चुनाव

कौन हैं देवेंद्र यादव, जिन पर भड़क गए हैं हरीश रावत और उनके समर्थक

नई दिल्ली। उत्तराखंड में कांग्रेस के सीनियर नेता हरीश रावत ने पिछले दिनों नाराजगी जाहिर कर सूबे की राजनीति में हलचल पैदा कर दी है। अपने ट्वीट्स में उन्होंने हाईकमान और उसके विश्वासपात्रों पर निशाना साधते हुए लिखा था कि जिनके आदेश पर हमें तैरना है, उनकी ही नुमाइंदे ही मेरे हाथ-पैर बांधने की कोशिश में जुटे हैं। उन्होंने अपने ट्वीट में खुलकर तो किसी का नाम नहीं लिया, लेकिन माना जा रहा था कि उनकी इशारा प्रदेश के कांग्रेस प्रभारी देवेंद्र यादव की ओर था। उत्तराखंड कांग्रेस के टॉप लीडर कहे जाने वाले हरीश रावत की देवेंद्र यादव से नाराजगी की वजह यह मानी

जा रही है कि वह प्रचार अभियान में बहुत दखल दे रहे हैं। इसके अलावा टिकट बंटवारे में भी उनके समर्थकों को तवज्जो न दिए जाने का खतरा है। दो बार विधायक रह चुके 49 वर्षीय देवेंद्र यादव दिल्ली के एक रईस परिवार से ताल्लुक रखते हैं। कारोबार और राजनीति दोनों में रुचि रखने वाले देवेंद्र यादव के पिता महेंद्र यादव भी कांग्रेस में रह चुके हैं। प्रधानजी के नाम से चर्चित रहे महेंद्र यादव के बेटे देवेंद्र यादव ने सिविल इंजीनियरिंग की डिग्री ली है। करीब 20 साल पहले जब रणदीप सिंह सुरजेवाला यूथ कांग्रेस के मुखिया थे, तब उन्होंने देवेंद्र यादव को संगठन में राष्ट्रीय महासचिव की जिम्मेदारी दी थी। देवेंद्र यादव ने 2002 में पहली बार पार्षद का चुनाव दिल्ली की समयपुर बादली सीट से लड़ा था और जीते भी। इसके बाद 2007 में भी वह पार्षद चुने गए। फिर 2008 में विधानसभा चुनाव भी जीते। यही नहीं 2013 में जब कांग्रेस बुरी तरह हारी, तब भी देवेंद्र यादव उन 8 विधायकों में से एक थे, जो जीतकर आए थे। हालांकि 2014 में अरविंद केजरीवाल के एक बार फिर से इस्तीफा दिए जाने के बाद चुनाव हुआ था और इस बार उन्हें हार का सामना करना पड़ा। हालांकि कांग्रेस में उनका कद लगातार बढ़ता रहा और 2017 में पार्टी ने उन्हें राष्ट्रीय सचिव बना दिया। उन्हें अविनाश पांडे के साथ लगाया गया, जो राजस्थान के प्रभारी महासचिव थे। राजस्थान में चुनाव अभियान संभालने वाली कांग्रेस की टीम का वह हिस्सा थे। इसके बाद 2019 में उन्हें कांग्रेस का कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। हालांकि उनकी लीडरशिप में पार्टी की बुरी स्थिति हुई और सभी लोकसभा सीटों पर कांग्रेस को बुरी हार झेलनी पड़ी। इसके बाद भी उनकी स्थिति पर कोई असर नहीं पड़ा और उन्हें कांग्रेस ने उत्तराखंड का प्रभारी नियुक्त कर दिया।

स्थगित होंगे यूपी विधानसभा चुनाव! अनुराग ठाकुर बोले- चुनाव आयोग को तय करना है कि...

नई दिल्ली। क्या अगले साल की शुरूआत में होने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव स्थगित होंगे? कोरोना के नए वैरिएंट ओमिक्रॉन को बढ़ते खतरे के बीच इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने पीएम और चुनाव आयोग से अपील की है कि यूपी चुनाव स्थगित कर दिए जाएं। इसको लेकर केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि यह केवल चुनाव आयोग को तय करना है कि चुनाव होने चाहिए या नहीं। अनुराग ठाकुर ने शुक्रवार को कहा, ₹जब भारत का चुनाव आयोग आदर्श आचार संहिता लगाता है, तो उन्हें ाय करना होता है कि चुनाव कब होंगे।₹

बता दें कि आगामी राज्यों के चुनावों को देखते हुए चुनाव आयोग और केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव की 27 दिसंबर को बैठक होनी है। जिसके बाद फैसला लिया जाएगा कि कोरोना के मद्देनजर चुनाव कराना उचित है या नहीं। बैठक में उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब और गोवा और मणिपुर में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों को स्थगित करने की संभावना पर चर्चा की जाएगी। इस दौरान केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने उत्तर प्रदेश में जीएसटी छापे पर भी बयान दिया। उन्होंने कहा, ₹हमारा निरंतर प्रयास है कि इस देश में काम करने वाले लोगों को ईज ऑफ डूइंग बिजनेस मिले, हमने वन नेशन-वन टैक्स की दिशा में भी काम किया है। टैक्स चोरी करने वालों को बिल्कुल नहीं बख्शा जाएगा।₹ गौरतलब है कि पिछले दिनों यूपी में सपा नेताओं के परिसरों पर जीएसटी की छापेमारी हुई जिसमें कथिततौर पर भारी मात्रा में नकदी बरामद हुई है। इसको लेकर अनुराग ठाकुर ने बिना नाम लिए सपा प्रमुख अखिलेश यादव पर निशाना साधते हुए कहा, "कुछ लोगों को बरामद धन के बारे में सवालों के जवाब देने की जरूरत है।

बिखर कर एक सर्कस बन चुकी है पंजाब कांग्रेस, इसके सभी नेता 'जोकर': अरविंद केजरीवाल

चंडीगढ़। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का कहना है कि पंजाब कांग्रेस बिखर कर एक सर्कस बन चुकी है। उन्होंने पंजाब कांग्रेस के नेतओं को 'जोकर' तक कह डाला है। अगले साल होने वाले पंजाब विधानसभा चुनाव से पहले आम आदमी पार्टी (आप) अपनी पकड़ मजबूत करने में लगी हुई है जिसके तहत वह लगातार सत्ताधारी कांग्रेस पार्टी पर जमकर हमले बोल रही है। केजरीवाल ने यहां जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि पंजाब में बेहद कमजोर सरकार है जो लोगों को सुरक्षा और ईमानदार शासन नहीं दे सकती। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के सभी नेता आपस में ही लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा पंजाब कांग्रेस बिखर कर एक सर्कस बन चुकी है और इसके सभी नेता एक 'जोकर'

की तरह व्यवहार कर रहे हैं। पंजाब कांग्रेस पूरी तरह से एक सर्कस बन चुकी है और इसके सभी नेता जोकर हैं। चुनावों के समय में ही धमाके और बेअदबियां क्यों? लुधियाना बम वस्फिोट को एक चुनावी साजिश करार देते हुए केजरीवाल ने कहा कि पंजाब के माहौल को खराब करने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने सवाल किया कि हर बार चुनावों के समय में ही धमाके और बेअदबियां क्यों होती हैं। उन्होंने कहा कि गत विधानसभा चुनावों के समय मंडी मौड़ में बम धमाका हुआ था और बरगाड़ी में श्री ग्रंथ साहिब की बेअदबी हुई थी, लेकिन पांच वर्ष गुजर जाने पर भी किसी दोषी को सजा नहीं दी गई। उन्होंने कहा कि अगर पहले ही दोषियों को सजा दे दी गई होती तो अब यह घटनाएं नहीं होती। उन्होंने कहा कहा कि इन घटनाओं की जांच कर इसके लिए मास्टरमाइंड को बेनकाब किया जाना जरूरी है। आप सुप्रीमो ने पांच गारंटियों की घोषणा करते हुए कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार बनने पर पंजाब को मजबूत, स्थिर और ईमानदार शासन देंगे। उन्होंने कहा कि पंजाब पुलिस में भर्ती के लिए घूसखोरी होती है। उन्होंने कहा कि आप की सरकार बनने पर अच्छे चरत्रि के अधिकारियों को नियुक्त किया जाएगा और पुलिस पर किसी प्रकार का दबाव नहीं बनाया जाएगा ताकि पुलिस अच्छा प्रदर्शन कर सके। उन्होंने कहा कि कुंवर विजय प्रताप सिंह एक ईमानदार पुलिस महानिरीक्षक थे।

नेताओं को शामिल पाया लेकिन सरकार ने इनकी जांच रिपोर्ट को ही रद्द कर दिया। दूसरी गारंटी देते हुए केजरीवाल ने कहा कि पंजाब में अब तक जितनी भी बेअदबियां और बम ब्लास्ट हुए हैं, उनके लिए जिम्मेदार लोगों को जेल की सलाखों के पीछे डालेंगे। तीसरी गारंटी के तौर पर उन्होंने कहा कि पंजाब की अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के एक-एक इंच की सुरक्षा सुनश्चिति करेंगे ताकि पाकिस्तान की ओर से नशीले पदार्थ की तस्करी न हो सके।

भारत से गतिरोध के बीच चीन की नई चाल, तिब्बती बच्चों को मिलिट्री ट्रेनिंग के लिए कैंप में भेजा

नई दिल्ली। भारत के साथ सीमा विवाद के बीच चीन की एक नई चाल सामने आई है। चीन

तिब्बती बच्चों को विशेष ट्रेनिंग के लिए कैंपों में भेजना शुरू कर दिया है। इन बच्चों को ट्रेनिंग कैप में मिलिट्री से संबंधित ट्रेनिंग दी जाएगी और सेना की बुनियादी सैन्य प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। हालांकि, इन ट्रेनिंग कैंपों में भेजे गए अधिकांश बच्चे अभी काफी छोटे हैं, लेकिन ऐसी खबरें हैं कि इसमें कुछ बच्चे ऐसे हैं जिनकी उम्र 8 से 9 साल के बीच है। इस मामले से परिचित लोगों ने भारतीय सुरक्षा एजेंसियों की खुफिया रिपोर्टों और इंटरसेप्ट का हवाला देते हुए कहा कि इसके पीछे भी चीन की एक चाल है। लोगों ने कहा कि चीन तिब्बतियों के इन बच्चों को ट्रेनिंग में शामिल कर किसी तरह से पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (ढछअ) और स्थानीय स्तर पर जारी गतिरोध पर काबू पाना चाहता है। इस महीने की शुरूआत में, तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट ने एक रिपोर्ट जारी की थी। इस रिपोर्ट में कहा गया था कि तिब्बत में चीनी अधिकारी वहां के बच्चों को माता-पिता से अलग करने और अपनी भाषा और संस्कृति सिखाने के लिए बोर्डिंग स्कूलों के एक नेटवर्क स्थापित किया है। रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि छह से 18 साल की उम्र के 900,000 और चार और पांच साल के तमाम छोटे तिब्बती बच्चे वहां के स्कूलों में पढ़ रहे हैं। इन स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों का चीन नागरिकों के रूप में ढाला जाता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि अपने परिवारों और समुदायों से निकले इन छात्रों को चीनी भाषा में पढ़ाया जाता है। इसके अलावा उनको अपने धर्म से दूर करने का प्रयास किया जाता है। लोगों ने कहा कि भारतीय सुरक्षा एजेंसियों की रिपोर्टों से पता चलता है कि बच्चों को इसलिए विशेष कैंपों में भेजा जा रहा है ताकि उन्हें एक ऐसी शिक्षा दी जा सके जो तिब्बती बौद्ध मूल्यों की खिलाफ हो और उन्हें एक सैनिक बनने के लिए प्रोत्साहित करती हो। हाल की रिपोर्टों ने कम से कम दो ऐसे कैंप के होने की बात कही है। जहां, 9 से 14 साल की आयु के तिब्बती बच्चों को बुनियादी मिलिट्री ट्रेनिंग और शिक्षा दी जा रही है ताकि उन्हें सेना में शामिल होने के लिए तैयार किया जा सके।

अखंड भारत संदेश के लिए (स्वामी श्री योगी सत्यम योग सत्संग समिति) क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूसी प्रयागराज उत्तर प्रदेश 211019 से प्रकाशित एवं विपिन इंटरप्राइजेज 1/6C माधवकुंज, कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम योग सत्संग समिति पी.आर.बी .एक्ट के अंतर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदाई। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।

UPHIN 29506